* ॐ *

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

Social Reform

समाज सुधार

भारत में आलस्य तथा प्रमाद को स्थान कैसे मिला, ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा कैसे चला तथा इस के ठेकेदारों की नियुक्ति कैसे हुई, और फिर इन ठेकेदारों ने जनता जगत को किस प्रकार धोखे में डालते हुए और इनके द्वारा नाना प्रकार के द्रव्य सम्बन्धी भोग भोगते हुए अपना अर्थ सिद्ध किया। सो सब बातें राष्ट्र तथा मनुष्य समाज के हितार्थ बहुत ही सरल भाषा में लिख कर वर्णन किया गया है। युवकों का कर्तव्य है कि वे इन सिद्धान्तों पर विचार करते हुए अविद्या का नाश कर विद्या का प्रचार करें, ताकि देश तथा समाज से जो ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखाबाजी चल रही है, वह सदा के लिये नाश को प्राप्त हो रसातल में प्रवेश कर जावे। इसी में समाज तथा राष्ट्र की भलाई हो सकती है।

लेखकः—

श्री नारायण स्वामी बी० ए०

ग्राम कुन्डल पो० ऑ० कुन्डल

निजामत दौसा (राजस्थान जयपुर)

प्रथम बार
२०००

1951

मूल्य प्रति कापी
२)

* ॐ *

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय

विषय सूची

क्रमाङ्क	विषय		पृष्ठ से — पृष्ठ तक
१.	प्रस्तावना	—	क — ज
२.	ईश्वर के नाम पर धोखा	—	१ — ३
३.	ज्योतिष विद्या के नाम पर धोखा	—	३ — १०
४.	मन्दिर देवालय के नाम पर धोखा	—	१० — १७
५.	मन्दिरों की सार्थकता कैसे हो	—	१८ — २६
६.	गङ्गा यमुना तथा तीर्थों के नाम धोखा	—	२६ — ३२
७.	गौमाता के नाम पर धोखा	—	३२ — ३७
८.	देवी देवता के नाम पर धोखा	—	३८ — ४३
९.	स्याने भोपे बन कर धोखा	—	४४ — ४७
१०.	धर्म सिद्धान्तों के समझने में धोखा	—	४७ — ४७
११.	हनुमान जी कौन थे ?	—	४८ — ५०
१२.	रावण पर कल्पना	—	५१ — ६२
१३.	रावण का बाली की काँख में छः महीना तक रहना	—	६२ — ६६
१४.	हनुमान जी का द्रोणाचल	—	



॥ ॐ ॥

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

प्रस्तावना



मेरा इस पुस्तक को लिखने का अभिप्राय यह नहीं समझना चाहिये कि मैं किसी जाति विशेष की निन्दा या स्तुति कर रहा हूं, मुझको तो केवल जनता जगत को सत्याऽसत्य का निर्णय कराते हुए सचेत कर देना है, कि आज जो मानव-समाज में ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखाबाजी, नीचता तथा धृष्टता दिखाई देरही है वह केवल अपनी स्वार्थ परता, इन्द्रिय लोलुपता तथा नाना प्रकार के वैषयिक पदार्थों को आवश्यकता से अधिक संग्रह करके संसारिक भोगों को भोगने के कारण ही है। यदि प्राणी इस कलुषित कामना को हटा कर साधारण जीवन व्यतीत कर जनता जगत की सेवा में दृढ़ संलग्न हो जावे तो यही ईश्वर और धर्म की सेवा कहला सकती है। स्वार्थपरता वैसे तो संसार में कुछ महापुरुषों को छोड़ कर प्रायः सभी प्राणियों में स्वभाविक हुआ करती है, किन्तु इसकी कुछ अवधि चाहिये। "मैं जीऊँ और सब जीवें" इस भावना में प्राणी मात्र की भलाई निहित है, किन्तु इसी के स्थान पर "मैं जीऊँ और सब मर जावें" यह भावना नीचता है, और अन्य सभी प्राणियों की घातक है। अतः मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि संसार में जो कुछ भी किया जावे, उसमें अपने स्वार्थ के साथ २ दूसरों के हित पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिये।

ब्राह्मण का जीवन केवल संसारिक भोग भोगने के लिये नहीं है, यदि वह भी नाना प्रकार के बाग बगीचे, महल महलायत बना कर उन में संसारिक अनेकों प्रकार की भोग सामग्रियों को एकत्रित कर लखपति तथा करोड़पति कहलाने में ही आनन्द मानें तो फिर उसमें और संसार के अन्य प्राणियों में अन्तर ही क्या होगा ? ऐसी स्थिति में "भूदेव" तथा "ब्रह्म वाक्यं जनार्दन" का दावा कैसे निभेगा। क्योंकि आवश्यकता से अधिक संग्रह तथा लखपति व करोड़पति बनना तो अन्याय तथा अत्याचार पर ही अवलम्बित है। अन्यायी तथा अत्याचारी मनुष्य शुद्ध ब्राह्मण कैसे कहलायगा, और वह जनता जगत को उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाला सत्यवक्ता बन कर सत्योपदेश भी कैसे करेगा ? और जब जनता उसके आचरणों को देखेगी कि यह तो हमसे भी गया बीता दुराचारी, दुराग्रही तथा दुरात्मा है, तो फिर उसको ईश्वर और धर्म का ठेकेदार कैसे कहेगी। उसको तो पाखण्डी, अनिष्टकारी तथा घोर नास्तिक ही कहा जायगा। और ब्राह्मण कौन है ? इसकी परीक्षा होना भी कठिन हो जावेगा। आज संसार में शुद्ध ब्राह्मणों की पहिचान क्यों नहीं होती ? इसका कारण यह है कि आज संसार में तीन चार करोड़ मनुष्य ब्राह्मण का भूंठा दावा लिये बैठे हैं, और जनता जगत की परिश्रम युक्त कमाई को दान पुण्य के रूप में हड़प करके अपने संसारिक नाना प्रकार के विषय भोगो में तल्लीन हो रहे हैं, और अपनी कामनाओं की पूर्ति निमित्त अनेकों प्रकार के प्रपञ्च युक्त मायावी जाल फैला कर भोली जनता को फँसा कर अपना उल्लू सीधा करने में दृढ़ संलग्न हैं। अब ऐसी स्थिति में ब्राह्मण किसको कहा जाय इसका निर्णय जो वास्तविक में ब्राह्मण होंगे, वे ही यथार्थ में कर सकेगें।

आज एक ब्राह्मण है, वह सेठजी का भोजन बनाता है, प्याऊ पर पानी पिलाता है, बच्चों को खिलाता है, उनके कपड़े धोता है, और किसी के यहां जीमने का तथा दान दक्षिणा लेने का काम पड़ता है तो वहां जाकर खीर पूरी खाने को तथा दान दक्षिणा लेने को भी तैय्यार रहता है। इसके अतिरिक्त एक और दूसरे प्रकार का ब्राह्मण है वह मन्दिर का बड़ा भारी पुजारी है, दान धर्म के नाम पर तथा चढावा के रूप में हजारों रुपया जनता से वसूल करता है, उन रुपयों से अपने रहने के लिये महल बनाता है, वैषयिक पदार्थों को संग्रह करता है, रुपया का स्टाक बनाता है, उसको ब्याज पर चलाता है और नाना प्रकार के सुखोपभोग करता है। चौथे प्रकार का एक और ब्राह्मण है वह कृषि करता है, पशु पालता है, लेन देन के कार्य में भी दृढ़ संलग्न है, और जब दान दक्षिणा तथा माल उड़ाने का समय आता है, तो दान दक्षिणा तथा माल उड़ाने को भी तैय्यार रहता है। पांचवां, एक ब्राह्मण है, कि जो गंगा यमुना का ठेकेदार बन हजारों रुपया उसके नाम पर दान पुण्य ले विषय भोगों में रत रहता है जनता सम्बन्धी कोई सेवा कार्य नहीं करता। छटे प्रकार का ब्राह्मण है वह ईश्वर के नाम पर जनता को धोखा देकर हजारों रुपया कमाता है। और संसारिक विषय भोगों में लगाता है। सातवें प्रकार का ब्राह्मण है, वह नौकरी आदि के द्वारा तथा व्यौपार और कृषि द्वारा हजारों लाखों रुपया अपने पुरुषार्थ से कमाता है, महल महलायत बनाता है, अपने स्त्री पुत्रों सहित उसका सुख भोगता है। गृह धन्धां से अवकाश पाकर समाज से अवकाश पाकर समाज सेवा का तथा राष्ट्र की सेवा का भी भाव रखता है, और सेवा का कार्य करता है। ईश्वर की भक्ति करता है। वह दान के नाम पर अपने लिये किसी से एक पैसा भी ग्रहण नहीं करता है किन्तु समय पड़ने पर अपनी कमाई में से शक्ति अनुसार

दान करता है। आठवें प्रकार का ब्राह्मण है वह किसी को धोखा नहीं देता, अपने आप जो कुछ अनायास प्राप्त हो जावे उसी में संतोष मानता है, बिना किसी स्वार्थ के जनता तथा राष्ट्र की सेवा करता है, संसारिक भोगों से दूर रहता है। आवश्यकता से अधिक अपने पास कुछ संग्रह नहीं रखता है। ब्राह्मण को जो कुछ गुण शास्त्र में वर्णन किये हैं उन सबों पर पूरा अधिकार रखता है।

इस आठवें नम्बर वाले ब्राह्मण को तो हमारी ओर से कुछ नहीं कहना है, यह तो शुद्ध ब्राह्मण है। और जनता जगत को सदा वन्दनीय तथा सेवा करने योग्य है। सातवें नम्बर के ब्राह्मण को भी हम बुरा नही कहते, क्यों कि यह भी किसी को ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा नहीं देते, अपने पुरुषार्थ पर सदा आरूढ़ हैं, और यथा शक्ति दान दक्षिणा देने में तथा राष्ट्र व समाज की सेवा में संलग्न हैं। अतः ऐसे व्यक्ति जो ब्राह्मण हैं उनसे भी हमारा कुछ कहना नहीं है, और न हमारा कोई विरोध है। नम्बर १ से और छः तक के जो ब्राह्मण हैं, उनको न तो हम ब्राह्मण मानते हैं, और न उनके लिये हमारे हृदय में स्थान है। क्यों कि जो आदमी ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देकर अपना माल उड़ाना चाहते हैं, वे न तो ब्राह्मण हैं, और न मनुष्य हैं, किन्तु जनता जनार्दन को धोखा देने वाले कट्टर शत्रु तथा राक्षस हैं। दान पुण्य का जो पैसा दूसरों के नाम पर आता है, उसको नेकनीयती से उन्हीं के निमित्त खर्च कर देना बुद्धिमानों का काम है, और जनता भी उसको उन्हीं के उत्तरदायित्त्व पर इसीलिये देती है, कि वे उस पैसे को जनता जगत की सेवा में तथा सार्थक परोपकार सम्बन्धी कार्यों में लगावें, किन्तु

ये लोग उस पैसे का दुरुपयोग कर रहे हैं, और अपने भोगों में ही तल्लीन हैं। अतः यह पुस्तक हमने ऐसे ही मनुष्यों के उपकारार्थ लिखी है, और ऐसे प्राणियों से हमारा सानुरोध पूर्वक कहना है कि वे अपना चरित्र निर्माण कर अपनी आवश्यकताओं को जो सीमा से कहीं अधिक बढ़ा ली गई हैं उनको कमी करते हुए भोगों की अत्यन्त लिप्सा को दूर करें, और अपने को उस संस्था का कि जिसका उत्तरदायित्त्व जनता ने हमारे हाथ में सौंपा तथा जो २ द्रव्य सम्बन्धी सामग्रियां हमारे आधीन की हैं, उस सब पर स्वामीपने का अधिकार न रखते हुए सेवक भाव से अपनी सेवा की पूर्ति करें। और उसको यथोचित जनता जनार्दन की सेवा में सार्थक खरच करें। इसी में आपकी भलाई है। यदि आप मेरी इस बात पर ध्यान न देंगे और इसी प्रकार मनमाने अत्याचार करते रहेंगे तो एक दिवस निश्चय आवेगा, कि जब जनता जगत आपसे कट्टर विरोध करेगी, और आपके हाथों से सारी संस्थाओं को तथा अधिकारों को छीन कर अपने हाथ में लेगी, और आपको बेकार समझ कर रद्दी कागज की तरह रद्दी खाने की टोकरी में फेंक देगी। उस समय आपको कष्ट भी अधिक होगा, और आपको अपना यह अपमान मरण से भी अधिक दुखदाई होजायगा।

यदि आपको सांसारिक सुख तथा भोगों से ही अधिक प्रेम हो, अथवा लखपति व करोड़पति बनने की ही कामना है तो संसारी अन्य वर्ग जैसे २ अनेकों प्रकार के कार्यों को संपादन करते हुए हजारों तथा लाखों रुपया कमा रहे हैं, और अपनी स्वेच्छा से भोग भोग रहे हैं, और कोई मनुष्य उनके कार्यों में बाधा नहीं पहुँचा सकता, इसी प्रकार

आप लोग भी किसी सांचे सच्चे कार्यों के करने में दृढ़ संलग्न हो जावो, उससे लाखों करोड़ों रुपया कमाओ, नाना प्रकार के भोग भोगो, तथा स्वेच्छा से जो कुछ करना चाहते हो, वह सब कुछ करो, तुम को कौन रोक सकेगा, किन्तु आप यदि ऐसा न करके जनता जगत की परमार्थिक सम्पत्ति को सुखोपभोग सामग्रियों में खर्च करके उसका दुरुपयोग करोगे, तो याद रखो ! जनता तुम्हारा शीघ्रातिशीघ्र ही विरोध करेगी और तुम्हारा बहिष्कार कर देगी। क्यों कि इस समय बुद्धिमान पुरुष तुम्हारी चालाकियों को, स्वार्थपरता को तथा ईश्वर और धर्म के नाम पर जो धोखा दे रहे हो, उस धोखा देने को अच्छी तरह जान गये हैं। जिसको वे लोग कदापि स्वीकार न करेंगे, किन्तु तुम्हारी गुप्त मन्त्रणाओं को तथा धोखा देने के गूढ़ रहस्यों को भली भांति बता कर भोली जनता को सचेत कर देंगे, और फिर तुम्हारी यह ईश्वर और धर्म की मिथ्या ठेकेदारी धूलि में मिलकर रसातल को चली जावेगी।

आशा है कि जो शुद्ध ब्राह्मण होंगे, वे मेरी इस बात पर ध्यान देंगे, और मिथ्या नाम धारी ब्राह्मण कि जो ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देकर आजीविका कमा रहे हैं, और ईश्वर, धर्म तथा ब्राह्मणों के नाम को बदनाम कर रहे हैं, ऐसे नाम मात्र ब्राह्मण बनने वालों का कट्टर विरोध करेंगे; और सही मार्ग जो ब्राह्मणों को अनुकरणीय है उसका पालन करावेंगे। इतना करने पर भी यदि ये लोग कुछ ध्यान न देंगे तो फिर इनको ब्राह्मणत्व पद से सदा के लिये बहिष्कृत कर देंगे।

जनता जगत से मेरी यह अपील है कि वे ऐसी धोखा देने वाली संस्थाओं को जो धर्म और ईश्वर की आड़ में शिकार खेल रही है, नाना

प्रकार के उत्तमोत्तम पदार्थों को संग्रह कर भोग भोग रहे हैं, उनको कदापि दान न देना चाहिये, किन्तु जो संस्थायें देश और राष्ट्र की सेवा में दृढ़ संलग्न हैं, और जिनके कार्यों से जनता तथा राष्ट्र का हित प्रत्यक्ष सिद्ध होता हो। ऐसी संस्थाओं को अवश्य देना चाहिये। आज देश में मूर्खता अधिक बढ़ गई है, स्त्रियों की शिक्षा का भी अभी यथोचित प्रबन्ध नहीं है। आज आपको भारत में १०० में २५ आदमी साक्षर कठिनता से मिलेंगे, और यही कारण है कि इस देश में ईश्वर धर्म के नाम पर पोप लीला चलती रही, और इसके ठेकेदार लोग जगत में इन दोनों के नाम पर अनेकों मायावी मिथ्या सिद्धान्तों की रचना कर के जनता जगत को धोखा देते रहे। अतः आज आपको आवश्यकता है स्थान २ पर शिक्षा मन्दिर तथा स्वास्थ्य मन्दिर खोलने की। इनके खुलने से ७५ प्रति शत् मनुष्य साक्षरी हो जावेंगे। जब देश में साक्षरता बढ़ जावेगी तब यह ईश्वर और धर्म के नाम पर चलने वाली पोप लीला भी वहीं समाप्त हो जावेगी। क्यों कि "Superstition flourishes in an atmosphere of Ignorance" अर्थात्:—मिथ्या भावना तथा मिथ्या विश्वास अविद्या रुपी क्षेत्र में पनपते रहते हैं। इस प्रकार 'न रहे बांस और न बजे बांसुरी" अर्थात्:—न अविद्या ही रहेगी और न देश में पोप लीला ही रहेगी। और देश की भलाई होगी।

मैं इस बात को जानता हूँ कि मेरी इस पुस्तक को पढ़ कर साक्षरी तथा विद्वान पाठक हर्ष को प्राप्त होंगे; और ईश्वर तथा धर्म के नाम पर धोखा देने वाले नाम मात्र कुछ ब्राह्मण लोग इस पुस्तक को पढ़ कर अपने स्वार्थ हानि दोष को देख कर अपने मन में खेद प्रगट करेंगे,

और मेरी ये सब बातें उनको सूई की भांति चुभती प्रतीत होंगी। किन्तु याद रखो! जैसे कोई डाक्टर किसी रोगी के फोड़े को देख कर दया से व्याकुल हो अपने कठिन शस्त्र द्वारा चीर फाड़ डालता है, वह रोगी के चिल्लाने तथा रोने पर ध्यान नहीं देता है। इसी प्रकार मैंने इन नाम मात्र ब्राह्मणों के अहङ्कार रूपी फोड़े को जनता जनार्दन की सेवा हितार्थ अपनी लेखनी रूपी शस्त्र से फोड़ने की चेष्टा की है। इस मिथ्या अहङ्कार रूपी फोड़े के नाश हो जाने पर ये ही लोग विशुद्ध ब्राह्मण बनकर जनता जनार्दन की तथा अपने राष्ट्र की सच्ची सेवा कर सकते हैं।

अब विशेष क्या लिखूँ! मुझको न किसी से राग है न द्वेष। किन्तु सच्ची बातें तो देश तथा राष्ट्र निर्माण हित में करना ही पड़ता है, अन्यथा मेरी तो इच्छा यही रहती है कि:—

"देश का भला हो," "विश्व का कल्याण हो,"
"अविद्या का नाश हो," "विद्या का प्रकाश हो,"

यह मेरी सुदृढ़ भावना है।

सर्व हितैच्छुक,
स्वामी नारायण बी. ए.



नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

SOCIAL REFORM
—समाज सुधार—

२. ईश्वर के नाम पर धोखा

ईश्वर यह एक आश्चर्य जनक विषय है, समस्त जगत ईश्वरवादी है। अखिल मनुष्य जाति में ईश्वर का नाम किसी न किसी बहाने घोषित हो रहा है। समस्त जन उसके नाम को जानते हैं, किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि उसकी सूरत को कोई भी नहीं पहिचानता और इसी कारण को लेकर संसार भर में ईश्वर के स्वरूप के विषय में करोड़ों कल्पनायें प्रचलित हो रही हैं। कोई कहता है, कि ईश्वर निराकार है, कोई कहता है साकार है, कोई निराकार तथा साकार दोनों को सिद्ध करता है, कोई कहता है कि न निराकार है और न साकार है, दोनों से विलक्षण है। और इन्हीं की कल्पनाओं के कारण ईश्वर के नाम पर कई प्रकार के वाद खड़े कर लिये हैं। कोई अद्वैतवादी, कोई द्वैतवादी, कोई द्वैत-अद्वैत वादी, कोई विशिष्ट अद्वैतवादी, और कोई चेतवादी इत्यादि। कहने का अभिप्राय यह है कि सृष्टि के आदि से लेकर आज तक ईश्वर के नाम पर न्यारी २ कल्पनायें की जा कर बड़े २ वाद विवाद रूपी शास्त्र खड़े किये किये गये हैं, और अपने

अपने मत को सिद्ध करते हुए अनेकों प्रकार के मत मतान्तर खड़े कर लिये हैं। और ईश्वर तथा धर्म के नाम पर जनता को धोखा देते हुए अपने २ संसारिक कार्यों की सिद्धि करने में दृढ़ संलग्न हो रहे हैं। और सबसे बड़े मज़े की बात तो इन ईश्वरवादियों में यह पाई जाती है कि ये लोग अपने २ कल्पना किये हुए ईश्वर को सच्चा और दूसरों की कल्पना किये हुए ईश्वर को मिथ्या कहने में तनिक भी संकोच नहीं करते। और जब इन ईश्वरवादियो से पूछा जावे कि:—क्या तुमने ईश्वर को देखा है? तो इसके उत्तर में यही कह कर लोगों को श्रद्धा दिलाते हैं कि अमुक ऋषि ने देखा, अमुक महात्मा ने देखा, अमुक भक्त के घर पर आकर भगवान ने भोजन किया, अमुक भक्त के छप्पर की छान छवाई, अमुक भक्त के यहां जाकर नापित (नाई) का काम किया, अमुक भक्त के यहां जाकर मृतक पुत्र को जिला दिया, अमुक भक्त के यहां जाकर भात भरा इत्यादि २ बातें बतलाते हुए लोगों को श्रद्धा दिलाते आरहे हैं। किन्तु कोई आदमी दावे से यह नहीं कहता कि मैंने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा है। और फिर रूपों के विषय में भी भिन्न २ बातें बतला कर लोगों को धोखा दे रहे हैं। कोई कहता है हमारे भगवान ४ भुजा वाले हैं, कोई कहते हैं कि आठ भुजा वाले हैं, कोई २० भुजा स्वीकार करते हैं, इसी प्रकार मुख आदि की भी न्यारी २ कल्पनायें की जा रही हैं, कोई अपने भगवान को चार मुख वाला, कोई आठ मुख, कोई १६ मुख और कोई २ हजार मुख वाला कहते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि ये लोग कल्पित भावनाओं के द्वारा अपने न्यारे २ ईश्वर और न्यारे २ रूपों को बतलाने में तनिक भी संकोच नहीं करते। इन भिन्न २ मतवादियों की ईश्वर और धर्म विषय भिन्न २ कल्पनाओं का जनता जगत पर यह परिणाम हुआ, कि संसार में फूट का वृक्ष बोया गया, मानव जाति का विश्व प्रेम नाश हुआ, अपनी २ ढ़फड़ी और अपना २ राग वाली कहावत चरितार्थ होने लगी, ईश्वर और धर्म के नाम पर लोग धोखा देकर अपना २ पेट पालने लगे, ईश्वर के नाम पर गली २ में मन्दिर और देवालय स्थापित होने लगे और उनमें नाना प्रकार की भोग विलास तथा वैषयिक सामग्रियां ला ला कर एकत्रित की जाने

लगी, आवश्यकता से अधिक दान तथा भोगों की सुव्यवस्था हो जाने के कारण ईश्वर के नाम पर ठेकेदारी शुरू हुई। नदियों के नाम पर, पर्वतों के नाम पर, तीर्थों के नाम पर, देवालयों के नाम पर तथा स्वर्ग नरक के नाम पर भिन्न २ पार्टियों के लोग ठेकेदार नियुक्त हो गये। और इन सब के नाम पर जनता जगत में इतने टैक्स लगाये गये कि जिनको चुकाते २ मनुष्य मर भी क्यों न जावे किन्तु इनके टैक्सों की पूर्ति किसी भी तरह से नहीं हो सकती।

इस प्रकार जब इन ईश्वर और धर्म के ठेकेदारों को आवश्यकता से अधिक धन तथा आवश्यकता से अधिक भोग विलासों की सामग्रियां प्राप्त होने लगी तब आलस्य और प्रमाद को स्थान मिला। और विद्या के स्थान पर अविद्या की उपासना चालू की गई, ईश्वर और धर्म केवल पेट पालने के साधन बना लिये गये, पढ़ना लिखना बन्द किया गया। "स्त्री शूद्रो न धीयतामिति" अर्थात् स्त्री तथा शूद्रों को पढ़ना ठीक नहीं है। इस प्रकार की श्रुतियां प्रचलित कर स्त्री शूद्रों को न पढ़ने देने की अनधिकार चेष्टायें की जाने लगी। इस प्रकार असली ईश्वर तत्त्व तथा धर्म तत्त्व नाश किया गया और इन दोनों के स्थानों पर कृत्रिमता को स्थान दिया गया, अर्थात् इन दोनों के नाम पर केवल धोखा ही धोखा रह गया और सत्य, ईश्वर और धर्म का नाम लुप्त हो गया। अब पाठकों को स्पष्टीकरण करके बतलाया जाता है कि ये ठेकेदार लोग जनता जगत को किस प्रकार और किन २ बातों में धोखा दे रहे हैं सो सुनियेः— आपको इनकी जो गुप्त मन्त्रणा (Secret Trade) है वह प्रत्यक्षीकरण करके बतलाई जाती है।



३. ज्योतिष विद्या के नाम पर धोखा

ज्योतिष कितनी सच्ची विद्या है, यह किसी से छिपा नहीं है। मनुष्य इतना अल्पज्ञ है कि इतना भी नहीं बतला सकता कि घंटे दो घंटे

पश्चात् क्या होगा ? अथवा हाथ दो हाथ के पीछे क्या रखा है ? सो इस विद्या के जानने वाले सूर्य और चन्द्र हम लोगों से कितनी दूर स्थित हैं, उनके विषय में लिख कर बतला देते हैं कि अमुक समय में चन्द्र ग्रहण वा सूर्य ग्रहण होने वाला है तो ठीक उसी समय चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण होगा। कारण इसका यह है कि इसमें गणित इतनी सच्ची विद्या है कि जिसके प्रताप से ये सब ग्रहण आदि की बातें ठीक २ बतलाई जा सकती हैं, और इस बात को हमारे देश के ही ज्योतिषी जानते हैं, बात यह नहीं है, किन्तु इस गणित विद्या के हिसाब से दूसरे देशो के ज्योतिषियों तथा गणितज्ञों ने भी प्रत्यक्ष कर रखा है। और सब कोई जानते हैं। अब रही फलित इत्यादि की बातें सो इस विषय में न तो हमारे देश के ज्योतिषी ही यथार्थ जानते हैं और न दूसरे देश के ज्योतिषी ही जानते हैं। क्योंकि यह विषय गणित के साथ २ अध्यात्म से सम्बन्ध रखता है, और अध्यात्म (आत्म विद्या) है और आत्मा का सम्बन्ध ईश्वर के साथ है, और ईश्वर त्रिकालदर्शी है और भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान की सब बातें जानता है। अतः ज्योतिष में फलित विद्या को बतलाने के लिये आत्म विद्या की भी आवश्यकता है। दूसरे, इस विद्या के साथ साथ आयुर्वेद विद्या का भी निकटस्थ सम्बन्ध है। इस प्रकार तीनों विद्याओं का जानने वाला सच्चा ज्योतिषी कहला सकता है। और फलित का विषय भी उसी ज्योतिषी से सम्बन्धित हो सकता है। जो इन तीन विद्याओं को भली भांति जानने वाला हो। अर्थात् ज्योतिषी बनने के लिये आयुर्वेद विद्या, योग विद्या तथा गणित जिसमें रेखा गणित और बीज गणित भी शामिल है, इन सब के जानने की परमाऽवश्यकता है। आजकल हम देखते हैं कि अध्यात्म विद्या तो केवल उपनिषद् तथा गीतादि में बन्द पड़ी है, व्यवहारिक तथा सत्यता रूप में इसका कोई प्रयोग नहीं हो रहा है, और यदि हो रहा है तो वही धोखा देने के तात्पर्य से हो रहा है। यही हाल योग विद्या का है। जो मनुष्य दर्जनों बच्चे पैदा करने की इच्छा रखने वाले तथा सारे संसार की सम्पति मिल जाय तो भी सन्तुष्ट न होने वाले, ऐसी वासना वाले मनुष्यों से यह योग विद्या कैसे सिद्ध हो सकती है। योग और भोग में तो

पृथ्वी आकाश का अन्तर है। तो फिर ये भोगों को चाहने वाले मनुष्य योग विद्या के अधिकारी कैसे हो सकते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि ज्योतिष विद्या के साथ २ इससे सम्बन्ध रखने वाली योग विद्या तथा अध्यात्म विद्या दोनों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यकीय है। किन्तु आजकल तो हम देखते हैं कि इस ज्योतिष विद्या वालों की भी एक अलग ही जाति बन गई है, कि जिनको ज्योतगी, भराड़े और डाकौत नाम से पुकारते हैं। ये रात दिन भोले मनुष्य तथा भोली भाली स्त्रियों को धोखा देने में दृढ़ संलग्न हो रहे हैं। और कई प्रकार से झूठे सच्चे ग्रह गोचर बता २ कर जनता जगत को धोखा दे अपना उल्लू (स्वार्थ) सिद्ध कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त जो ज्योतिष विद्या के जानने वाले विद्वान ज्योतिषी हैं, उनको छोड़ कर कुछ ऐसे भी ब्राह्मण लोग हैं कि जो होड़ा-चक्र आदि एक दो ज्योतिष की पुस्तकों को देख दाख कर ज्योतिषाचार्य का मिथ्या पद लिये बैठे हैं, इनकी करतूतों को तो पूछिये मत। ये जिस युक्ति तथा साहस के साथ जनता जगत को धोखा दे रहे हैं वह किसी से छुपा नहीं है। इनकी करतूतों का तथा धोखेबाजी का पता निम्नलिखित कविता द्वारा पाठकों को भली भांति प्रगट हो जावेगा। ज़रा सुनियेः—

बस उच्च कुल में जन्म ही से लाभ कुछ होता नहीं।
विद्या बिना भू देव भी होते तिरस्कृत क्या नहीं॥
जिनके चरण की रज कभी नर पति मुकुट पर धारते।
भगवान भी सानन्द जिनके चरण उर पर धारते॥ १॥

जो ऐन्द्र पद त्रैलोक्य सुख भी जानते बेकार थे।
सुरराज भी जिनके अमोघ श्राप से लाचार थे॥
वे आज ब्राह्मण देवता ही भीखमंगे हो रहे।
खोकर तपोधन ज्ञान धन अब मान धन भी खो रहे॥ २॥

उन उच्च वंशज ब्राह्मणों का देख लो क्या हाल है।
पतितः भयङ्कर आज उन पर ही विपत्ति कराल है॥
सब दुर दुराते हैं उन्हें अब भीख मंगे जान कर।
बस श्वान सम रह गई संसार में उनकी कदर॥ ३॥

अब आजकल के पंडितों की भी दशा सुन लीजिये।
उस पुण्य ऋषि संतान के वर्तव्य को सुन लीजिये॥
बेकाम दोनों टेम जाते हैं धनी के पास में।
मिल जाय वरणी पाट सब मनको लगा इस आस में॥ ४॥

कुछ शीघ्रबोध रटा कि गणकाचार्य का पद पा लिया।
डुपट्टा लगाया तिलक खैंचे हाथ में पतड़ा लिया॥
फिर तुक मिलाते आज कल तुम को लगी केतु दशा।
वरणी बिठाओ जप कराओ तो मिटे थारी दशा॥ ५॥

यों रच वितण्डा वाद वरणी पाठ उनको मिल गया।
तो फूलते मन में कि मानों भाग्य उनका खिल गया॥
जो शीघ्रबोध बिना रटे वो ज्योतिषी नहीं बन सके।
तो सेठजी के पास में जा पक्के रसोइये बन चुके॥ ६॥

कुछ काल तक करते परिश्रम जो पाठशाला में कहीं।
तो फिर कभी चिरकाल छुटते पाकशाला में नहीं॥
हे हे रसोये! धन्य तुमको वा तुम्हारे काम को।
बट्टा लगाया हाय तुमने पूर्वजों के नाम को॥ ७॥

जो पाठशाला पाकशाला दोनों ही में नहीं श्रम किया।
तो हर्ज क्या बस फेर उनने मांगना खाना लिया॥
है मांगने में शरम क्या यह ब्राह्मणों का कर्म है।
लो देखलो यह उच्च जाति किस तरह बेशरम है॥ ८॥

अब पाठकों को पता लगा होगा कि विद्या न पढ़ने के कारण ये ज्योतिष विद्या के ठेकेदार ईश्वर और धर्म के नाम पर कितना धोखा दे रहे हैं, ज़रा इनकी मिथ्या करतूतों पर और भी ध्यान दीजिये। जब किसी के घर में कोई शादी होती है तब लड़के और लड़की के माता पिता विवाह का मुहूर्त निकलवाने के लिये इन ज्योतिषीजी के घर पर पहुंचते हैं। मानलो इनकी लड़की की आयु पांच वर्ष है और लड़के की आयु दश वर्ष है। ज्योतिषी जी इन लड़के और लड़कियों की अल्पायु पर कुछ ध्यान नहीं देंगे, ये तो केवल मुहूर्त निकलवाने की फीस के दो चार रुपये ले लेंगे, और झूंटी सच्ची दो चार बातें बना कह देंगे कि अमुक तिथि, अमुक वार तथा घड़ी लड़कियों की शादी के लिये बड़ी मंगल दायिनी है, फिर चाहे व्याह होने के पश्चात् ही दूल्हा मर जावो अथवा दुलहिन। इनको इसकी कुछ परवाह नहीं, इनको तो केवल इस प्रकार की भेंट देने वाली शिकार मिलनी चाहिये। हालां कि ये लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि बाल विवाह कराने की अनुमति देना ठीक नहीं है। और शास्त्रों में भी कम से कम १६ वर्ष की लड़की तथा २५ वर्ष के लड़के की शादी कनिष्ठ दर्जे की मानी गई है, और आयुर्वेद (स्वास्थ्य) शास्त्र की आज्ञा से भी विरुद्ध है क्योंकि कच्चा बीज पृथ्वी में डाला जायगा तो उसका न पौधा ही लगेगा और न फल फूल ही, अर्थात् बाल विवाह स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हानिकर है। इतना सब कुछ होते हुए भी फिर ये मिथ्या ज्योतिषी भोले भाले मनुष्यों को केवल रुपया या दो रुपया लेने की नियत से शुभ लग्न या मुहूर्त बता विवाह करने की अनुमति दे देते हैं तो यह साक्षात् अनर्थ और धोखा नहीं तो फिर क्या है। इनका कर्तव्य तो यही था कि जब कोई अज्ञानी मनुष्य अल्पाऽवस्था में अपने पुत्र और पुत्रियों की शादी के लिये आज्ञा मांगे या मुहूर्त पूछे तो इनको साफ़ कह देना चाहिये कि इस आयु में लड़के लड़कियों की शादी करने का ठीक मुहूर्त नहीं है। तो बिचारे यजमान का भी भला होगा और लड़के लड़की का जो भला होगा, वह तो सब जानते ही हैं, कि योग्य अवस्था में शादी करने से उनका कितना हित हो सकता है।

इसी प्रकार दूसरा कोई मनुष्य पूछे कि महाराज मिश्रजी या ज्योतिषी जी मेरी लड़की की उम्र १० साल की है और दूल्हा (वर) की आयु ५० वर्ष है, ज़रा इनकी शादी का मुहूर्त निकाल दीजिये। फिर इसी प्रकार एक कोई तीसरा और पूछे कि महाराज मेरी लड़की की आयु १३ वर्ष है और लड़के की आयु १० वर्ष है। जरा दोनों का विवाह का लगन मुहूर्त निकाल दीजिये। तो ज्योतिषीजी फौरन दोनों का लगन मुहूर्त निकाल कर शुभ घड़ी, शुभवार और तिथि बतला कर यजमान से दो चार रुपया फीस का लेलेंगे। ये लोग इस बात पर कभी ध्यान न देंगे कि बाल विवाह, वृद्ध विवाह तथा अनमेल विवाह देश और राष्ट्र के लिये कितना घातक होता है तथा इसका मानव समाज पर कितना कुछ प्रभाव पड़ता है। इनको तो चाहे व्याह होते ही बुड्ढा मर जावे, तथा लड़की को कितना ही कष्ट हो जावे, इस बात की कोई परवाह नहीं है। इनका तो जनता समाज को धोखा देकर अपना कर (rent in arrears) वसूल होना चाहिये। और भविष्य में भी इनका इसी प्रकार कार्य चलता रहे यही एक मात्र इनकी हार्दिक इच्छा बनी रहती है।

इसी प्रकार जब किसी का प्रिय पुत्र अथवा प्रिय बांधवादि बीमार हो जाता है, और उस बीमार के संरक्षक माता पितादिक किसी ज्योतिषी जी के पास में जाकर पूछते हैं कि महाराज इस बीमार के ग्रह गोचर कैसे हैं तो ज्योतिषीजी देखते ही प्रसन्न हो जाते हैं और दो चार टेढ़ी सीधी बातें बनाकर कह देते हैं कि इसके अमुक २ क्रूर ग्रह पड़े हैं उनकी शान्ति के निमित्त अमुक २ दान करावो, अथवा महामृत्युञ्जय का जाप करावो। अब देखिये! इनकी इस करतूत पर ध्यान दें, कि ये लोग दूसरों को तो ऐसी २ बातें कह कर बहका देते हैं और जब इन ज्योतिषी जी के घर पर कोई बीमार हो जाता है तो फिर ये लोग ग्रह गोचर तथा महामृत्युञ्जय का ध्यान न देंगे किन्तु फौरन वैद्यजी के पास में अथवा डाक्टर के पास में पहुंच जावेंगे और उचित औषधि सेवन कराने में तल्लीन होजावेंगे। अब बत-

लाइये ये इनका सरासर धोखा नहीं तो फिर क्या है? इस प्रकार आपने बड़े २ शहरों की सड़कों के किनारे पटरियों पर आसन बिछाये बैठे हुए कई ज्योतिषियों को प्रश्न फल बतलाते देखा होगा, अथवा कई प्रकार की उलटी सीधी बातें बना कर धोखा देते देखा होगा? अब सोचने की बात है कि जिनको शुद्ध लिखना और पढ़ना भी नहीं आता है और वे फिर ज्योतिष विद्या का ठेका लेकर मनुष्यों के हानि लाभ, जय पराजय, यश अपयश आदि के दूर करने का दावा करें तो यह एक दम धोखा देना नहीं तो फिर क्या है? अतः मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि इस प्रकार के मिथ्या ज्योतिषी जो ईश्वर के नाम पर जनता जगत को धोखा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं, उनसे सदैव बचने की चेष्टा की जावे, और अपने अच्छे या बुरे कर्मों पर ध्यान दिया जावे। संसार में दुख सुख जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह सब अपने कर्मों का ही फल है, अतः शुभ कर्म करते हुए कर्मवीर बनना ही मनुष्य मात्र का धर्म है और गीता का सिद्धान्त भी ही है कि:—

कर्मण्येवाधि कारस्ते माफलेषु कदाचिनः।

स्वयं भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं कि हे अर्जुन! तेरा कर्म करने में ही अधिकार हो और फल में न हो। भगवान के कहने का अभिप्राय यह है कि जो कुछ तुमने कर्म किये हैं उनका फल तुमको अवश्य मिलेगा, अतः कर्मों के फलों को पूछने के लिये किसी ज्योतिषी आदि के पास जाकर व्यर्थ अपने समय और धन की हानि न करो। क्यों कि यह बात प्रत्यक्ष देखी जाती है कि जब कोई दुखिया ज्योतिषी के पास में जाता है, और ज्योतिषी जो कुछ उसको दान दक्षिणा तथा जाप आदि बतला देता है और वह दुखिया ज्योतिषी जी के द्वारा बताये हुए सारे कार्यों को विधि सहित करके ज्योतिषी जी को दान दक्षिणा प्रेम सहित दे देने पर भी जब उसका दुख दूर नहीं होता है। तब ज्योतिषीजी भी उसको यही बात कह कर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं, कि भाई—तुमने दान दक्षिणा देने में तो

कोई कमी नहीं की, और हमने भी तेरा कार्य करने में कमी नहीं रखी, किन्तु ईश्वर और कर्मों के आगे किसी का कुछ वश नहीं चलता है। इस प्रकार प्यारे भोले भाइयों! जब दुख सुख की व्यवस्था कर्मों पर ही नियुक्त है और कर्म का फल भोगना अवश्य संभव है, तो फिर अपने भाग्य विधाता कर्म और ईश्वर को छोड़ कर इन ज्योतिषियों के चक्कर में पड़ कर क्यों दुखी होते हो?



४ मंदिर देवालय के नाम पर धोखा

आजकल देखा जाता है कि धर्म और ईश्वर के नाम पर मन्दिर और देवालय बना २ कर जनता जगत को कितना धोखे में डाला जा रहा है। पूर्व ज़माने में जब कभी मन्दिरों का प्रचार हुआ होगा, तब इस का सम्बन्ध ईश्वर और धर्म के नाम पर हो तो कोई पता नहीं। किन्तु आज कल तो देखा जाता है कि ईश्वर और धर्म के नाम पर मन्दिर बना कर इनका दुरुपयोग कर रहे हैं कारण इसका यह है कि जब से मन्दिरों में वैषयिक पदार्थों का समावेश हुआ तब से ही इनमें कई प्रकार के अनर्थ होने लगे। इस बात को सब कोई जानते हैं कि बाहिरी पदार्थों से तथा भोगों से सदा सत्य दूर रहता है, और इसलिये भोग लिप्सा को त्यागना जीवों का परम कर्तव्य माना गया है। जब जीव के लिये ही भोग भोगना तथा भोगों की सामग्रियों का त्याग श्रेष्ट है, तो फिर ईश्वर के नाम पर भोगों को संग्रह करना तथा भोगों को भोगना मूर्खता नहीं तो फिर क्या है? जब मन्दिर के पुजारियों को ईश्वर के नाम पर आवश्यकता से अधिक द्रव्य तथा भोग सामग्रियां प्राप्त होने लगी तो इन्द्रिय संयम छूट गया, मनो वृत्तियां ईश्वर की ओर से हट कर संसारी पदार्थों की ओर को झुकने लगी, धर्म कर्म सब नाश हो गया, और ये मन्दिर तथा देवालय केवल पेट

पालने का लक्ष्य स्थान बन गया, और ये मन्दिर के पुजारी लोग मन्दिर के ठेकेदार बनकर नाना प्रकार की ईश्वर और धर्म सम्बन्धी बातें बना २ कर जनता जगत को धोखा देने लगे। जब इनके सहयोगी दूसरे लोगों ने देखा कि मन्दिर और देवालयों के नाम पर अनेकों भोग तथा आवश्यकता से अधिक द्रव्य मिलता है तो हर एक मनुष्य की भावना में मन्दिरों को बनवा बनवा कर उनके द्वारा प्राप्त हुए भोगों को भोगना ही उचित जान पड़ा, और मन्दिर बनाने की स्कीम तथा षडयन्त्र स्थान २ पर चालू हुए। कोई साधक जंगल में मूर्ति दबा आया और फिर लोगों में प्रचार करने लगा कि मुझको भगवान ने स्वप्न में दरशन दे कर आज्ञा दी है कि अमुक स्थान से भगवान की मूर्ति प्रगट हो जावेगी। इस प्रकार गली २ में और कूंचे २ में अनेकों देवी देवताओं के मन्दिर बनाये जाने लगे, और हर एक मन्दिर के पुजारी उनकी ठेकेदारी ग्रहण कर अनेकों प्रकार के भोग भोगने में दृढ़ संलग्न हो गये। किसी मन्दिर में ५००) रुपये रोज का भोग लगने लगा, सैकड़ों ग्राम मन्दिरों के नीचे लगाये गये, और अनेकों प्रकार के टैक्सेज रूपी आजीविका खड़ी की गई। सैकड़ों स्त्री पुरुष दर्शनार्थ आने लगे। इस प्रकार ये सब मन्दिर पुजारियों के लिये ही अड्डे मात्र रह गये।

आजकल जो कुछ अनर्थ और धोखेबाजी इन मन्दिरों में हो रही है वे किसी से छुपी नहीं है, कंचन और कामिनी दो ही संसार में विचित्र घाटी मानी गई हैं ये दोनों जहां एक जगह एकत्रित हो जावें तो वहां अनर्थों की क्या कमी रहती है। मन्दिर में प्रायः ये दोनों वर्तमान रहती हैं, तो फिर मन्दिरों में जितने भी अनर्थ हों उतने ही थोड़े हो सकते हैं। विधर्मियों के अटेक मन्दिरों पर क्यों हुए? सोमनाथ के मन्दिर को महमूद गौरी ने क्यों लूटा? तो कहना पड़ेगा कि द्रव्य के लोभ से। आज भी इस प्रकार की कई दुर्घटनायें मन्दिरों में प्रायः होती ही रहती हैं। कहीं राधिका जी के कानों के कुन्डल तो कहीं गले का हार ही चुराया जा रहा है।

ये सब क्यों हो रहा है ? तो इसका यही तो कारण है, कि आवश्यकता से अधिक ईश्वर के नाम पर वस्तुओं का संग्रह करना। कभी आपने मुसलमानों की मसजिद अथवा ईसाइयों के चर्च में इस प्रकार की चोरी होते सुना है ? तो कहना पड़ेगा कि कभी नहीं। दूसरे, इनके चर्च तथा मसजिद भी कहीं २ शहरों में एक २ वा दो दो ही बनी हुई दिखाई देंगी हमारे मन्दिर तथा देवालय जैसे नहीं कि छोटे २ ग्रामों में भी दस दस बीस बीस की संख्या पाई जावेगी। और जिस उद्देश्य व लक्ष्य की पूर्ति निमित्त ये मन्दिर तथा मसजिद बनाते हैं तो उस उद्देश्य की पूर्ति इनके द्वारा अवश्य करते हैं। चर्च में आप रविवार को जाकर देखिये। प्रायः उस दिवस सब के सब ईसाई एक जगह एकत्रित हो जाते हैं और बड़े प्रेम से ईश्वर की स्तुति तथा व्याख्यान श्रवण करते हैं। इस प्रकार मुसलमानों को भी नित्य प्रति नमाज के समय एकत्रित होते हुए देखा जाता है। किन्तु शोक है, कि हमारे मन्दिरों में इस प्रकार का लक्ष्य कोई भी देखा नहीं जाता। इसका कारण यह है कि हमारे यहां पर मन्दिर केवल पुजारियों को भोग भोगने के लिये अड्डे मात्र बनाये गये हैं, और उनकी आजीविका के मुख्य केन्द्र स्थापित हो गये हैं। और इसीलिये ये लोग चरित्र भ्रष्ट होते जा रहे हैं। क्यों कि जहां आवश्यकता से अधिक सम्पति तथा भोग प्राप्त होते हैं तो वहां आलस्य और प्रमाद को स्थान मिल जाता है। इस कारण इन लोगों की भावना सदा ईश्वर से विमुख रहती है, जैसे बकुला मछली की ताक लगाये जल के किनारे बैठा रहता है, और मछली को देखते ही हड़प कर जाता है, यही हाल इन मन्दिरों के पुजारियों का देखा जाता है, ये लोग सदा मन्दिरों में बैठे हुए भोले भाले स्त्री पुरुषों को ईश्वर और धर्म के नाम पर कई प्रकार की मीठी २ बातें बना तथा कई प्रकार के महात्म्य की बातें बता २ कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहते हैं।

किसी को कहते हैं कि सेठ आज तो भगवान को भोग नहीं लगा है, तू ही आज अपनी तरफ से भगवान को भोग लगवादे। किसी स्त्री

को कहते हैं कि राधिका जी के कुन्डल नहीं है तू ही अपनी तरफ से बनवादे। किसी को कहते हैं आज एकादशी है, भगवान को फलाहार के लिये सेर भर कलाकन्द ही दिलवादे। कहने का अभिप्राय यह है कि इस प्रकार की बहुत सी चापलूसी की बातें करके संसार को धोखा दे रहे हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। फिर इन देवालयों तथा मन्दिरों से किसी को लाभ होता है सो भी बात नहीं है, हां अलबत्ता इस प्रकार के मन्दिरों से पुजारियों का काम अर्थात् ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देकर अपना स्वार्थ सिद्ध करके संसारिक नाना प्रकार के भोग भोगना तथा द्रव्यो-पार्जन करके अनेकों अनर्थ में प्रवृत्त होना तथा सुलफा, गांजा, तथा भंग आदि का पीना तथा आलस्य और प्रमाद में पड़े रहने के सिवाय दूसरी उत्तम बातें कोई भी देखी नहीं जा रही हैं। ये लोग इन मन्दिरों में बेकार पड़े हुए रात दिन अपनी स्कीम में ये ही बातें सोचा करते हैं, कि किस प्रकार से अमुक सेठ या सेठानी को धोखा दिया जाय, किस प्रकार किसी भोली भाली शिकार को ईश्वर और धर्म के बहाने फँसा कर अपना स्वार्थ सिद्ध किया जाय, इस प्रकार रात दिन इनकी भावनाओं में सिर्फ धोखा देने के सिवाय सद् भावनाओं का विकास तो देखा ही नहीं जाता। फिर इन लोगों ने अपना पेट इतना बढ़ा रखा है, कि इनको चाहे मन्दिर और देवालयों से कितनी ही खाने पीने की चीजें मिल जांय और चाहे कितना ही दान दक्षिणा मिल जाय, तो भी इन का पेट भरा हो ऐसा कभी देखा नहीं जाता, हर समय आप लोग इनको किसी न किसी वस्तु के बहाने चिल्लाते हुए ही देख सकते हैं।

मैं अभी थोड़े दिन हुए राजस्थान उदयपुर में गया था, नाथद्वारा एक बड़ी प्रसिद्ध जगह है, वहां पर श्री नाथ जी महाराज का मन्दिर है वहां नित्य प्रति ५००) या ७००) रुपया के लग भग भोग लगा करता है किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि उस पदार्थ में से जरा भी गरीबों तथा अभ्या-गतों को मिलते नहीं देखा गया, वह सारा का सारा बाजार में दुकानदारों की

दुकानों पर बिकता हुआ दृष्टि आता है। अब विचारिये! यह नाम तो भोग का है, किन्तु लक्ष्य कुछ दूसरा ही बना हुआ है। इसी प्रकार आप जहाँ भी इन बड़े बड़े नामी २ देवालय तथा मन्दिरों में जाँयगे, वहाँ सब जगह आपको ऐसी ही करतूत पाई जावेगी। ये लोग कहते ज़रूर हैं कि भगवान को भोग लगाते हैं किंतु भगवान का नाम लगा कर खा आप जाते हैं। हाँ, एक प्रकार से भगवान ज़रूर खाया करते थे, पूर्व ज़माने में जो भगवान को भोग लगाने की प्रथा थी, वह अवश्य सद्भावना को लिये हुए थी, क्योंकि मन्दिरों में बड़े बड़े विद्वान संत महात्मा, ग़रीब तथा अभ्यागत लोग आया करते थे, और इन मंदिरों में ठहरते थे, इनको वहां अतिथि रूप में हर प्रकार का आश्रय दिया जाता था और जो कुछ भगवान को भोग लगता था वह सब इनके खाने के लिये दिया जाता था, इस प्रकार अतिथियों की तथा विद्वान संत महात्माओं की कुछ सेवा होती थी, वह सब भगवान ही की सेवा समझी जाती थी, और जो कुछ भगवान का भोग बनता था, उसको ये लोग खाया करते थे, उसके विषय में यही समझा जाता था कि भगवान खाते हैं। किन्तु अब तो मन्दिरों में ऐसी कोई बात नहीं पाई जाती न तो किसी अतिथि को ठहरने ही देते हैं और न उनका किसी प्रकार सत्कार ही देखा जाता है, आजकल तो चाहे जितना बड़ा मंन्दिर बना कर देदो और चाहे पांचसौ रुपया रोज की आजीविका लगा दो तो भी मन्दिर के ठेकेदारों का पेट नहीं भरता। कहने का अभिप्राय यह है कि जब से इन देवालय तथा मन्दिरों में ईश्वर और धर्म की झूंठी (बनावटी) दुहाई देने वाले पुजारी रूप ठेकेदारों का अधिपतित्त्व हो गया, तब से इन मन्दिरों में केवल इनकी भलाई होने के सिवाय जनता जनार्दन को कोई लाभ होता है ऐसी बात नहीं देखी जाती।

देखिये! आप लोग कोई शिक्षा मन्दिर अर्थात् स्कूल तथा पाठशाला खोलते हैं तो उनमें कितने ही विद्यार्थी पढ़ लिख कर योग्य होते हैं। इसी प्रकार जब आप स्वास्थ्य मन्दिर स्थापित करते हैं तो उसमें कितने ही रोगी आरोग्यता प्राप्त करते देखे जाते हैं; अर्थात् इस प्रकार की संस्थाओं के

साथ २ उनमें जनता जगत के उपकार का प्रति फल भी साथ ही साथ प्रत्यक्ष दिखाई देता है। किन्तु इन बड़े २ देवालय तथा मन्दिरों से किसी को किसी प्रकार का लाभ होता है सो बात बिलकुल दिखाई नहीं देती। केवल बड़े २ महन्त तथा पुजारियों को छोड़ कर जनता जगत का कुछ उपकार होता हो सो कुछ भी दिखाई नहीं देता, और अनुपकार जो कुछ हो रहा है सो सबों को प्रत्यक्ष ही दिखाई देता है, अर्थात् इन मन्दिरों के बहाने ईश्वर और धर्म का नाम ले लेकर कितने भोले भाले नर नारियों को ठगा जा रहा है, और कितने प्रकार के टैक्स उगाये जा रहे हैं। और फिर इन मन्दिरों तथा देवालयों के व्यवस्थापकों में इतनी बड़ी पोल चुसी हुई है कि जिसके कारण ये चाहें जब जनता जनार्दन को धोखा देकर हजारों तथा लाखों रुपया दान या चढ़ावा का ले लेकर, अथवा कितनी ही खाने पीने की उत्तमोत्तम सामग्रियाँ तथा कपड़े लत्ते प्राप्त करलें, तो भी इन से पूछने वाला या कहने वाला नहीं है कि तुम्हारी कितनी आय हुई और किस २ कार्य में कितना व्यय हुआ, अर्थात् इनसे लेखा जोखा लेने का किसी को अधिकार नहीं। अब बुद्धिमान पाठक सोचें! कि इन से अधिक स्वतन्त्रता तथा स्वच्छन्दता किस महकमे में पा सकते हैं। मेरी समझ में तो ऐसा कोई दूसरा महकमा दिखाई नहीं देता कि जहां पर इस प्रकार के आय व्यय का नियन्त्रण न रखा जाता हो।

प्यारे सज्जनो! आज इनकी स्वतन्त्रता तथा स्वच्छन्दता का ही यह परिणाम है कि ये सब बड़े २ मन्दिर तथा देवालय इन पंडे और पुजारियों के भोग भोगने को एक मात्र अड्डे बन गये हैं, जिनमें ये लोग निडर व निर्भीक बन कर जो चाहें सो कुकृत्य में रत हो सकते हैं, और जिसको चाहें मन्दिर में प्रवेश करने दें, और जिसको चाहें न करने दें, सब प्रकार की आजादी अपने हाथ में ले रखी है। और अभिमान में इतने चूर हो गये हैं कि अपने समान किसी दूसरे को देख ही नहीं सकते, बस ये ही इनके पतन का कारण है। यदि सचमुच में देखा जावे, तो ये पंडे और पुजारी केवल जनता जनार्दन की सेवा करने के लिये तथा आगन्तुक अतिथियों को सुख पहुँचाने

के लिये नियुक्त किये थे, किन्तु अब ये लोग अपनी सेवा भाव को भूल कर खुद स्वामी बन बैठे हैं। हालांकि मन्दिरों में इनकी निजी कोई वस्तु दिखाई नहीं देती, क्योंकि मन्दिर बनाने में जो सम्पत्ति लगती है वह कोई दूसरा ही लगाता है, चढ़ावा जो कुछ चढ़ाया जाता है वह दूसरे ही चढ़ाते हैं, मन्दिरों की सुव्यवस्था के लिये जो जागीर प्रदान की है वह भी दूसरों के द्वारा ही प्रदान की गई है। और मन्दिरों में जो कुछ खाने पीने को माल उड़ता है वह भी दूसरों के द्वारा ही है। कहने का अभिप्राय यह है कि मन्दिर बनाने वाला, मन्दिर की व्यवस्था करने वाला तथा आवश्यकता से कहीं अधिक द्रव्य देने वाला तो जनता जगत है, और मालिक बनने वाला तथा माल उड़ाने वाला और भोगों को भोगने वाले ये सब पंडे पुजारी हैं। बस ये ही एक महा अन्धेर है, और ये ही बड़े २ पंडों पुजारियों के भ्रष्ट होने का मुख्य साधन है। क्योंकि इन पर जनता जनार्दन का कोई प्रति बन्ध देखा नहीं जाता, और तिस पर इनको आवश्यकता से कहीं अधिक सामग्रियां तथा द्रव्य की प्राप्ति होती है, तो ऐसी स्थिति में ये लोग जितना भी अनर्थ करें सो ही थोड़ा है। अतः जनता जगत का कर्तव्य है कि वह इन पर कुछ प्रतिबन्ध लगावे ताकि जिन उद्देश्यों की पूर्ति निमित्त ये मन्दिर तथा देवालय बने हैं उन उद्देश्यों की पूर्ति विधिवत् होने लगे। बिना प्रतिबन्ध लगाये न तो इन पंडे पुजारियों का ही उद्धार होगा, और न जनता जनार्दन ही की कुछ भलाई होगी, यह अटल सिद्धान्त है। अब इन पंडे पुजारियों की जो करतूत हैं, सो निम्नलिखित गायन द्वारा पाठकों को भान कराया जाती हैं। जरा सुनियेः— ये लोग मन्दिरों में क्या २ कुकृत्य करते हैं।

गायन

मन्दिर में मौजां उडें आनन्द अखण्डारे। माल मारैं मुस्टन्डारे ॥ टेक ॥
ठाकुर देख देख होय ठंडा रे॥ माल मारे मुस्टन्डारे ॥ टेक ॥
बड़ी जुगति पकवान बनावें, प्रभु जी के आगे पुरषावें,

घंटा झालर नाद बजावें, प्रभु को ठोसा बताय पाजावें पंडारे।
माल मारें मुस्टन्डारे ॥ १ ॥

फूल डोल हिन्डोल सजावें, लीला खेलें रास रचावें,
तीजों दिवस त्यौहार मनावें। नाचें कूदें रात दिना सो फैलाँय अफन्डारे ॥
माल मारें मुस्टन्डारे ॥ २ ॥

सांझ सवेरे पीवें भंगा, सुलफो सार रचावें रंगा,
हो चकचूर हंसें हुर दंगा। तन जाराँ ताजा घना सो मन मांहि घमन्डारे ॥
माल मारें मुस्टन्डारे ॥ ३ ॥

दर्शन को जब आवें नारी, प्रेम प्रफुल्लित होंय पुजारी,
मुलकें, हसें निजारा मारी। जारी का जानें जीका सो कई हथकंडारे ॥
माल मारे मुस्टन्डारे ॥ ४ ॥

अण्ड बण्ड पाखण्ड रचावें, भोली दुनियां को बहकावें,
अपना स्वार्थ सिद्ध करावें। वेद धर्म के भ्रम का जिन फोड्यो भंडारे ॥
माल मारें मुस्टण्डारे ॥ ५ ॥

समय देख कवि कहे समुझाई, धूर्त्त पोप लीला फैलाई,
इनके कहे न चालो भाई। सिर में इनके धूल देई मारो दोय डंडारे ॥
माल मारें मुस्टण्डारे ॥ ६ ॥

अतः इन सब पंडे पुजारियों का चरित्र निर्माण करने के लिये जनता जगत को उचित है कि वह इन पर कुछ ऐसा नियन्त्रण कायम करें कि जिससे इनका प्रभुत्व नाश होकर जनता जनार्दन की सेवा के सच्चे अधिकारी हो जावें। यही मेरी सुदृढ़ भावना है।



५. मन्दिरों की सार्थकता कैसे हो

प्रपञ्च और पाखण्ड की वृद्धि तब ही होती है, कि जब इनके उपासकों की वृद्धि हो जाती है। आजकल देखा जाता है कि अधिकांश मनुष्य भोगों के दास बनते जा रहे हैं, और इन भोगों की प्राप्ति के निमित्त सारा संसार दृढ़ प्रयत्नशील हो रहा है, कोई इनमें अपने नाना प्रकार के पुरुषार्थ द्वारा द्रव्योपार्जन कर भोग भोगने में संलग्न है, कोई कथा वार्ता सुना कर भोगों का संग्रह कर रहे हैं, तो कोई २ ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा दे अपने भोगों की पूर्ति में दृढ़ संलग्न हैं। कहने का अभिप्राय यह है, कि समस्त संसार को नाना प्रकार के भोग भोगने को भोगालय बना रखा है, और जिस किसी प्रकार भी भोगों की पूर्ति हो मनुष्य वेही कार्य करने में प्रवृत्त हैं। बस ये ही हाल लोगों ने हमारे मन्दिर और देवालयों का कर रखा है, इनको भी लोगों ने द्रव्योपार्जन करने तथा नाना प्रकार के भोग भोगने के लिये अड्डा बना रखे हैं। और ये ही कारण हैं कि मन्दिरों में जिन उद्देश्यों की पूर्ति निमित्त वे बनाये गये थे उन उद्देश्यों की पूर्ति देखी नहीं जाती।

आजकल मनुष्य अपने नामों के लिये बड़े २ मन्दिर बना कर संसार भर के पदार्थों को एकत्रित कर देते हैं और लाखों रुपयों की सम्पत्ति लगवा कर नाना प्रकार के भोग भोगते हैं, जिसका परिणाम यह निकलता है कि या तो उन पर विधर्मियों का अटेक (आक्रमण) होता है, या चोर अथवा लुटेरे आकर लूट मार करते हैं। अतः मन्दिरों में भोगों के निमित्त अथवा दिखावटी शोभा बढ़ाने के लिये कोई ऐसी चीज वा द्रव्य नहीं रखना चाहिये कि जिसको देख कर मनुष्यों की चित्त वृत्तिओं में क्षोभ पैदा हो जावे अथवा उनके चुराने की इच्छा प्रगट हो जावे। मन्दिर जहां तक हो सके शुद्ध वाताऽवरण में बनाने चाहिये और बहुत कम बनाने चाहिये, मन्दिरों की बहुतायत हो जाने से मनुष्यों का प्रेम भी कम हो जाता है। और बहुधा मनुष्य उनसे अपना स्वार्थ सिद्ध किया करते हैं। मन्दिरों में एक बहुत बड़ा

हाल Hall) बनाना चाहिये कि जहां पर भक्त लोग उपस्थित हो कर कथा, वार्ता अथवा व्याख्यान आदि श्रवण कर सकें। उनका सदुपयोग होने के लिये प्रत्येक मन्दिर में शिक्षालय स्थापित होने चाहिये कि जहां पर शिशु बालक अथवा बालिकायें विद्याऽध्ययन कर सकें और साथ ही मन्दिरों में स्वास्थ्य विभाग भी होना चाहिये, कि जिसमें गरीबों को साधारण रोगों की औषधियां दी जा सकें। और अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था भी मन्दिरों में ही होनी चाहिये कि जिससे बड़े २ विद्वान साधु महात्मा आ आकर समय २ पर अपने सद् उपदेशों से जनता की भलाई कर सकें। मन्दिर के पुजारियों को मन्दिर कमेटी से उनके गुजारे का प्रबन्ध किया जावे, और मन्दिर की सारी सम्पति पर मन्दिर कमेटी का अधिकार रहना चाहिये। पुजारी का आचरण खराब हो जावे, अथवा सेवा करने में आलस्य प्रमाद करे तो मन्दिर कमेटी उसको प्रथक् करके उसकी जगह शुद्ध आचरण वाले पुजारी की नियुक्ति कर दी जावे। मन्दिर कमेटी के पास कोष की अधिकता होने पर उसको शिक्षा मन्दिरों की व्यवस्था, स्वास्थ्य विभाग की व्यवस्था अथवा गरीब छात्रों के छात्र वृत्ति की व्यवस्था में खर्च किया जावे।

आजकल हम देखते हैं कि जिस सेठ साहूकार के पास पैसा हुआ कि बस उसको अपने नाम के लिये या तो मन्दिर बनाना पड़ता है या धर्मशाला। और वे इन संस्थाओं में अर्थात् मन्दिर या धर्मशाला बनाने में लाखों रुपया खर्च कर डालते हैं। इस प्रकार आज हजारों तथा लाखों मन्दिर और धर्मशालायें बनी देख पड़ती हैं कि जिनसे जनता जगत को बहुत कम फायदा पहुंचता है, हां, अलबत्ता जिस पुजारी को यह मन्दिर सौंप दिया जाता है, उसको अवश्य फायदा होता है, क्योंकि उस की तो आयु भर के लिये गुजारा की स्कीम चल जाती है। इस प्रकार ये मन्दिर आगे जाकर द्रव्योपार्जन करने के साधन अथवा भोग भोगने के केन्द्र स्थान बन जाते हैं। ये मन्दिर बनाने वाले यदि अपने नाम की भावना को हटा कर ईश्वरीय भावना अथवा जनता जगत के उपकार की भावना को लेकर बनाये जावें तो

फिर इतने मन्दिरों की बनाने की आवश्यकता ही क्या है ? आज शहरों में या तीर्थों की जगह पर जो सैकड़ों मन्दिर बने दीख पड़ते हैं, उनमें दो भावना देखी जाती हैं, या तो अपने नाम की भावना या इनके द्वारा द्रव्य कमा कर संसारिक भोग भोगने की भावना। इन दो भावनाओं के अतिरिक्त जो संसार के उपकार की भावना है वह इन मन्दिरों में स्वप्न को भी नहीं दीखती है। इसका परिणाम यह निकल रहा है कि ईश्वर के नाम पर भी भेद भाव खड़ा होगया। कोई कहता है कि यह मन्दिर अमुक सेठ का बनाया हुआ है, इस लिये हम उसमें नहीं जाते, कोई अमुक का नाम लेकर भ्रान्ति पैदा करता है। इस प्रकार लोगों ने ईश्वर के साथ में भी छोटा बड़ा, ऊँच नीच तथा भेद भाव रूपी भ्रान्ति दीवार खड़ी करदी। यह सब क्यों हुआ ? सो कहना पड़ेगा, कि लोगों ने अपने नाम के लिये सब काम किये। कोई ईश्वरीय भावना को लेकर ये सब कार्य नहीं हुए, यदि ईश्वरीय भावना को लेकर ये सब काम किये जाते तो आज इतने मन्दिरों के विस्तार करने की आवश्यकता ही क्यों होती ?

ईसाइयों को देखिये ! वे जहाँ भी चर्च (गिरिजा घर) बनाते हैं उसको अकेला कोई नहीं बनाता, सब यूनियन मिल कर बनाते हैं, और बहुत थोड़े चर्च बनाते हैं, कि जिससे उनका ईश्वरीय भाव तथा प्रेम सदा एक सा बना रहता है, और उस चर्च में जो कुछ भी सामग्री जुटाते हैं, वह ऐसी होती है कि सब के उपकार में आवे और किसी को उससे मोह उत्पन्न न हो। चर्च में क्या चीज़ होती है सो सुनियेः— चर्च के ऊपर क्रोस की मूर्ति होती है जो लोहे की शलाका की बनाई जाती है। और चर्च के भीतर प्रभु क्रीष्ट की मूर्ति होती है जो साधारण फोटू जैसी बनी होती है, और एक बहुत बड़ा हाल (Hall) बना रहता है, जिसमें लकड़ी का ऊँचा स्टेज (stage) होता है, जहां पादरी साहब खड़े होकर श्रोताओं को प्रार्थना अथवा लेक्चर (Lecture attend) कराते हैं। और नीचे श्रोताओ को बैठने के लिये कुर्सियां (chairs) लगी रहती हैं कि जिन पर बैठ कर श्रोतागण चुप शान्त

बैठ कर पादरी साहब का भाषण सुनते रहते हैं। कहने का अभिप्राय यह है, कि उनके ईश्वर के घर में (church) आपको कोई भी ऐसा पैशाचिक पदार्थ देखने में नहीं आवेगा कि जिसको देख कर चित्त में मलिनता अथवा क्षोभ पैदा हो सके।

अब इनकी कार्यव्यवस्था तथा दान व्यवस्था पर ध्यान दीजिये:— गिरजाघर के पादरी साहब को सोसायटी मिशन से मासिक वेतन मिलता है और वे पादरी साहब अपनी तनख्वाह के अतिरिक्त ऊपरी रीति से एक पाई भी अधिक ग्रहण नहीं कर सकते। एक २ पादरी साहब के अन्दर में कई एक गिरिजा घर नियुक्त रहते हैं, और वे समय २ पर जाकर प्रत्येक गिरजा घर को सम्भाला करते हैं। पादरी साहब के पास में एक डायरी रहती है कि जिसमें ये लोग अपनी रोजाना की सर्विसेज (सेवायें) लिखा करते हैं। इस प्रकार पादरी साहब अपने देश के कार्य में सदा व्यस्त रहते हैं। इन ईसाइयों को ज्यादा गिरिजा घर बनाने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वे लोग जानते हैं कि भगवान एक है, इसलिये उसके नाम पर अनेकों मन्दिर बना कर खड़े करने की आवश्यकता क्या है? इनको जुदा अनेकों मन्दिर बना कर आजिविका के अड्डे थोड़ी ही खड़ा करना है अथवा ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा थोड़े ही देना है। इनको तो जो कुछ करना है वह जनता जनार्दन की सेवा करनी है, और वह सेवा एक मन्दिर बना कर भी की जा सकती है। प्यारे सज्जनो! आप निश्चय जानिये! संसार में ऐसा कोई देश नहीं है कि जो ईश्वर तथा धर्म के नाम पर धोखा देकर अपना पेट पालता हो, किन्तु भारत ही एक ऐसा देश है, और हिन्दू ही एक ऐसी जाति है कि जिसमें ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देने की भावना प्रत्यक्ष दीख पड़ती है। संसारिक कामों में यदि किसी तरह धोखा हो जावे तो वह भी जनता जगत को कितना दुखदाई हो जाता है फिर तिस पर यदि ईश्वर और धर्म के नाम पर भी धोखा होने लगे तो वह समाज कब तक जीवित रह सकती है, यह ईश्वर ही जान सकता है।

अब आप ईसाइयों की दान व्यवस्था के विषय में सुन लीजियेः— इन लोगो के जैसे चर्च आदि अकेला कोई व्यक्ति नहीं बनाता, युनियन मिल कर बनाती है। इसी प्रकार इनके दान की भी व्यवस्था है, इन लोगों को न तो अकेले दान खर्च करने की आवश्यकता है। इनके दान एकत्रित करने वाली भी यूनियन है, और खर्च करने वाली भी यूनियन है। यूनियन में जो कुछ दान आता है उसको ये लोग अपने देश में ही खर्च नहीं कर देते हैं किन्तु उसके द्वारा ये लोग अपने धर्म का प्रचार करते हैं और ग़रीबों का उपकार करते हैं। इस कार्य को कराने के लिये मिशिन स्थापित कर रखी है। और देश के विभाजन के अनुसार उस दान को अनेक भागों में विभाजित कर के जहां जहां जिस जिस देश में इनकी ये मिशिन कार्य कर रही है वहां २ उस मिशिन के पास भेज देती हैं। इस प्रकार इनकी कई एक मिशिन भारत में भी बड़े प्रेम से कार्य कर रही हैं, इस मिशिन के पास में भी वहां करोड़ों रुपये का दान आता है और यहां पर आकर पादरी साहब के रजिस्टर में अङ्कित होता है, और फिर जहां २ जिस जिस हिसाब से खर्च होता है, उसमें एक एक पाई का पादरी साहब को रेकार्ड रखना पड़ता है। यह किन किन कार्यों में खर्च होना है सो सुनियेः—

ईसाई लोग अपने दान को दो बातों में विशेष खर्च करते हैं, या तो शिक्षा मन्दिरों में खर्च करते हैं या स्वास्थ्य मन्दिर में। अर्थात् ये लोग यातो गरीबों को औषधि अथवा वस्त्र बांटते हैं या मिशिन स्कूल चालू करके गरीब अनाथ बालक या बालिकाओं की शिक्षा का प्रबन्ध करते हैं। अब आप इन की जनता जनार्दन के निमित्त जो सेवा का भाव है उस पर भी ध्यान दीजिये। ये लोग अच्छे २ परिवारों की स्त्री पुरुष अथवा पादरी साहब सब मिल कर या तो भंगी कोलोनी में जाते हैं, या चमारों की कोलोनी (Colony) में पहुँचते हैं, और वहां जाकर ये लोग ऐसे आदमियों को टटोलते हैं कि जिन को कई प्रकार के व्रण (घाव) पड़े हुए हैं, फटे

पुराने कपड़े दीख पड़ते हैं, खाने को जिनका कोई ठिकाना नहीं है। ऐसे आदमियों को ये लोग छांट कर अपने हाथ से उनके व्रणों (घावों) को धोते हैं, फिर सुन्दर २ घावों को शीघ्र भरने वाली मलहम लगाते हैं। गले सड़े पुराने वस्त्र उतरवा कर उनको नवीन वस्त्र धारण करवाते हैं और भोजन तथा चीनी का प्रबन्ध करते हैं। इस प्रकार दस पांच दिन तक उनकी बड़े प्रेम से सेवा करके रोगों से मुक्त कर देते हैं और फिर चर्च में लेजा कर उनको ईसाई बना डालते हैं। और उनके बच्चों को पढ़ा लिखा योग्य विद्वान् बना कर साहब बहादुर बना देते हैं। अब देखिये एक ओर तो इनकी दान व्यवस्था, जाति व्यवस्था तथा ईश्वर व्यवस्था पर ध्यान दो कि जो मनुष्यों को देवता बनाते हैं, और दूसरी ओर तो हमारे इन पंडे व पुजारियों पर ध्यान दो कि जो करोड़ों रुपया दान का हज़म कर टट्टी के रास्ते निकाल देते हैं, और बिचारे ग़रीब मनुष्यों को अछूत बना डालते हैं। यह तो मैंने ईसाइयों की व्यवस्था वर्णन की है, अब आप हमारी हिन्दु जाति की मन्दिर व्यवस्था, दान व्यवस्था तथा ईश्वर व्यवस्था पर ध्यान दीजिये।

मैंने आपको ऊपर लिख कर बतलाया कि ईसाई लोग कोई अकेला अपना नाम पैदा करने के लिये गिरिजा घर नहीं बनावेंगे, किन्तु सब मिल कर बनावेंगे, और बनाने के पश्चात् उसमें कोई वैषयिक पदार्थ संग्रह नहीं करेंगे, और न सोना चाँदी ही इकट्ठा करके कोष स्थापित करेंगे; किन्तु नितान्त शुद्ध वातावरण में कोई परिग्रह नहीं, चर्च में जाते ही विषयों से विरक्ति हो जावे और ईश्वर की ओर अनायास मन लग जावे। इस प्रकार का बनावेंगे। किन्तु हमारे देश में यह सब मिल कर नहीं बनावेंगे, एक २ आदमी अपने स्वार्थ का ले कर तथा अपने नाम उजागर के लिये मन्दिर बनावेंगे। फिर उसमें सारी संसार सम्बन्धी भोगों की सामग्री एकत्र कर देंगे। एक सेठ ने वृन्दावन में अपने नाम के लिये मन्दिर बनाया, उसके आंगन में एक सोने का लट्ठा गाड़ा गया और मन्दिर को नाना प्रकारकी भोग सम्बन्धी सामग्रियों से सजाया गया; दूसरा सेठ वहां दर्शनार्थ पहुँचा, उसने मन्दिर

देखा, और उसके हृदय में भी ऐसा मन्दिर बनवा कर उससे भी अधिक अपना नाम पैदा करना चाहा; और अपनी भावना के अनुसार उससे भी कहीं अधिक विस्तार वाला मन्दिर पुष्कर जी में बना डाला, और वैसा ही सोने का लठ्ठा मन्दिर के आंगन में खड़ा कर दिया। अब देखिये ! इस सोने के लठ्ठे से न तो ईश्वर को ही कोई फायदा और न जनता जगत को। इससे किसी को भी कोई लाभ नही है हां अलबत्ता हानि अवश्य है, क्योंकि माया को देखकर विधर्मियों को तथा चोर डाकुओं को लालसा होती है कि इस द्रव्य को किसी तरह प्राप्त करले। कहने का अभिप्राय यह है कि भगवान को क्या हम बाहिरी कीमती २ वस्तुएं दिखा कर वश में कर सकते हैं, अथवा उसको सुन्दर २ व्यञ्जन बना कर इन्द्रियों के स्वाद में डाल सकते हैं, अथवा सुन्दर २ कपड़े सजा कर उनको क्या सुन्दर बना सकते हैं ? तो कहना पड़ेगा कदापि नहीं। ऐसा कहना मनों भगवान का अपमान करना है। क्यों कि ये सब हमारी क्रियायें ऐसी हैं कि जैसे चक्रवर्ती राजा धिराज को सम्पूर्ण वस्तुओं से हटा कर एक छोटी सी झोंपड़ी का मालिक बनाना, अथवा सूर्य के सामने दीपक दिखाने वाली कहावत चरितार्थ करना है। ये सब चीजें तो आपको अपने घर में ही शोभा दे सकती हैं, यदि आपने भगवान के मन्दिर को भी अपनी घरेलू वस्तुओं से संग्रहित कर दिया तो फिर आपके घर और मन्दिर में अन्तर ही क्या रहा ? आप को सन्ध्या पूजन तथा भजन करने की आज्ञा वन उपवन तथा एकान्त स्थानों में जाकर करने की क्यों दी जाती है ? तो इसका कारण यही है कि यहां पर संसारिक वातावरण से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं का अभाव है, यहां आपका मन ध्यानावस्थित हो सकता है। यही हाल हमारे मन्दिरों का है, मन्दिर ऐसे वातावरण में होना चाहिये कि जहां किसी भी प्रकार की सामग्री न होनी चाहिये चाहे वह रस सम्बन्धी हो अथवा द्रव्य सम्बन्धी। तो वहां हमारा मन ईश्वर के ध्यान में लग सकता है। और जहां घर से भी अधिक सामग्रियां मन्दिरों में जुटा दी जावें तो फिर वहां पर यह चंचल चित्त स्थिर कैसे हो सकता है ?

आज हमारे मन्दिरों की जो दुर्व्यवस्था देखी जाती है उस का मुख्य कारण यही है कि हमने भगवान के मन्दिर में नाना प्रकार की वैषयिक चीज़ों का संग्रह करा कर तथा उत्तमोत्तम खाने पीने की चीजें पहुँचा कर इन पंडे पुजारियों को भोगों का दास बना कर ईश्वर से विमुख कर दिया, कि जिसके कारण बिचारे ईश्वरीय भावना को भुला कर रात दिन विषयों की लालसा में ही ध्यान लगाये बैठे रहते हैं। मन्दिरों के अधिक बनने की जो स्कीम चालू हुई उसका भी कारण मुझको तो यही दिखाई देता है। क्योंकि जब लोगों ने देखा कि ईश्वर और धर्म के नाम पर मन्दिर बनवा लेने से आवश्यकता से अधिक सम्पति तथा भोग विलास की सामग्रियां प्राप्त होती हैं तो गली २ तथा कूचे २ में मन्दिर स्थपित किये गये और सब पर अपना २ प्रभूत्त्व जमाया गया। ईश्वर और धर्म के नाम पर नाना प्रकार की कल्पना करा लोगों को धोखा देना शुरू किया। अतः इनका पुनरुद्धार करने के लिये मन्दिरों को शुद्ध तथा सात्त्विक बनाने के लिये दिखावटी भोग सम्बन्धी जो संसारिक पदार्थ हैं उनका त्याग करना चाहिये। और मन्दिर जहां तक हो सके बहुत थोड़े बनाना चाहिये, क्यों कि हमारे देश में पहिले से ही इतने मन्दिर बने हुए हैं कि जिनकी सुव्यवस्था करना कठिन हो रहा है, तो फिर नवीन २ निर्माण करना तो धन का दुरुपयोग करना ही कहा जावेगा, यदि आपको मन्दिर बनाने में ही आनन्द है तो बड़ी खुशी से शिक्षा मन्दिर बनाइये अथवा स्वास्थ्य मन्दिर बनाइये। इनके बनाने में देश तथा राष्ट्र दोनों का ही हित हो सकता है। अब आप हमारी दान व्यवस्था पर ध्यान दीजिये—

दान की व्यवस्था जितनी हमारे देश में हिन्दुओं में पाई जाती है उतनी और किसी देश व जाति में हो सो नहीं देखी जाती। तिस पर आश्चर्य यह है, कि यह दान कहाँ और किस प्रकार खर्च होता है, अथवा इसका क्या परिणाम निकलता है ? इसका किसी को पता नहीं। पहिला दान तो हमारे यहाँ पर बड़े बड़े धनी सेठ साहूकार अपने २ माल के क्रय विक्रय पर दूसरों से वसूल करते हैं, यह दान की रकम (संपत्ति) मेरी समझ में भारतवर्ष की

सबसे बड़ी संपत्ति है। इसको ये सब सेठ साहूकार ही तो वसूल करते हैं। और येही अपनी स्वेच्छा से जिन जिन कर्मों में इसको लगाना चाहिये उस २ कार्य में लगा कर समाप्त कर देते हैं। इनके इस दान के हिसाब किताब पूछने का भी किसी को कोई अधिकार नहीं है हालां कि यह धर्मादा भी वैसे देखा जाय तो जनता जगत का है, किन्तु इस पर जनता जगत का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। ये सेठ साहूकार लोग प्रायः इस धर्मादा को क्षेत्र, सदावर्त धर्मशाला, तथा मंदिर आदिकों की व्यवस्था में अधिक खर्च करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि ये सेठ साहूकार इस सारे धर्मादा को जनता जगत की सेवा में अर्पण कर देते हैं किन्तु इनका यह अर्पण करना भी बिना विचार के ही देखा जाता है इसलिये जितना फल देश को मिलना चाहिये, उतना प्रतीत नहीं होता। यदि ये सेठ साहूकार इस धर्मादा रूपी द्रव्य को एक कमेटी बना एक जगह एकत्रित कर सब मिल कर विचार सहित खरच किया करें तो देश और राष्ट्र का बहुत कुछ सुधार तथा हित हो सकता है।

दूसरा दान हमारे देश में ईश्वर और धर्म का ठेका लिये हुए ये पंडे और पुजारी लोग एकत्रित करते हैं। इनके इस दान की भी कोई सीमा नहीं है, और ये लोग जनता जगत को कितना धोखा देते हैं सो इनके इस धोखा देने की भी सीमा नहीं है। ये लोग वैसे तो नित्य प्रति ही दान दक्षिणा लेते रहते हैं और फिर इसके अतिरिक्त मन्दिरों में दान लेने के बहाने से इतने त्यौहार तथा तिथियां तथा फूलडौल, हिन्डोल, प्रतिपदा, अमावस्या, पूर्णिमा तथा संक्रान्ति आदि अनेकों ही पर्व तिथियां नियुक्त कर रखी हैं कि जिनकी कोई गणना नहीं, और इसी प्रकार इनके द्वारा जो पर्व तिथियां नियुक्त की गई हैं और इन तिथियों पर जो इनको दान मिलता है उस दान की भी कोई सीमा नहीं है। इस प्रकार इनके पास में दान की एक बहुत बड़ी सम्पत्ति पहुँच जाती है, यदि इस दान का हिसाब लगाया जाय और इसका सदुपयोग किया जाय तो इन मन्दिरों में कितने ही शिक्षा मन्दिर, स्वास्थ्य मन्दिर गुरुकुल तथा ब्रह्मचर्य आश्रम चलाये जा सकते हैं। किन्तु

इनके इस दान का कोई लेखा जोखा नहीं है, अर्थात् कोई पूछने वाला नहीं है कि तुम्हारे पास में दान का कितना द्रव्य आया, और उसको किस प्रकार कितना २ खर्च किया गया। और फिर इनके इस प्रकार दान लेने में जनता जगत का कुछ लाभ होता हो, सो भी बात नहीं है, इस दान का फल तो इनके पेट तक ही सीमित रह जाता है, कि जिससे ये लोग अनेकों दुर्व्यसनों में रत हो जाते हैं। प्रकृति का यह नियम भी है कि जहां पर आवश्यकता से कहीं अधिक द्रव्य तथा भोगों की सामग्रियां प्राप्त होने लगें तो वहां आलस्य और प्रमाद बढ़ता है और इनकी वृद्धि होने पर अनेकों भ्रष्टाचार होने लगते हैं। बस यही कारण है कि आज हमारे मन्दिर और देवालय पेट भरने के साधन तथा अनेकों भोग विलासियों के अड्डे बनते जा रहे हैं, और ईश्वर तथा धर्म की भावना केवल जनता जगत को धोखा देने के लिये शेष रह गई है। अतः जब तक इन मन्दिर तथा देवालयों के पुजारियों पर कोई जनता जगत का प्रतिबन्ध नहीं लगाया जायगा, तब तक न तो जनता जगत का ही भला हो सकता है और न ईश्वर व्यवस्था तथा धर्म व्यवस्था ही ठीक हो सकती है।

तीसरा दान हमारे देश में स्याने, भोपे (मन्त्र तन्त्र तथा भूत विद्या) के नाम पर तथा मिथ्या ज्योतिषी बन और राहु केतु की दशा बता जनता जगत को धोखे में डाल कर वसूल कर रहे हैं। भारत में ऐसे लोगों की संख्या भी कुछ कम नहीं है। क्योंकि ये लोग भी प्रत्येक गावों में तथा शहरों के कोने २ में बैठे हुए अपना स्वार्थ तथा उल्लू सिद्ध कर रहे हैं। इनके पास जनता जगत का कितना द्रव्य पहुँचता है और कहां खर्च होता है इसका कोई लेखा जोखा भी नहीं है। ये दुनियां के कितने ही भोले भाले स्त्री पुरुषों को धोखे में डाल रहे हैं, और उलटी सुलटी बातें बना कर लाखों तथा करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति पर हाथ मार रहे हैं। इनके इस कार्य से जनता जनार्दन की कुछ भलाई होती हो सो कुछ भी दिखाई नहीं देती। हां ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा बाजी अवश्य देखी जाती है।

चौथा दान हमारे देश में बड़ी २ संस्थाओं के नाम पर धोखा देकर

वसूल कर रहे हैं। कोई दस बीस विधवा स्त्रियों को इकट्ठा करके बैठ गया है, और विधवाश्रम के नाम से चन्दा करके अपना उल्लू सिद्ध कर रहा है। कोई दस बीस गायों को इकट्ठा करके गौशाला के नाम पर लोगों को धोखा दे रहा है, कोई दस पांच लड़कों को लेकर बैठ गया है और अनाथालय तथा पाठशाला के नाम पर चन्दा किया जा रहा है। कहने का अभिप्राय यह है कि आजकल लोगों ने इस प्रकार की संस्थाओ को भी अपना (Secret Trade) गुप्त व्यवसाय मान लिया है, और जनता जनार्दन का करोड़ों रुपया इन संस्थाओं के नाम पर एकत्रित करके भोग भोगने में दृढ़ संलग्न हैं। भारत में कुछ ही ऐसी संस्था हैं कि जिनके द्वारा जनता जगत का बहुत कुछ उपकार होता हुआ प्रत्यक्ष दिखाई देता है। किन्तु अधिक संख्या ऐसे लोगों की है कि जिनसे जनता जगत को कोई लाभ नहीं है, और वे लोग इन संस्थाओं के नाम पर लाखों करोड़ों रुपया दुनियां से वसूल करके संसारिक भोग भोगने में ही लगे हुये हैं। अतः जनता जगत को चाहिये कि वे सदा ऐसे लोगों से सावधान रहें और जिसको चन्दा देना हो उसको सोच समझ कर दिया करें।

पांचवाँ दान वसूल करने वाले भिक्षुक लोग हैं, जो रात दिन किसी न किसी बहाने से भीख मांगते ही रहते हैं। इनमें भी जो भिक्षा के अधिकारी हैं उनको तो पेट का गुजारा भी नहीं मिलता है, किन्तु जो अनधिकार चेष्टा करते हैं और जिन्होंने भीख मांगने को अपना व्यौपार बना रखा है, वे लोग कई प्रकार से भीख मांग २ कर हज़ारों रुपया दुनिया से वसूल करते हैं। इस प्रकार भिक्षुक समाज में भी जनता जगत का करोड़ों रुपया खर्च हो जाता है, और इससे लाभ कुछ नहीं, उल्टी संसार में बेकारी बढती है। अतः जनता जगत का कर्तव्य है कि इस भिक्षा वृति को जल्दी से जल्दी खत्म करे। होच यह प्रबन्ध राष्ट्र करे अथवा जनता। दोनों में से किसी एक को अवश्य करना चाहिये। इन भिक्षुकों में से कुछ ऐसे भिक्षुक जो अन्धे, लूले लँगडे तथा कुष्टि आदि हों उनको अलग छांटे जावें, और इनके निमित्त पूअर हाउसेज़

(poor houses) की कल्पना की जावे, जिसमें ये लोग रहते हुए सुख के साथ भोजन, वस्त्र तथा औषधि आदि प्राप्त कर सकें; और ये दुनियां में जगह २ मांगते हुए दिखाई न दे सकें। इसके अतिरिक्त जो भिक्षुक लोग चलने फिरने वाले तथा हृष्ट पुष्ट अथवा दुर्बल व खिन्न हैं और जगह २ भीख मांगना ही जीवन का लक्ष्य बना रखा है। उनको उनकी योग्यतानुसार किसी भी कार्य की सुव्यवस्था कर सबको कार्य में परिणित कर देवे। और भविष्य में मांगने वालों पर कठिन प्रतिबन्ध लगा दिया जावे ताकि संसार में यह भिक्षा वृत्ति सदैव के लिये नाश हो जावे, और राष्ट्र की वृद्धि होवे।

इस प्रकार भारतवर्ष में अनेकों प्रकार से दान लेने तथा देने की व्यवस्था है, और ईश्वर तथा धर्म के नाम की दुहाई देकर करोड़ों रुपयों का दान लेकर अपने २ भोगों में खर्च कर रहे हैं। अतः जनता जगत तथा राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह इस दान की सुव्यवस्था करे।



६. गङ्गा यमुना तथा तीर्थादि के नाम पर धोखा

आजकल हम देखते हैं, कि गंङ्गा यमुना के ठेकेदार किस प्रकार इनके नाम पर धोका देकर अपना टेक्स वसूल कर रहे हैं। इन टेक्स वसूल करने वालों को हमारे देश में पंडों की उपाधि दीगई है, इनमें से कोई गङ्गा का पंडा, कोई जमुना का पंडा, कोई सोरू का पंडा, कोई गया का पंडा, कोई बद्रीनाथ, द्वारका रामेश्वर तथा जगदीश का पंडा इत्यादि नामों से कितने ही प्रकार के पंडे बोले जाते हैं। इन पंडे लोगों का इन तीर्थ स्थानों पर तथा गंगा यमुना आदि नदियों के किनारे पर इतना जमघट तथा प्रभुत्व पाया जाता है कि मानों ये लोग उन तीर्थ तथा गंगादि नदियों के स्वामी हों अथवा स्वर्ग व नरकादि का ठेका मानों इन्होंने ही ले रखा हो। जो लोग इनको टैक्स

देकर संतुष्ट कर देवे वह चाहे कितना भी पापी हो, अवश्य पापों से छूटकर स्वर्ग का अधिकारी होजाता है, और जो आदमी इनको दान दक्षिणा देकर संतुष्ट नहीं करता वह चाहे कितना भी धर्मात्मा हो, अवश्य नरक का अधिकारी होजाता है; इस प्रकार दुनियां के भोले लोगों को फंसाने के लिये अपना सिद्धान्त बना रखा है। और कई प्रकार की ऊँची नीची बातें बनाकर जै यमुना मैया की तथा जै गंगा मैया की कहते हुए चिल्लाते रहते हैं। जहां कोई यजमान इनके पास पहुँचा कि उसको चारों ओर से आकर इस प्रकार घेर लेते हैं कि मानों मांस के एक छोटे टुकड़े को देखकर चीलें मंडरा रही हों। फिर उसे कई धर्म कान्डों का महत्त्व सुना कई प्रकार का अपना टैक्स वसूल कर लेते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि आज हमारे भारतवर्ष में गंगा तथा यमुना के नाम पर जितना टैक्स इन पंडों द्वारा वसूल किया जाता है, इतना संसार में शायद ही कोई महकमा हो जो इतना बड़ा टैक्स वसूल करता हो, मेरी समझ में तो कोई भी ऐसा महकमा न होगा। अब मैं आपको इनके टैक्सेज़ का साधारण रीति से अनुमान रूप से परिचय करा देता हूं कि जिससे आपको पता लग जायगा कि कितने करोड़ रूपया सालाना हमको गंगा यमुना के नाम पर इनको देकर संतुष्ट करना पड़ता है। सो सुनियेः—

प्रत्येक हिन्दू जो मरता है, उस मृतक की अस्थियां गंगा यमुना में प्रवाहित करने के लिये वहां पहुँचना पड़ता है, और वहाँपर इन पंडों का ठेका होता है, इनका टैक्स चुकाये बिना कोई भी व्यक्ति गंगा यमुना में मृतक की अस्थियों को प्रवाहित नहीं कर सकता। इस प्रकार भिन्न २ देशों के लोग मृतक की अस्थियों को लेकर वहाँ पहुँचते हैं और इनका टैक्स चुकाना पड़ता है, गरीब से गरीब जो होता है उसको भी कमसे कम गंगा यमुना के नाम पर दस बीस रूपया अवश्य खर्च करना पड़ता है फिर अमीरों के खर्च करने की तो बात ही क्या है। यह टैक्स तो इनका मृतक टैक्स है जो प्रत्येक हिन्दू को चुकाना पड़ता है। इसके अतिरिक्त गंगा यमुना में स्नान करने के निमित्त

भी पर्व तिथियों पर लाखों ही हिन्दू एकत्रित होते हैं, और उनसे भी ये लोग लाखों ही रुपयों का टैक्स वसूल करते हैं। इस प्रकार ये लोग प्रति वर्ष गंगा यमुना के नाम पर लाखों करोड़ों रुपयों का टैक्स दान के रूप में वसूल करके अपने शारिरिक भोगों में खर्च करते हैं, और सुल्फा, गांजा तथा भंग पीकर हर समय नशे में चूर रहते हैं।

अब सोचिये ! कि इनको इस प्रकार प्रति वर्ष दान देने से क्या लाभ है ? इससे न तो राष्ट्र का ही कुछ उपकार है, और न जनता जनार्दन ही की भलाई है। अब यदि यह कहो कि इनको दान देने से मृतक को स्वर्ग की प्राप्ति हो जायगी। यदि बात ठीक है तो फिर कर्मों की व्यवस्था भंग हो जावेगी। फिर तो चाहे कैसा भी पापी हो इनके दान देने से स्वर्ग को चला जावेगा। किन्तु प्यारे भाइयो ! याद रखो, ईश्वर के घर में कोई पोपो बाई का राज्य नहीं है जो इस प्रकार की रिश्वत (Bribe) आदि से काम चल जावे। यह जीव जैसा कर्म करता है वैसा फल अवश्य भोगना पड़ता है, और इस कर्म व्यवस्था से ही मनुष्य दुखी सुखी तथा स्वर्ग नरक का अधिकारी हो जाता है। यदि इन पंडों के कथनानुसार ही मृतक की अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है तो फिर शास्त्र ने ऐसा क्यों कहा है कि:—

"मनोवाक्काय शुद्धानं राजन् तीर्थे पद पदे,
तथा मलीन चित्तानाम् गङ्गापि कीकटाधिका।"

अर्थात् हे राजन् ! जिसका चित्त शुद्ध है उसके चरण २ में गंगा विराजमान है और जिसका चित्त अशुद्ध है उसके लिये गंगा भी नरक के समान है। अब आप समझ सकते हैं कि इन गंगा यमुना के ठेकेदारों का यह कहना कि गंगा में स्नान करने से अथवा मृतक की अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, तो यह साक्षात् जनता जगत को धोखा नहीं तो फिर क्या है ?

अतः उठो ! और जागो ! इन धोखा देने वालों से दूर भागो ! व्यर्थ इन को इस प्रकार का दान देकर अपने समय तथा द्रव्य की हानि क्यों कर रहे हो ? यदि दान ही देना हो तो शिक्षा मन्दिरों को दो, गुरुकुलों को दो ! अनाथ बालकों की पढ़ाई में दो ! स्वास्थ्य सुधार में दो ! कहने का अभिप्राय यह है कि जिस दान के देने में जनता जगत का उपकार होता हो, तथा जिसमें देश और राष्ट्र का हित हो वहां दान देना चाहिये। इसके अतिरिक्त जो मनुष्य दान लेते २ अघा गया हो तथा आवश्यकता से कहीं अधिक पूंजी उसके पास पहुँच गई हो, और उस पूंजी को उसने संसारिक भोगों में तथा दुर्व्यसनों में खर्च करना ही जीवन का लक्ष्य बना रखा हो, और फिर उसी मनुष्य को दान पर दान देते रहना यह भूल नहीं तो फिर क्या है ? इसलिये कर्तव्य है कि:—

दान दीन को दीजिये, हरे दीन की पीर।
औषध वाको दीजिये, जा के रोग शरीर॥

---

७. गौ माता के नाम पर धोखा

जिस प्रकार लोग गंगा यमुना तथा ईश्वर धर्म के नाम पर अपना पेट पालने के लिये धोखा दे रहे हैं, इसी प्रकार इन्होंने गौ माता के नाम पर भी पेट पालने के लिये धोखा देना शुरू कर रखा है। ये गौमाता के नाम पर कई प्रकार से धोखा देकर पेट पाल रहे हैं। किसी ने गौशाला बना कर दूकान खोल रखी है, और उसके नाम पर जगह २ एजेन्ट भेज कर चंदा वसूल करते हैं और अपना पेट पालते हैं। दूसरे लोग कहते हैं कि गौ का दान करने से वैतरणी नदी को पार करके स्वर्ग को चला जाता है। इस प्रकार मृत्यु समय में ये लोग गौ का दान कराया करते हैं। और इस हिसाब से सैकड़ों गायें दान स्वरूप में लेकर क्रय विक्रय

करते कराते रहते हैं। अब आपको इनकी सचाई पर ध्यान दिलाया जाता है। जब कोई आदमी किसी मृतक की अस्थियां लेकर गंगा यमुना में प्रवाहित करने को जाते हैं तब ये लोग उससे गौ का दान कराते हैं, उस समय साक्षात् गौ तो होती नहीं है ऐसी स्थिति में ये लोग उससे गौ की कीमत का दान कराते हैं, पहिले उससे १००) या ५०) रुपया दान का मांगते हैं, फिर यदि वह न दे तो ३०) या ४०) रुपया पर आजाते हैं, इस प्रकार कमी करते कराते यहां तक हो जाता है कि केवल १।) रुपये में ही गौ दान समाप्त हो जाता है। इस प्रकार के दान ये एक दो से ही नहीं कराते हैं किन्तु सैकड़ों से कराते रहते हैं। अब आप सोचिये! क्या कहीं १।) रुपये में भी गाय प्राप्त होती है? और जिस वैतरणी का भय दिखा कर ये लोग गौ दान कराते हैं तो फिर इन्हीं के कथनानुसार जब वह मृतक वैतरणी पार करेगा तो गौ की पूंछ पकड़ने के लिये उस मृतक को गौ कहां से लाकर देंगे, और फिर ऐसा १।) रुपये का दान गौ के नाम पर सैकड़ों व्यक्तियों से कराया गया है, उन सब के लिये भी गौ कहां से लाई जावेगी, और जब गौ ही नहीं होगी तो फिर वह मृतक किस की पूंछ पकड़ कर वैतरणी पार होगा? इससे सिद्ध होता है कि ये सब क्रियायें इनका धोखा देना नहीं तो फिर क्या है? इन्होंने तो अपने मन में ये ही सोच रखा है, कि यदि हम को १।) सवा २ रुपया देने वाली १०० या ५० शिकारें भी गौ के नाम पर मिल जावेंगी तो इसमें हमारा क्या नुकसान है, "कोई मरो अथवा जीवो" "स्वर्ग जावो अथवा नरक" इससे इनको क्या पड़ी, इनको तो केवल द्रव्य मिलना चाहिये, चाहे ईश्वर के नाम पर अथवा धर्म के नाम पर या गौ माता के नाम पर जिस किसी के नाम से भी इनका उल्लू सिद्ध हो जावे, वही इनका परम मंत्र है।

और इनको दान देने वाले भी कैसे भोले हैं कि जो केवल १।) सवा सवा रुपये में ही गौ की पूंछ पकड़ वैतरणी पार होना चाहते हैं, बच्चा भी ऐसी भुलावे की बातों में नहीं आता तो फिर क्या आप लोग बच्चे से भी

अधिक भोले बन गये कि जो इन की मिथ्या बातों को स्वीकार किये जा रहे हो। भाइयो सोचो अब तो इस भारत को गारत में मत मिलावो। भाइयो जब २ भी हमारे यहाँ पर सोशियल रिफार्म (Social reform) की बारी आती है, तब २ ये ईश्वर और धर्म के ठेकेदार घबरा जाते हैं, और अपने मन में समझ जाते हैं, कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देकर पेट पालना बन्द होजावे। अभी जब हमारी गवर्नमेन्ट ने कुछ थोड़ा सा सोशियल रिफार्म करने की इच्छा से हरिजन उद्धार करना चाहा तो ये सब पंडे पुजारी घबरा गये, और समझ गये कि कहीं गवर्नमेन्ट समाज सुधार द्वारा हमारा जो ईश्वर और धर्म के नाम पर पेट पाला जा रहा है, वह कहीं बन्द न हो जावे। देखिये मैं आपको इनकी करतूतों का थोड़ा सा परिचय करा देता हूं। १५ अगस्त को भारत स्वतन्त्र होता है और १६ अगस्त को ही लोगों ने आन्दोलन मचाना शुरू कर दिया कि हमारी गौ हत्या बन्द कर दो, और तब से अब तक यह गौ हत्या का आन्दोलन बन्द नहीं हुआ है। यह नाम तो गौ हत्या का है किन्तु इस में इनका गौ से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस में केवल इनका लक्ष्य सोशियल रिफार्म को बन्द करा देना है। क्यों कि इनका लक्ष्य तो केवल जनता जगत को धोखे में डाल, ईश्वर और धर्म के नाम पर कई प्रकार से अन्ध विश्वास करा अपना स्वार्थ सिद्ध करना है। अब देखिये गौ हत्या के विषय में आपको थोड़ा सा प्रकाश डालता हूं।

क्या गौहत्या बन्द होना गवर्नमेन्ट के आर्डर पर डिपेन्ड करती है? मेरी समझ में तो यह गौहत्या गोवर्नमेन्ट के आर्डर से कभी भी बन्द नहीं होसकती। क्योंकि मैं प्रत्यक्ष में देख रहा हूँ कि गवर्नमेन्ट ने कई एक स्ट्रिक्ट आर्डर ईशू कर रखे हैं कि कोई मनुष्य रिश्वत (Bribe) घूंस मतलो, किन्तु आज देखिये! प्रत्यक्ष में लोग कितना रिश्वत और घूंस ले रहे हैं। जबतक हमारे मनीराम की भावना में सेल्फ गवर्नमेन्ट (Self Government) की भावना न होजावे तबतक जनता जगत में रिश्वत बन्द नहीं होसकती।

इसी प्रकार जबतक हमारी भावना में गौ को माता न समझलें, तबतक गौ हत्या बन्द नहीं हो सकती। हम लोग 'गौमाता' 'गौमाता' करके चिल्लाते रहते हैं किन्तु गौ को वास्तिकता में माता कोई नहीं समझता। हमतो केवल पेट पालने के लिये गौमाता का नाम लेते हैं किन्तु गौमाता से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। गौ को माता समझने का चाव लेना हो तो भगवान श्री कृष्णजी की शिक्षा से ग्रहण करो।

भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं गो को चराकर तथा उनकी सेवा करके किस प्रकार गौ को सुपाश दिया था तथा किस प्रकार उनको दुधारू बनाया था यह बात सबों पर भली भांति प्रकट है। किन्तु भगवान श्री कृष्ण को भी लोगों ने कलंकित करदिया। और उनको चोरचार बनादिया। किन्तु भगवान श्री कृष्ण की चोरी किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं होती। भगवा न ने तो एक प्रकार से ग के लिये सत्यग्रह करके शिक्षा दी थी। जो गुजरियाँ घी दूध वेचने को बाजार में जाया करती थी, अथवा जिनकी चाट में घी, दूध तथा दधि का वेचना समा गया था। उनके सामने भगवान श्री कृष्ण अपने गुवाल वालों को साथ लेकर सत्यग्रह क रने को खड़े होजाया करते थे और उनको समझाया करते थे, कि यह घी दूध वेचने की चीज नहीं है खाने की चीज है। यदि तुम्हारी मनोवृत्तियों में इसके वेचने की चाट लग जावेगी तो तुम्हारी जाति (Nation) (week) होजावेगी तुम स्वयं कमजोर होजावोगी, और तुम्हारी संतति भी कमजोर होजावेगी इस लिये वेचो मत किन्तु खावो। यह भगवान श्री कृष्ण का आदेश था। जो लोग भगवान श्री कृष्ण के इस आदेश को नहीं मानते; तो भगवान श्री कृष्ण उनकी मथनियों को तोड़ देते थे और माखन को लुटादिया करते थे और कहते थे कि खावो ! तब यहां की संतान गौओं का माखन तथा दूध सेवन करने के कारण भीम पैदा होती थी।

आज जो लोग विदेशियों को गौ भक्षक समझते हैं, उनको जानना चाहिये कि वे लोग पूरे गौ रक्षक हैं। उन्होंने गौओं को इतना सुपाश दिया है इतनी दुधारू बनाया है कि जिसकी कोई हद नहीं है। आप लोग जोवें,

स्वीडन, हौलेन्ड, पौलन्ड तथा स्काटलैन्ड में जाकर वहां की गौशाला (Dairy Farm) को देखिये ! तो आपको आश्चर्य होगा कि वहां की एक २ गाय एक २ टेम में तीस २ तथा पैंतीस २ सेर दूध देती है, अर्थात् मन २ तथा डेढ़ २ मन दूध एक २ दिन में देती हैं। उनके बांधने की जगह बड़ी सुन्दर छांयादार बनाई जाती है, पीछे को उसमें नाली रहती है, गौमाता जो कुछ गोबर तथा मूत्र करती है वह जहां भी गौ के पास तथा गौ के अंग में नहीं लग सकता, वह नाली में चला जाता है और नाली पांच २ मिनिट में फ्लिड सिस्टम (Flood system) के द्वारा साफ होती रहती हैं। सामने गौ माता को पीने के लिये तथा चारे के लिये दो पात्र होते हैं, एक में शुद्ध चारा भरा रहता है, और दूसरे में गौ माता के लिये पानी पिलाया जाता है। जब गौ को पानी की आवश्यकता होती है तो पाईपींग सिस्टम (Piping system) के द्वारा नल खोल दिया जाता है, और जब वह पानी पी लेती है तब बरतन को साफ करके नल बन्द कर दिया जाता है प्रत्येक डेरी फार्म में गायों को चरने के लिये (grazing ground) चारागाह होता है और उसमें हर समय कोई न कोई हरियाली लगी रहती है, जिसमें स्वच्छन्द होकर गायें चारा चरा करती हैं, जब वे पेट भर कर वापिस लौटती हैं तब इनको चारा पाचन के लिये मेडीशन्स खिलाई जाती हैं, यहां मनुष्यों को रोगों के लिये मेडीशन नहीं मिलती, वहां पर गायों को चारा पाचन के लिये साल्ट (salt) या सोडा बाइ कार्ब (Soda bi-carb) खिलाया जाता है। इतना सुपास देने पर गायें बीस २, तीस २ तथा ३५ पैंतीस २ सेर दूध देती हैं।

आजकल जो लोग 'गौमाता गौमाता' कहकर चिल्लाते रहते हैं किन्तु सेवा कोई नहीं करता, ये लोग इसको पेट भरकर चारा भी तो नहीं देते, गौमाता बिचारी तृण के अभाव में सवेरे देखिये, विष्टा खाकर पेट पालती है, इसको ये लोग शुद्ध पानी भी तो पीने को नहीं देते; जो पानी लोगों को स्नान करने के पीछे कुवे के पास डोबरियों में भर जाता है, और जिसमें कीड़े पड़-

जाते हैं, उस पानी को पीकर ये गौमाता अपनी प्यास को शान्त करती हैं। इतना गौओं के साथ निर्दयता करने पर भी ये लोग गौमाता गौमाता कहकर चिल्लाते हैं। तो इनका यह गौमाता कहना लोगों को धोखा देना नहीं तो फिर क्या है? गौ के सेवक कहलाने वाले लोगों से क्या कभी गाय के साथ इतना निर्दयता का व्यवहार किया जा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है, कि आजकल लोग अपने स्वार्थ के लिये तथा गोमाता के नाम पर धोखा देने के लिये अपना षड्यन्त्र चालू करते हैं। वास्तविक में यदि देखा जाय तो ये सब लोग गौमाता के कट्टर शत्रु हैं, जो केवल इसका दूध पीना ही जानते हैं किन्तु इसकी सेवा करना कोई नहीं चाहते।

अतः जो मनुष्य भगवान श्री कृष्ण के आदेनुसार गौ को सुपास देते हैं और गौ को दुधारू बनाते हैं तो वेही गौओं को मरने से बचा सकते हैं। एक गाय जो नित्य ३० सेर या डेढ़ मन दूध देती है, उसकी कीमत आज दो तीन हजार रुपये हो सकते हैं। अब सोचिये! कि ऐसे मूल्यवान पशु को किसकी सामर्थ्य है कि जो हत्याग्रह में भेजे? अथवा मारे? अतः केवल गोमाता गोमाता कहकर चिल्लाना ठीक नहीं है, किन्तु प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है कि वह अपने घरों में गौओं का पालना आरम्भ करें, और उनको शुद्ध चारा तथा शुद्ध पानी तथा नमक आदि का देना कभी नहीं भूले, अर्थात् उनको पूर्ण सुपाश देकर दुधारू बनावें। इस प्रकार आप यदि गौओं को सुपास देते हुए उनको दुधारू बना भगवान श्री कृष्ण के आदेशानुसार स्वयं दूध पान करोगे और अपनी संतानों को कराओगे तो इस उपाय से गोहत्या अवश्य बन्द हो सकती है, और वैसे आप गोमाता गोमाता कहते हुए चाहे वर्षों चिल्लाया करो, तो इस चिल्लाने मात्र से गौहत्या कभी भी बन्द नहीं होसकती। यह अटल सिद्धान्त है। गौ भक्तों को चाहिये कि आलस्य तथा प्रमाद को त्याग कर गौ सेवा में दृढ़ संलग्न रहें। यह मेरी हार्दिक भावना है।



८. देवी देवता के नाम पर धोखा

कोई कहता है कि मुझको देवी सिद्ध है, कोई कहता है कि मुझको भैरव सिद्ध है, इसी प्रकार कोई कहता है कि मुझको हनुमानजी सिद्ध हैं। और साथ ही साथ मनुष्यों को उनके संसार सम्बन्धी कार्यों को सिद्ध कराने का दावा भी किया करते हैं। कोई स्त्री देता है, कोई भूत निकालता है, कोई धन दौलत देता है है, कोई पुत्र की प्राप्ति कराता है, कोई रोगों को ठीक करने का दावा करता है। इस प्रकार अनेको संसार सम्बन्धी कार्यों की प्राप्ति कराने के लिये लोगों को धोखे में डाल अपने अर्थ की सिद्धि किया करते हैं, और हमारे देश के कितने ही भोले भाले स्त्री पुरूष इनके कपट रूपी वचनों में फंसकर अपने समय और द्रव्य की हानि करते दिखाई देरहे हैं। ये भोले भाले मनुष्य इस बात पर ध्यान नहीं देते कि क्या इनके पास स्त्री, पुत्र तथा धन दौलत का खजाना रखा है कि जिसमें से ये लोग इन पदार्थों को निकाल कर लोगों को पकडा देवें? और यदि इस बात को सच भी मान लिया जाय, और यह भी मान लिया जाय कि इनके पास में देवताओं की सिद्धि के कारण स्त्री, पुत्र तथा धन दौलत का अखण्ड खजाना है कि जिसमें से दुनिया को निकाल २ कर देते रहते हैं। यदि इनके पास ऐसी ही सिद्धि है तो फिर ये लोग दुनियां से थोडे २ पैसे लेने की इच्छा क्यों करते हैं! इन बहुत से सिद्धों के भी स्त्री पुत्र नहीं होते हैं तो फिर ये लोग अपने खजाने में से अपने लिये स्त्री पुत्र तथा धन दौलत क्यों नहीं निकालते? जब ये लोग अपने लिये ही इनको प्राप्त नहीं कर सकते, तो फिर दूसरों को प्राप्त कराना यह साक्षात् धोखा देना नहीं तो फिर क्या है?

प्यारे भोले भाले भाइयों! क्या आपने किसी चक्रवर्ती नरेश को भी थोडे २ पैसे के लिये कहीं हाथ फैलाते अथवा मांगते देखा है? तो कहना पड़ेगा कि कहीं भी नहीं। किन्तु ये बेचारे सिद्ध बनने वाले तो इसी आशा में ताक लगाये बैठे रहते हैं, कि कब कोई भोली भाली शिकार आवे और

हमारे पेट का काम चले। और फिर ऐसे मनुष्यों से जो लोग धन दौलत तथा स्त्री पुत्रादि की इच्छा रखते हैं तो यह साक्षात् मूर्खता नहीं तो फिर क्या है? कहने का अभिप्राय है कि संसार में जैसे ईश्वर और धर्म के नाम पर लोग धोखा देकर अपना पेट पाल रहे हैं, इसी प्रकार ये देवी और देवताओं के पुजारी भी इन देवी और देवताओं के नामपर धोखा देकर अपना पेट पाल रहे हैं। और दुनियां के भोले जीवों को बहका कर अपनी स्वार्थ सिद्धि में संलग्न होरहे हैं। क्या आप शास्त्र के वचनों को भूल गये हो? देखो! शास्त्र तो यह कहता है कि :— पुरुषार्थं सिंह मुपैति लक्ष्मीम् ॥ अर्थात् पुरुषार्थ करने से कर्मवीर मनुष्य को लक्ष्मी प्राप्त होती है। देखिये योग शास्त्र के आचार्य श्री पतञ्जलि भी ऐसा ही अपने सूत्रयोग दर्शन में कहते हैं कि:—अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वं रत्नो पस्थानम्।' अर्थात् चोरी का त्याग करके सच्चा कर्मवीर पुरुष को सर्व रत्न आकर प्राप्त होते हैं। फिर गोस्वामी जी ने भी ऐसा ही रामायण में कहा है कि:—"सकल पदारथ हैं जगमाहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं"। अर्थात् संसार में सारे पदार्थ (स्त्री, पुत्र, धनादिक) वर्तमान हैं, किन्तु कर्म-हीन पुरुष को नहीं प्राप्त होते हैं, केवल कर्मवीर पुरुष ही इन पदार्थों को प्राप्त कर सकते हैं। अब आप विचार कर सकते हैं कि शास्त्र आपको डंके की चोट से बतला रहा है कि यदि आपको उपरोक्त पदार्थों की इच्छा है, तो इनकी प्राप्ति के लिये कर्मवीर बनो। किन्तु आप शास्त्र के इन वचनों पर ध्यान न देकर इन देवी देवताओं के नाम पर धोखा देने वालों को हाथ जोड कर इनसे अपने इच्छित पदार्थों की इच्छा कर-रहे हो। तो यह आपका अज्ञान और भोलापन नहीं तो और क्या कहा जावेगा। प्यारे भोले भाइयो! याद रखो! ये धोखा देनेवाले आपको जबतक ही धोखा दे सकते हैं कि जबतक आप इनके पुजारी बने हुए हो, और जब लोग सच्चे ईश्वर और सच्चे धर्म को समझने लग जावेंगे तब अपने आपही इन धोखा देकर पेट पालने वालों की उपासना नष्ट होजावेगी, दूसरी बात यह है कि इन लोगों का धोखा तब ही तक चल सकता है कि जबतक आप अपने अर्थ की सिद्धि इन लोगों के साथ में लगाये हुए हो। और जब आप अपनी अर्थ सिद्धि को ईश्वर और कर्म के साथ जोड़ देंगे

तो इनका यह धोखा स्वतः ही नाश होजावेगा।

हमारे भारत में ईश्वर तथा धर्म के नाम पर धोखा क्यों चला? सो सुनिये! हम लोग कहने को तो ईश्वर तथा देवी देवताओं की उपासना करने वाले हैं, किन्तु सचमुच यदि पूछा जाय तो हम लोग ईश्वर तथा धर्म की उपासना करने वाले कोई भी नहीं हम तो केवल उपासना करने वाले हैं तो इन ईश्वर और धर्म का ठेका लेने वाले पंडे और पुजारियों की। ईश्वर का तो केवल एक नाम रह गया है। देखिये मैं आपको इसका प्रत्यक्षीकरण करके दिखाता हूं। एक स्त्री जब कभी मन्दिरों में अकेली ईश्वर दर्शनार्थ पहुँचती है, तो अपने साथ में श्रद्धानुसार मेवा मिठाई भी लेकर जाती है और वह वहां पहुँच कर प्रथम पुजारी जी को नमस्कार करके ठाकुर जी को नमस्कार करती है। और जो कुछ फल फूल मेवा मिष्ठान्न तथा रुपया पैसा ले गई थी, उसको पुजारी जी के सामने रख देती हैं, पुजारीजी उसको नाम मात्र के लिये ठाकुर जी को दिखा कर झट अपने कब्जे में कर लेता है, फिर वह भोली स्त्री क्या करती है सो सुनियेः—ठाकुर जी के साथ तो उसका सम्बन्ध केवल हाथ जोड़ने तक ही समाप्त हो जाता है। इसके बाद वह पुजारी जी के मुख पर पंखा झलती है, उसके चरण दाबती है, खूब बढ़िया माल खिलाती है। जो पति देव अपना साक्षात् ईश्वर है और स्त्री की सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाला है, उसकी सेवा में इसका मन नहीं लगता, किन्तु पुजारी जी की सेवा में यह अपना तन, मन धन सब न्यौछावर कर डालती है, उससे अपनी सारी मनोकामनाओं की पूर्ति कराती है। अब आप विचार करिये कि यह सेवा ईश्वर की हुई कि पुजारी जी की। ईश्वर की ओर तो न पुजारी का ही भाव है और न ईश्वर के मानने वालों का। सम्बन्ध है तो केवल पुजारी से, गति मुक्ति चाहना है तो पुजारी से, माल ताल खिलाने अथवा रुपया पैसा देने का सम्बन्ध है तो पुजारी से। कहने का अभिप्राय यह है कि मन्दिर में जो ठाकुरजी विराजमान हैं वे तो केवल लोगों ने एक निमित्त मात्र धोखा देने के लिये और इनके सहारे संसार के नाना भोग भोगने के लिये एक मात्र षडयन्त्र रच रखा है। अब आप

सोचिये ! मन्दिर में जो कुछ सुपाश तथा अनुकूलता है वह पुजारी के लिये और पूजन तथा सत्कार जो कुछ है सो पुजारी के लिये, अब ईश्वर के नाम पर क्या शेष रह जाता है, केवल धोखा तथा ईश्वर का अपमान। अब भला बतलाइये ! क्या ईश्वर अपने अपमान को तथा इस धोखे को सहन कर सकता है ? तो कहना पड़ेगा कि कदापि नहीं, ईश्वर ऐसे अन्यार्य करने वालों को अवश्य फल देंगे। क्योंकि:—"Good actions done with a bad motive, produce bad result." अर्थात् अच्छे कर्म यदि बुरी भावना से किये जावें तो उनका फल भी बुरा ही होगा। मन्दिर बना कर ईश्वर की पूजा में दोष नहीं है, किन्तु मन्दिर बना कर ईश्वर के नाम पर धोखा देकर संसारिक भोग भोगने में बड़ा अपराध है, और ईश्वर ऐसे अपराधियों को याद रक्खेगा और इनको उचित दंड देगा।

अब यदि यह कहा जावे कि स्त्रियों को पुजारियों के चरण दबाने, उनकी कई प्रकार की सेवा करने तथा माल खिलाने में क्या हानि है ? तो सुनिये:—इस सेवा के भाव से पुजारियों में संसर्ग दोष उत्पन्न हो जायगा, अधिक माल खाने से तथा भोगों के अधिक भोगने से और स्त्रियों के एकान्तिक सहवास से काम वासना उत्पन्न हो जायगी, काम से क्रोध और क्रोध से बुद्धि का नाश हो जायगा जब बुद्धि का ही नाश हो गया तब उस मनुष्य में बाकी क्या रहा ? अर्थात् उसका भी नाश ही समझना चाहिये। इसीलिये तो शास्त्र ने ऐसा कहा है कि:—"मात्रा स्वस्रा, दुहित्रा वा नः विविक्तासनो भवेत्। बलवानिन्द्रियो ग्रामो विद्वान्समपकर्षति॥ अर्थात् अपनी माता, बहिन, तथा लड़की के साथ में भी एकान्त में बैठ कर बात चीत नहीं करनी चाहिये, क्योंकि इन्द्रियों का वेग बड़ा बलवान होता है, वह विद्वानों के चित्त को भी डुला देता है। अब जरा सोचिये ! कि जब स्मृतियों ने इस कार्य की निन्दा की है, और फिर भी ये पुजारी लोग रात दिन स्त्रियों के सहवास में लगे रहते हैं, तो फिर इससे अधिक अनर्थ का कार्य क्या हो सकता है ? यही कारण है कि आज बड़े २ मन्दिरों तक में व्यभिचार फैला हुआ दीख

पड़ता है। अतः मन्दिर प्रेमियों को चाहिये कि वे ईश्वर के नाम पर मन्दिर में कोई भी वैषयिक पदार्थ तथा भोगों की सामग्री उपस्थित न करें।

बहुत सी भोली भाली स्त्रियां तथा पंडे पुजारियों के भक्त कहा करते हैं कि हमारे जो संतान पैदा हुई है वह अमुक पुजारी जी अथवा अमुक बाला जी की कृपा का फल है। तो भोले भाइयो! मैं पहिले ही आपको लिख कर बता आया हूं कि पुजारियों के पास में क्या पुत्रों का खजाना भरा है कि जिसमें से तुम को पुत्र दे देंगे, ये जो कुछ भी तुम को संतानादिक मिली हैं वह सब तुम्हारे कर्मों के फल हैं, पुजारी लोग तो तुम को देवता के नाम पर धोखा देकर अपना पेट पालना ही जानते हैं। देखिये मैं इनकी करतूतों का तुमको कुछ और परिचय करा देता हूं। पाठक विचार कर सत्यासत्य निर्णय करें। मानलो पचास स्त्रियां संतान प्राप्ति की इच्छा से इन देवी देवताओ के पुजारियों की सेवा में उपस्थित हुईं, पुजारियों ने भी इनसे न्यारी २ दक्षिणा धरा किसी को डोरा गंडा (तावीज) देकर तो किसी को विभूति (राख) देकर बहका दिया और "पुत्रवती भवः", 'पुत्रवती भवः' ऐसा शुभ आशीर्वाद देकर विदा कर दिया। अब ये पचास स्त्रियां जो पुजारी के आशीर्वाद को लेकर घर पर आईं क्या ये सब की सब स्त्रियां बांझ थोड़ी ही रह जावेंगी, इनमें से दस बीस को तो प्रकृति के नियमानुसार संतति अवश्य ही होगी अब ये स्त्रियां इस बात का कभी भी विचार न करेंगी, कि हम पचास में से दस बीस को ही संतति योग क्यों हुआ? और दूसरी इतनी गई थी उनको क्यो नहीं हुआ? ये तो यों ही कहेंगी, और परस्पर में जब एक दूसरी से मिलेंगी तब प्रचार भी ऐसा ही करेंगी। कि भाई! हम तो अमुक देवता के पास गई थी और पुजारी जी ने हमको १।) रुपया का एक गंडा तावीज बना दिया, और उस तावीज ही का यह फल है कि हमको संतान पैदा होगई। इस बात को सुन कर उसी के समान भोली भाली पांच पचास स्त्रियां फिर संतान कामना को लेकर उसी पुजारी जी की सेवा में उपस्थित हो जावेंगी। और पुजारी जी फिर उनसे सवा २ रुपया धरा लेंगे, और गंडा तावीज देकर फिर

बहका देंगे। इस प्रकार दो चार दफा जहां स्त्रियों का इस प्रकार आना जाना शुरू हुआ कि पुजारी जी सिद्ध हुए। और थोड़े ही दिनों में पुजारी के विषय में स्पष्ट घोषणा हो जावेगी कि अमुक देवता के पुजारी के पास जाने से अवश्य संतति योग सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार रोगियों के विषय में भी कल्पना कर ली जाती है। जहां १०० या पचास रोगी किसी के पास पहुंचे, और उसमें कर्मानुसार दो चार अच्छे होगये तो उसके विषय में यह बात प्रमाणित हो जाती है, कि अमुक जगह जाने से सब रोग ठीक हो जाते हैं।

प्यारे पाठको! यह सब क्या है? तो कहना पड़ेगा कि सिद्ध साधक वाली कहावत चरितार्थ की जा रही है, और दुनियां भेड़ चाल की तरह इनके कपट युक्त वचनों से मोहित हो अविद्या रूपी कूवे में प्रवेश कर रही है। यह भोली दुनियां इस बात को नहीं जानती कि यदि इन पुजारियों के पास में जाने से ही आरोग्यता लाभ हो जाती, तो फिर ये बड़े २ शफाखाना जिनमें करोड़ों रुपया गवर्नमेन्ट के खर्च हो रहे हैं, इनके बनाने की क्या आवश्यकता थी? रोगियों को इन देवी देवताओं के पुजारियों के पास में भेज देते और ये सब नीरोग हो जाते। इस प्रकार संतानों के लिये भी करते, फिर तो कोई भी मनुष्य संतान रहित नहं होता, अर्थात् सब के संतान हो जाती। किन्तु हम तो देख रहे हैं, कि आज हजारों ही आदमी ऐसे होंगे, कि जिनको कोई संतान नहीं है, यदि ये लोग संतान देने वाले ही सिद्ध हैं तो फिर सब को संतान क्यों नहीं दे देते हैं। और हमने तो इस प्रकार से सिद्ध बनने वाले कई पंडे पुजारियों के स्वयं ही संतान नहीं देखी, फिर ये लोग अपने लिये ही संतान क्यों नहीं पैदा कर लेते? कहने का अभिप्राय यह है कि ये सब बातें इन लोगों की भोले भाले स्त्री पुरुषों को धोखे में डाल अपना अर्थ सिद्ध करना है। अतः जनता जगत का कर्तव्य है कि वे सदा ऐसे देवी देवता के नाम पर धोखा देकर पेट पालने वाले पंडे पुजारियों से सदा दूर रहें। क्यों कि इनको पालने से धन और धर्म दोनों का नाश होता है।



करोड़ों रुपया सरकार का खर्च हो रहा है, और इतने मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये हैं, इनके नियुक्त करने की तथा पुलिस के रखने की क्या आवश्यकता थी ? दो चार स्याने भोपों की नियुक्ति कर देते, और फिर जब कभी चोरी होती तो इनसे पूछ कर चोरी का पता लगा लिया करते। प्यारे भइयों ये सब लोगों ने द्रव्य हरण करने के कई षडयन्त्र बना रखे हैं और इनके द्वारा लोगों को धोखा दे रहे हैं।

जिस प्रकार ये स्याने भोपे देश को धोखा देरहे हैं, इसी प्रकार एक पार्टी और है, जो मारण मोहन मंत्र का प्रचार करने में दृढ़ संलग्न हैं। ये लोग जिसको जी चाहे वश में करलें और जिसको जी चाहे मार डालें। इस विद्या को ये लोग मूठ विद्या के नाम से पुकारते हैं। अब इनकी मूठ विद्या के विषय में सुनियेः— मैं एक गांव में भ्रमण करता हुआ जा पहुंचा, वहां पर एक मूठ विद्या का प्रचार करने वाला सिद्ध भी ठहरा हुआ था, और वहां के दो चार युवकों को अपना चेला बना उनसे आठ २ रुपया फीस का लेकर मूठ विद्या सिखा रहा था। मैं उस गांव में जब पहुंचा तो मुझसे लोगों ने पूछा कि स्वामी जी आप मूठ विद्या को स्वीकार करते हो ? मैंने कहा कि कैसी मूठ विद्या ? उन्होंने कहा कि यहां पर एक मूठ विद्या का जानने वाला ठहरा हुआ, है वह कहता है कि मूठ विद्या के बल से जिस किसी पर भी उड़द फैंके जांय, वह आदमी कहीं भी हो फौरन मर जाता है। मैंने इस बात को सुनकर उनको कहा कि भाई यदि यही बात सच है तो उस सिद्ध से कहो कि मेरे ऊपर उड़द का प्रयोग करके बतलावे उन्होंने जब उससे यह बात कही तब उसने कहा कि वे महात्मा हैं, उनपर प्रयोग करने से कोई फायदा नहीं है, और ये विद्या क्या दिखाने की है। ऐसी २ बातें कह कर पीछा छुड़ा लिया अब इस मूठ विद्या की सचाई पर ध्यान दो। भाइयो, यदि इस विद्या के जानने वाले यहां पर होते और यह विद्या यदि सच्ची होती, तो गवर्नमेन्ट को यहां पर इतनी मिलीटरी रखने की क्या आवश्यकता थी ? और व्यर्थ अरबों रुपया खरच करने की भी क्या आवश्यकता थी। ये मूठ विद्या के जानने वाले दस

पांच आदमियों को दशों ओर भारत में बैठा देते, और जब शत्रु भारत पर अटेक करता तो ये मूठ विद्या के जानने वाले अपने उड़द को फैंक कर सारी शत्रु सेना का संहार कर देते। अभी कुछ दिन हुए पाकिस्तान में कितनी खून की नदी बहाई गई थी, तब ये मूठ विद्या के जानने वाले यदि यहां से उड़द फैंक कर उनको मारते तो पता लगता, किन्तु पता नहीं, ये मूठ विद्या के जानते चुप क्यों रहे ? तो प्यारे पाठको ? इन बातों में क्या रखा है ? आज कल हमारे भारत में सब बातों में धोखा देना शुरू कर रखा है, और इसी लिये हमारे देश का पतन होरहा है, भगवान कब ऐसा दिन करेंगे कि जब भारत से यह धोखा नाश होगा।

१०. धर्म सिद्धान्तों को समझने में धोखा

हमारे देश में अभी तक कुछ ऐसी बातें प्रचलित हैं कि जिससे शास्त्र मर्य्यादा का उल्लंघन होकर अर्थ का अनर्थ हो रहा है, अर्थात् उन बातों को समझना तो किसी दूसरे रूप में था और अब हम उनका अर्थ किसी दूसरे रूप में कर रहे हैं। कहने का अभिप्राय यह है, कि हमको बहुत सी शास्त्रोक्त बातों के समझने तथा समझाने में भी धोखा दिया गया है। अब मैं पाठकों के समक्ष में उन बातों को रखता हूं कि जिनके विषय में हमको रात दिन शङ्कायें बनी रहती हैं और फिर भी हम उनका समाधान नहीं कर सकते। मैंने इन बातों को जैसा समझा है वैसा ही पाठकों को बोध करा रहा हूं; यदि इन बातों को किसी दूसरे विद्वानों ने किसी अन्य रूप में समझा हो, तो वे मुझको इनका अन्य रूप समझाने की कृपा करें क्योंकि परस्पर समझने तथा समझाने से वस्तुओं का मूल कारण समझ में आ जाता है। अब जिन सिद्धान्तों को हमको समझना तथा समझाना है उनका विवरण निम्नलिखित प्रकार से शङ्का समाधान के रूप में लिखा जाता है।



११. हनुमान जी वानर थे अथवा मनुष्य ?

हनुमान जी को सब लोग जितेन्द्रिय, ब्रह्मचारी, शूरवीर तथा देवता करके आज तक मानते चले आ रहे हैं, किन्तु अभी तक लोगों ने उनके शरीर के पीछे वानरों की जैसी पूंछ लगा रखी है, और वह पूंछ अभी तक लोगों ने नहीं हटाई। इससे विदित होता है कि लोग हनुमानजी को देवता, ब्रह्मचारी, तथा जितेन्द्रिय मानते हुए भी उनमें अभी तक भावना बन्दर की ही बनी हुई है। तुलसीदासजी ने भी हनुमानजी की उपमा कपि शब्द करके ही दिया है और कपि करके ही सर्वत्र संबोधन किया है। बाल्मीकि जी ने भी हनुमान जी को कपीश कह कर पुकारा है। इससे विदित होता है कि हनुमान जी सब के लिये अभी तक मानों वानर ही बने हैं। अब इसके विषय में मीमांसा की जाती है, सो सुनियेः— हनुमानजी को यदि लोग वानर मानते हैं तो हनुमानजी तो लगभग त्रेतायुग में हुए थे कि जिनको सनातन धर्म के सिद्धान्त अनुसार कई लाख वर्ष होगये, और उस समय से अब तक अनन्त कोटि वानर उत्पन्न होते चले आ रहे हैं, किन्तु इन वानरों में से तो आज तक कोई भी हनुमान जी प्रगट नहीं हुआ, यदि हनुमान जी बन्दर होते तो आज तक कोई तो वानर हनुमान जी जैसा प्रगट होता, अथवा हनुमान जी जैसा न सही कुछ हनुमान जी से थोड़ा बहुत कम भी रहता, तो भी हृदय को कुछ संतोष हो जाता। इससे विदित होता है कि हनुमान जी वानर नहीं थे। अब यदि यह कहो कि हनुमानजी देवता थे, तो फिर इनके पीछे पूंछ कैसे लगी ? सो सुनियेः— रामायण में लिखा है कि जब हनुमान जी लङ्का पहुँचे तो वहां पर लङ्का जलाने के लिये एक कृत्रिम पूंछ का विस्तार किया था, और वह कृत्रिम पूंछ अभी तक लोगों के हृदय में बनी हुई है और हनुमान जी के पीछे से नहीं हटी। अब यदि यह शङ्का हो कि हनुमान जी को शास्त्रों में वानर करके पुकारा है, और वानर नाम बन्दर का होता है तो फिर उनको मनुष्य कैसे समझा जावे। तो अब इसके विषय में सुनियेः—

हनुमान जी वानर नहीं थे किन्तु उनकी सेना का नाम ही वानर सेना तथा भालू सेना था, वानर और भालू से यह नहीं समझना चाहिये कि वह बन्दर और रीछों की सेना थी, किन्तु ये दोनों नाम उनकी इन्फेन्ट्रीयों के थे; और उनमें हनुमान, सुग्रीव, नल, नील तथा जाम्बन्त आदि हाईयर कमान्डर-इन-चीफ (Higher Commander in chief) थे। जैसा कि आजकल इन्फेन्ट्रीयों के कई एक नाम होते हैं, जैसे मान इन्फैन्ट्री, फर्स्ट इन्फैन्ट्री तथा सेकिन्ड इन्फैन्ट्री इत्यादि। इसी प्रकार उनकी इन्फेन्ट्रियों के नाम भी वानर ट्रूप तथा भालू ट्रूप के नाम से पुकारी जाती थी। किन्तु शोक है कि बीच में ऐसी अविद्या (Dark) फैली कि जिसके कारण देवताओं को वानर तथा रींछ कह कर पुकारने लगे, और आज तक उनको रींछ वानर ही समझ रहे हैं। प्राचीन समय में कहीं २ तो वानर तथा भालू नाम की इन्फेन्ट्रियां थी और कहीं २ उनकी सेनाओं में कपि के चिन्ह की ध्वजायें (flags) लगी रहती थी, जैसा कि अर्जुन के रथ पर कपिध्वज लगा हुआ था।

प्यारे सज्जनो! कहां तक कहें समय की बलिहारी है कि जिसके प्रताप से देवताओं को भी वानर तथा रींछ बनना पड़ा। और मनुष्यों की शादी विवाह नागों की लड़कियों के साथ करा दी गयी। नाग शब्द से बहुत से लोग सर्प का भाव कराया करते हैं, किन्तु प्यारे भाइयो! कहीं सर्पों के साथ में भी मनुष्यों की शादी हो सकती है। पूर्व समय में नाग वंशज मनुष्य हुआ करते थे। हमारे भारत में जो नागपुर शहर दीख पड़ता है, वह पूर्व में नाग वंशज राजाओं का केन्द्र होने के कारण ही नागपुर पड़ा है। आजकल हमारे ब्राह्मणों के कई एक वंशजों के साथ भी नाग शब्द लगा हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि यह नाग शब्द सर्प वाचक नहीं है किन्तु मनुष्यों के वंशजों का एक पद (title) है। पर अविद्या ने ऐसा जाल फैलाया कि उन पूर्व नाग वंशज मनुष्यों को सर्प बना दिया। और यही हाल हनुमानजी के साथ में किया गया कि उनको देवता से बन्दर बना दिया।

प्यारे सज्जनो ! यह अविद्या बड़ी दुखदाई है, जिस देश और जाति में यह घुसी कि बस उसको नाश ही कर डालती है। यह सदा सीधी को उलटी बनाती रहती है। यह बड़ी कुठाराघातिनि है कि जो सत्य सिद्धान्त और सत्य धर्म का नाश कर रही है। और इसके ठेकेदार अपने स्वार्थ के लोभ से मीठी २ बातें बना अपने वाक् जाल रूपी जल से सींच २ कर इसको और भी सुदृढ़ कर रहे हैं। क्योंकि ये धर्म और ईश्वर के ठेकेदार इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि यदि यह अविद्या देवी हमारे देश से विदा हो जायगी, तो फिर हमारा हलवा पूरी तथा संसारिक भोग भी हम से विदा हो जायँगे। प्रथम तो इन ठेकेदारों ने सब पर अपना प्रभुत्व जमा रखा है, कि जिससे सब कोई इनकी बनाई हुई अविद्या देवी के मच्छर हो रहे हैं, और यदि कोई महापुरुष जैसे स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गांधी जैसे कोई खड़े इन जीवों को इस अविद्या के फन्दे से छुड़ाने की चेष्टा भी करते हैं, तो फिर ये धर्म के तथा ईश्वर के ठेकेदार चिल्ला उठते हैं, कि सनातन धर्म नाश हो रहा है, अधर्म की वृद्धि हो रही है, और गौ माता नाश हो रही है ऐसी बातें कह कर पुनः लोगों को इस अविद्या की ओर ही खींचने की चेष्टा करते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि जब तक इस अविद्या देवी से इन धर्म और ईश्वर के ठेकेदारों का स्वार्थ सिद्ध होता रहेगा, तब तक तो ये लोग इसको देश से विदा न होने देंगे। अतः प्यारे भोले भाइयो ! इन धर्म और ईश्वर की मिथ्या दुहाई देने वाले ठेकेदारो से सदा होशियार रहो, इनकी खुराक बन्द करदो तो फिर ये बेचारे शुद्ध ईश्वर तथा धर्म के अनुयायी हो जावेंगे, और यह अविद्या देवी भी इनके साथ ही विदा हो जायगी। याद रखो ! जब तक इनको ईश्वर और धर्म की ठेकेदारी के फल स्वरूप में नाना प्रकार के भोग सम्बन्धी पदार्थ तथा द्रव्यादिक मिलते रहेंगे, तब तक यह अविद्या देश से दूर न होगी। और जब तक यह अविद्या रहेगी तब तक देश में सत्य सिद्धान्त प्रगट न होगा और जब सत्य ही दूर रहा तो फिर ईश्वर और धर्म तो हमारे पेट पालने का साधन ही हो जावेगा। अब इससे आगे अविद्या देवी के कुछ और चमत्कार वर्णन किये जाते हैं।

१२. रावण पर कल्पना

रावण को लोगों ने राक्षस कहा, और उसी के भाई विभीषण को देवता कहा। अब उसके विषय में हमारा जो कुछ मन्तव्य है, वह पाठकों के जानकारी निमित्त वर्णन किया जाता है। रावण को लोगों ने जो राक्षस शब्द से घोषित किया है यह हमारी समझ में उसके साथ अन्याय किया गया है, क्योंकि रावण के जीवन से ऐसी कोई बात घटित नहीं होती, कि जिससे उसको राक्षस कहा जावे। रावण तो अपने ज़माने का बड़ा भारी पंडित अर्थात् वेद शास्त्रों का ज्ञाता, बड़ा भारी तपस्वी, योगी, भक्त, कला कौशल विज्ञान विशारद्, नीतिज्ञ, आविष्कारक, महा बलवान, धर्मात्मा तथा अद्वितीय रिसर्च स्कोलर (Research scholar) था उसका शासन बड़ा कठोर और संसारिक यन्त्रणायें बड़ी कठिन तथा उसकी प्रत्येक वस्तु की आलोचनायें बड़ी कठिन थी। वह प्रत्येक वस्तु की जानकारी के लिये बड़ी तीव्र आलोचनायें किया करता था। और उसकी इन कठिन आलोचनाओं से घबरा कर लोग उसको नास्तिक, वेद विरोधी तथा राक्षस कहने लग गये थे।

वास्तविक में यदि देखा जावे यह बात ठीक भी है। संसार में जितने भी सुधारक (reformer) और आविष्कारक (Scientific researcher) हुए हैं उन सबके सामने यही कठिन समस्या आई है, ऐसा कोई भी देश सुधारक तथा आविष्कारक मनुष्य नहीं होगा कि जिसके सामने ये संसार सम्बन्धी दुर्घटनायें न हुई हों। जब संसार में दुर्बुद्धि आलसी तथा निज के स्वार्थ में निमग्न लोग इन आविष्कारक, देश सुधारकों की कठिन आलोचनाओं से घबरा जाते हैं तब ये परस्पर में संघठित होने लगते हैं, और जब ये लोग देखते हैं कि इनके कार्य संसार में सराहनीय हो कर इनकी बल, विद्या तथा बुद्धि से बहुत दूर पहुँच जाते हैं, तब ये लोग परस्पर में संगठित होने लगते हैं; क्या करें अपनी बल विद्या बुद्धि से तो कुछ कर नहीं सकते, ऐसी स्थिति में ये लोग उसको नास्तिक, वेद विध्वंसक तथा राक्षस आदि

बतला कर जिस किसी युक्ति से उनका जीवन नाश कर डालते हैं। आज तक इन दुष्ट स्वार्थी लोगों ने न जाने कितने महा पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया है, और देश का नुकसान किया है। ये लोग अपने सामने किसी की उन्नति देख नहीं सकते। खुद से कुछ होता नहीं, दूसरे को करने देते नहीं, और यदि कोई इनसे विमुख होकर कुछ करना भी चाहे तो ये दुष्ट लोग उसको बीच में ही मार डालते हैं। देखिये स्वामी शंकराचार्य जी ने कुछ करना चाहा तो झट मौत के घाट उतार दिये गये। स्वामी दयानन्द जी ने कुछ देश का हित करना चाहा तो उनके साथ में भी वही वर्ताव करके मृत्यु के घाट उतार दिया। आजकल महात्मा गांधी जी ने देश के हितार्थ कुछ समाज सुधार करना चाहा तो दुष्टों ने इनके साथ भी वही कठिन बर्ताव किया, और अन्त में उनके भी प्राण ले डाले।

कहने का अभिप्राय यह है कि ये मिथ्या नाम धारी, अहङ्कार में चूर रहने वाले तथा ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देने वाले लोग किसी की उन्नति देखना नहीं चाहते। ये तो केवल अपने आपको बड़ा समझते हैं, और जो इनसे विपरीत सत्यता को लेकर चलता है उसको नास्तिक, दुष्ट तथा राक्षस शब्दों का प्रयोग किया जाता है। रावण के साथ में भी यही बात हुई। रावण सब के पास में पहुँचता था, बाहु बल, विद्या बल, ज्ञानबल, रूपबल, आदि सब बलों की परीक्षा लिया करता था। शारीरिक, आत्मिक तथा भौतिक सब प्रकार की उन्नति को लिए हुए था, सब में अद्वितीय ज्ञानी, विद्वान, तपस्वी, आविष्कारक, देश सुधारक तथा सबका शिरोमणि राजाधिराज था। यह क्योंकि प्रत्येक वस्तु के जानने निमित्त प्रत्येक साधु महात्मा, विद्वान, तपस्वी राजा महाराजा बलवान, धर्मात्मा तथा ब्राह्मणों के पास पहुँचा करता था, और उनसे प्रत्येक वस्तु की जानकारी प्राप्त करने के लिये तर्क द्वारा कठिन जांच पड़ताल किया करता था, और जिस किसी की आलोचना करता था तो बड़े कठिन शब्दों में किया करता था, शासन सूत्र भी उसका बडा कठिन था। इस प्रकार उसकी कार्य कारिणी नीतिज्ञता को देख कर तथा उसकी महान

तपस्या को देख कर लोग चक्कर खाने लगे थे। कर्म का लोप करने वाले तथा केवल ईश्वर और धर्म के नाम पर बैठे रहने वाले ब्राह्मणों से उसका बड़ा द्वेश था, वह किसी को अकर्मण्य देखना नहीं चाहता था, वह चाहता था कि सब कोई कर्मवीर तपस्वी बनें, और छोटी २ बातों की पूर्ती के लिये ईश्वर और धर्म का आश्रय लेकर न बैठे रहें, किन्तु भगवान के द्वारा ही दी हुई बुद्धि का विस्तार करें, और उससे लौकिक तथा पारलौकिक दोनों क्रियाओं का सविस्तार करें। अपनी बात का इतना पक्का था कि जब तक उस बात की पूर्ती न कर लेता था तब तक उसका पीछा नहीं छोड़ता था, लोगों ने उसका कठिन व्रत देखा, तपस्या देखी, विद्या बल, बाहु बल देखा तो उसके सद्गुणों को देख कर घबरा गये। ईर्षा और द्वेष करने लगे। किन्तु रावण अपनी विद्या बुद्धि के द्वारा सबको नत मस्तक करता चला गया। अन्त को लोगों ने उससे हार मान कर नास्तिक, वेद विध्वंसक तथा राक्षस बतला दिया।

अब पाठकगण विचार कर सकते हैं, कि रावण में ऐसा कौनसा अवगुण था कि जिसके द्वारा उसको राक्षस मान लिया जावे। रावण की उत्पत्ति में भी कोई राक्षसी स्वभाव नहीं देखा जाता। देखिये गोस्वामी तुलसी दासजी ने रामायण में रावण की उत्पत्ति के विषय में कैसा सुन्दर लिखा है। जरा सुनिये:—"उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती, शिव विरञ्च पूजे बहु भांती"॥ अर्थात् रावण उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ पुलस्त्य ऋषि का नाती था। और जिसने शिव और ब्रह्मा की कई प्रकार से पूजा की थी। अब देखिये कितने अच्छे उत्तम कुल में उत्पन्न होने वाला और कितनी सुन्दर तपस्या करने वाले रावण को ब्राह्मण से राक्षस बना देना यह आश्चर्य नहीं तो फिर क्या है? इससे ज्ञात होता है कि यह सब बातें ईर्षा द्वेष के कारण की गई थी। ऐसी घटना रावण के ही साथ घटित हुई थी सो बात नहीं है, किन्तु ऐसी २ बहुतसी दुर्घटनायें उस ज़माने में की गई हैं। उनमें से कुछ पाठकों को जान कारी प्राप्त कराने के लिये वर्णन की जाती हैं। ये दुर्घटनायें आपको राम और रावण के जमाने की सुनाई जावेंगी। सो सुनियेः—

श्री रामचन्द्र जी के शासन काल में कहते हैं कि शम्बुक नाम का एक कोई शूद्र विचारा भगवान की भक्ति करने लग गया पर, जब उसकी भक्ति का प्रभाव जगत में फैलने लगा तो ये ब्राह्मण लोग घबराये, और उसकी शिकायत रामचन्द्रजी से जाकर की कि महाराज एक शूद्र बड़ा उग्र तप करके अनधिकार चेष्टा कर रहा है अतः उसको दंड मिलना चाहिये। भगवान रामचन्द्रजी ने इनके कहने से उसको प्राण दंड की आज्ञा दी थी। इस कथा से पता लगता है कि ईश्वर और धर्म की ठेकेदारी तो पहिले ही से चली आती है, और इस के साथ ही साथ यह भी सिद्ध होता है कि सत् कर्म तथा विद्योन्नति वा ज्ञानोन्नति करने वालों से ये लोग सदा से ही ईर्ष्या और द्वेष करते आ रहे हैं। अब पाठक विचार कर सकते हैं कि यह न्याय है, अथवा अन्याय। ज्ञान है अथवा अज्ञान। क्या ईश्वर और धर्म किसी की पैतृक सम्पति है कि जिस पर किसी दूसरे का अधिकार हो ही नहीं सकता। तो कहना पड़ेगा कि ईश्वर और धर्म के नाम पर जब से यह ठेकेदारी शुरू हुई तब ही से सच्चे ईश्वर और धर्म का लुप्त हुआ। और इसके नाम पर धोखा देकर पेट पालने के लिये एक विलग ही पार्टी बनती चली गई।

दूसरी कथा आती है विश्वामित्र और वशिष्ट की। कहते हैं विश्वामित्र ने किसी समय परब्रह्म ऋषि बनने के लिये बहुत कठिन तपस्या की थी, किन्तु वशिष्ट ने विश्वामित्र को ब्रह्मऋषि की पदवी न दी। अन्त को बहुत कड़ी (कठोर) तपस्या करके जब विश्वामित्र ने वशिष्टजी से भी अधिक तपस्या कर ली। तब बाध्य होकर वशिष्ट ने विश्वामित्र को ब्रह्मऋषि का पद दिया। यह सर्वत्र प्रसिद्ध है।

तीसरी कथा आती है रामायण में जहां राम और परशुराम संवाद चला है, वहां पर ऐसा लिखा है कि जब रामजी ने शिव धनुष तोड़ डाला तब परशुरामजी भी कहीं से पर्य्यटन करते हुए आ पहुँचे, और शिव धनुष टूटा देख कर बड़े क्रोधातुर हुए, और श्रीरामजी से अभिमान युक्त वचन बोले कि हे राम! दुनियां में जो राम है वह तो मैं अकेला ही परसराम हूँ

अब तुम दूसरा राम कहां से आगया ? तुलसीदासजी ने भी इस संग्राम के विषय में ऐसा ही लिखा है कि:—करि परितोष मोरि संग्रामा, नातरु छांड़ि कहाउब रामा ॥ अर्थात् हे राम ! यातो मेरे को संतोष दे और मेरे साथ संग्राम कर। नहीं तो अपना राम नाम कहलाना छोड़ दे। इतना वचन जब राम ने सुना तब उनके इच्छानुसार परशुराम के मद को श्री राम ने विदीर्ण कर दिया।

इन उपरोक्त बातों से पता चलता है कि यह अभिमान और ईर्षा द्वेष लोगों में पहिले ही से चला आता है। रावण के साथ में भी उस समय ऐसाही बर्ताव किया। जब लोगों ने देखा कि रावण हमसे मान मर्य्यादा, बल, विद्या बुद्धि में कई गुणा अधिक बढ़ता जा रहा है और हम उससे अब किसी भी तरह समता नहीं कर सकते, तब उसको परास्त करने के लिये तथा बदनाम और नीचा दिखाने के लिये वेद विरोधी नास्तिक और राक्षस घोषित (announce) कर दिया। और अन्त में श्रीरामचन्द्र जी से मेल करके न्याय कुशल, पराक्रमी, बल बुद्धि निधान, तपस्वी, आविष्कारक कुशल रावण जैसे दिव्य देवता को नाश कर दिया। अब रावण के दिव्य गुणों का लोगों को परिचय कराया जाता है। ज़रा सुनिये:—

रावण उस ज़माने का बहुत बड़ा पंडित माना जाता था। इस बात को सिद्ध करने के लिये आज तक लोग उसके दस मुख और मस्तक बनाते आरहे हैं। ये मस्तक और मुख ऐसे नहीं थे जैसा कि लोग आजकल राम लीला के समय बना कर दिखलाया करते हैं। ये तो लोगों ने ना समझी के कारण इतने सिर तथा मुखों की कल्पना कर ली है। वास्तव में तो रावण का शरीर भी ऐसा ही था, जैसा कि सब मनुष्यों का देखा जाता है। अब ये तो रावण के दस मुख बनाये जाते है, और इसी से रावण का दूसरा नाम दशानन भी पड़ गया, सो क्या है ? रावण चार वेद और षट शास्त्रों का ज्ञाता था। और वेद तथा शास्त्रों का अध्ययन करने का काम मुख्य

विद्या, आत्म विद्या तथा भौतिक विद्या तथा साइन्स आदि। कहने का अभिप्राय यह है, कि रावण के समय तक ये सब विद्यायें प्रफुल्लित थी किन्तु रावण को मार देने के पश्चात् सब विद्याओं का शनैः २ नाश होता चला गया। रावण की राजधानी में बड़े २ आयुर्वेद के ज्ञाता सुखेण जैसे वैद्य थे कि जो मृतप्रायः मनुष्यों को जीवित कर लेते थे। बड़े २ वैज्ञानिक इञ्जिनियर थे। रावण की राजधानी लङ्का का बड़े २ चतुर शिल्पी तथा वैज्ञानिक इञ्जिनियरों के द्वारा ही निर्माण किया गया था। उस समय की शिल्प विद्या से प्रभावित होकर एक फ्रेञ्च अंग्रेज़ ने अपने एक वक्तव्य में प्रकाशित करते हुए कहा है कि:—

A French scholar Yictor Golen Bleeff lecturing some time ago in London, indicated how great has been the influence of Indian art. The Great Indian art, he said, "Spread over Eastern Asia just as the great plastic ideal inspired the Countries of the Mediterranean and extended beyond the Alps." And India's Ideals, taken up by Budhism touched and trans-formed the life of Japan. The Indian Students needs but understand to appreciate India's past.

रावण अपने ज़माने में विज्ञान (Science) का जानने वाला भी अद्वितीय ही था। देखो रावण ने काल को पाटी के बांध रखा था, हवा उसकी बुहारी देती थी, इन्द्र उसकी वर्षा करता था इत्यादि २ बातें आज तक लोक में प्रसिद्ध हो रही हैं, किन्तु हम लोग उसकी इन सब विचित्र बातों को कुछ का कुछ ही समझ रहे हैं। कोई तो काल को पाटी के बांधने का अर्थ कर रहे हैं कि मौत को रावण ने बांध लिया था, और

इसी प्रकार हवा के विषय में भी समझ रहे हैं कि यह जो हवा चलती है इसको बांध लिया था। सो बात ठीक नहीं है। अब हम आप को वास्तविक अर्थ बतलाते हैं। जरा सुनियेः—पहिले पाठकों को बतला दिया है कि रावण बड़ा भारी साइन्स का ज्ञाता था, उसने काल को पाटी के बांध रखा था उसका अर्थ यह है, कि जैसे आजकल साइन्स के जानने वाले अंग्रेज लोग हैं इन्होंने काल को हाथ के बांध रखा है, दीवार पर लटका रखा है, मेज पर रखा है। काल नाम समय है। आपने घड़ी को हाथ के बांध रखा है, घड़ी को दीवार के बांध रखा है, घड़ी को मेज पर धर रखा है। अभी आपको समय देखने की आवश्यकता हुई, आपने झट हाथ पर देख लिया, दीवार पर देख लिया कि दो बजा है। इसी प्रकार यदि आपको सवेरे चार बजे उठना है, आप अपनी टाइमपीस में चाबी देकर सो जाइये, यह घड़ी आपको ठीक टाइम पर जगा देगी, बस यही काल का बांधना है। रावण भी अपने समय का बड़ा पाबन्द था और इसी प्रकार मन्त्रों द्वारा अपने समय का विभाजन कार्य किया करता था।

हवा उसकी बुहारी देती थी सो कैसे देती थी सुनियेः--आज कल विदेशियों ने बिजली के पंखे बना रखे हैं। इनको यदि आप फुल पावर से खोल देंगे तो आपको उस हवा में बैठना कठिन हो जावेगा। मतलब यह है कि आप इस हवा से जैसा चाहें वैसा काम ले सकते हैं। इसी प्रकार रावण के पास में भी इस हवा से काम लेने के लिये कई प्रकार के यन्त्र बने हुए थे। इन्द्र उसकी वर्षा किया करता था सो कैसे किया करता था, इस बात को सुनियेः—आजकल आप योरुप तथा अमेरिका आदि देशों में जाकर देखिये, वहां पर जब क्षेत्रों को पानी की आवश्यकता होती है, तब ये लोग वहां पर पाइपिङ्ग सिस्टम (piping system) के द्वारा अथवा फिलड सिस्टम (flood system) के द्वारा मन चाहे जितने (area) क्षेत्र में पानी वर्षा लेते हैं। इसी प्रकार रावण भी अपने बाग बगीचो में इसी प्रकार पानी वर्षा लिया करता था।

कहने का अभिप्राय यह है कि रावण के शासन काल में सब प्रकार की साइन्स विद्या का प्रचार था। आजकल जैसे हवाई जहाज आकाश में उड़ते हैं वैसे ही रावण के समय में भी पुष्पक विमान आदि आकाश में उड़ा करते थे। रावण के शासन काल में बड़ी २ तोपें तथा मशीन गन्स मौजूद थी कि जिनको उस समय में भुसन्डी तथा शतघ्नी आदि कहा करते थे। रावण के समय में बड़े २ बोम्ब (Bomb) अणु बम्ब, परमाणु बम्ब भी प्रचलित दीख पड़ते थे। अग्नेय अस्त्र, गरुड़ अस्त्र तथा वरुणाऽस्त्र ये सब बोम्ब ही थे अर्थात् आजकल इस भौतिक वाद के समय में आपको ये सब वस्तुयें प्रत्यक्ष दीख पड़ती हैं। इसी प्रकार रावण के समय में भी इन सबका विधिवत् प्रयोग किया जाता था। अब आपको पता लगा होगा कि रावण जैसा तत्त्व विद्या (Knowledge of science) का जानने वाला क्या कोई दूसरा और देखा जाता है जो इतना बड़ा विद्वान, तत्त्ववेत्ता तथा फिलोस्फर रावण को एकदम राक्षस बना देना देश की मूर्खता नहीं तो क्या है ! राक्षस बनाने में लोगों के पास कोई खास प्रमाण भी नहीं है, कि जिससे उसको राक्षस मान लिया जावे। हां, उसके देवता बनने के तो हमारे नेत्रों के सामने अनेकों उदाहरण हैं। आजकल लोग उसकी एक दो बातें सुनाकर कह देते हैं कि रावण राक्षस था, किन्तु इन लोगों की एक दो बातों से भी राक्षस होना सिद्ध नहीं होता। अब रावण में जो कुछ दोष राक्षसपने का लगाते हैं, सो मैं उसको निर्दोष ठहरा कर सिद्ध कर देता हूँ कि ये सब दोष रावण पर ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण आरोपण किये गये हैं। किन्तु इनका न्याय दृष्टि से विचार किया जाय तो रावण का इसमें कोई दोष नहीं है।

पहिली बात जो इस पर दोषारोपण के लिये लगाई गई सो यह है:—

नृप अभिमान मोह वश किम्बा।
हर आनेसि सीता कर दम्भा॥

अर्थात् उसने सीता महारानी को अभिमान तथा मोह के वश होकर

चुरा लाया। अब देखिये यहां तो लोग उस पर सीता को चुरा लाने का आरोप लगाते हुए राक्षस प्रमाणित करते हैं, और दूसरी ओर कहते हैं कि रावण को यह वरदान होगया था कि उसकी मृत्यु भगवान श्रीराम के हाथ से होगी, और रावण रामकी भक्ति करेगा किन्तु वैर भाव से स्मरण करेगा, और इसीलिए तुलसीदासजी ने लिखा है कि 'तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहे खीज। उलटे सुलटे जामिये ज्यों खेती में बीज' अर्थात् अपने राम को चाहे प्रेम से रिझावो और चाहे खीज अर्थात् नाराज होकर रिझावो, भक्ति दोनों तरह भगवान की ही होगी। जैसे खेती में बीज उलटा डालो, चाहे सुलटा डालो वे तो उगेंगे ही। इसी तरह भगवान की भक्ति किसी भी तरह करो, कही जायगी भगवान की ही भक्ति। और रावण ने इसी भक्ति को सिद्ध करने के निमित्त ही तो सीताजी को चुराया था, वह जानता था कि इस तरह सीता को चुरा लेने से भगवान जल्दी आकर मुझ से युद्ध करेंगे, और मैं उनके हाथों से मारा जाकर शीघ्र ही गोलोक का अधिकारी हो जाऊँगा। फिर दोष लगाने वालों को यह भी अच्छी तरह ज्ञात है कि रावण की सीताजी में जार बुद्धि नहीं थी, वह सीताजी को अपने हृदय से माता समझता था। अब आप सोचिये कि एक तरफ आप रावण को दोषी ठहराते हैं, और फिर दूसरी तरफ आपके वचनों से ही निर्दयी भी प्रमाणित करते हो, तो यह आपका भोलापन कहा जायगा या नहीं ?

कहने का अभिप्राय यह है, कि रावण में यह स्वाभाविक गुण था, कि वह किसी भी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिये उन ज्ञानियो के पास पहुँच जाता और वहां जाकर ज्ञान बल से बाहु बल से, विद्या बल, से जिज्ञासा से किसी भी प्रकार से उस ज्ञान को प्राप्त कर लेता था क्योंकि वह प्रत्येक वस्तु जानने के लिए रिसर्च स्कोलर बना हुआ था। बाली के पास में वह कई समय बाहुबल की परीक्षा के लिये पहुँचा था, और उसकी कई प्रकार से परीक्षा ली थी। इसी प्रकार उसने भगवान राम के भी कई दिव्य गुणों की प्रशंसा सुनी थी, किन्तु उन सब की परीक्षा कैसे लेवें: इसलिये समय पाकर

सीताजी को चुरा लाया, और उनको अशोक वाटिका में ठहरा दिया। यदि रावण को सीताजी में जार बुद्धि होती तो वह उनको सीधा डाईरेक्ट अपने महलों में ले जाता, और वह फिर सीताजी को इतने दिन तक छोड़ भी कैसे सकता था। जो कामी होते हैं वह स्त्री को थोड़ा अकेला पाते ही अपनी काम वासना की पूर्ति कर लेते हैं। किन्तु रावण ने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वह अपनी भावना में सीताजी को माता समझता था। उसने तो आप लोगों की भावनानुसार भगवान के दरशन करने के निमित्त तथा उनके हाथ से मर कर मुक्त होने के निमित्त सीताजी का अपहरण किया था। यदि आप अपनी भावनानुसार समझो, तो रावण दोषी नहीं है, और यदि हमारी भावना अनुसार समझो तो भी रावण दोषी नहीं है। अतः उसको स्त्री चुराने का दोष लगाकर राक्षस बनाना ठीक नहीं है।

फिर दूसरा दोष रावण पर लगाया जाता है खाने पीने का, अर्थात् ये लोग मांस मदिरा का सेवन किया करते थे। और मांस मदिरा का सेवन करना ही राक्षसपना होता है। अब इसके विषय में सुनियेः— रावण की राजधानी लङ्का थी, और लङ्का के चारों तरफ समुद्र था। खाने पीने की दूसरी चीजें इतनी अधिक नहीं होती थी। अतः ये लोग प्राण रक्षार्थ मांस ग्रहण किया करते थे। आजकल भी जो मनुष्य समुद्र के तट पर निवास करते हैं, वे अपना जीवन विशेष कर मछली आदिकों पर ही बिताया करते हैं। जहां पर दूसरी चीज़ अधिक रूप में नहीं मिलती वहां पेट पालने के लिये कुछ न कुछ तो करना ही पड़ता है। अब यदि आप यह कहो कि नहीं साहब! हम इस बात को नहीं मानते। जो मांस मदिरा सेवन करते हैं उनको हम राक्षस ही मानेंगे। यदि आपके कथनानुसार ऐसा ही माना जावे तो भारत में रुपये में चार आना ही ऐसे मनुष्य होंगे कि जो फल फूल अथवा रोटी दाल खाते हैं, और रुपये में बारह आना ऐसे मनुष्य हैं, कि जो मांसादि खाकर पेट पालते हैं। तो आपकी भावनानुसार तो ये सब ही राक्षस कहला सकते हैं। किन्तु ऐसा नहीं है, हमतो किसी को भी राक्षस शब्द का संबोधन

करते हुए नहीं देखते हैं। सब ही मनुष्य कहलाने का अधिकार लिये हुए हैं। यदि आप कहो कि जो ब्राह्मण होकर मांस मदिरा खाता है वह हमारी दृष्टि में राक्षस है। यदि यही बात सही है, तो बंगाल के अधिक से अधिक ब्राह्मण मांस मछली खाते हैं, तो वे सब राक्षस ही कहलाने चाहिये। किन्तु हमने तो कहीं भी उनको राक्षस कहलाते हुए नहीं सुने हैं। फिर रावण ने ही ऐसा क्या अपराध किया है कि जिसको ब्राह्मण से राक्षस बना दिया है? अतः मेरी समझ में तो ये सब रावण के साथ अन्याय किया गया है।

१३. रावण का बाली की कांख में छः महीना रहना

तुलसीदास जी ने रामायण में लिखा है कि रावण को बाली ने अपने कक्ष (बगल) में छः महीने तक दबा कर रखा था। रामायण में अङ्गद और रावण का जो संवाद है, उसमें अङ्गद ने भी रावण से पूछा है कि:—

एक कहत मोहि सकुचि अति, रहा बालि की कांख।
तिनमें रावण कौन तू, सत्य कहहुँ मोहि भाख॥

अर्थात् हे रावण! मैं आप से एक बात पूछने में बहुत सकुचता हूं, आप मुझ को सत्य करके बतलाइये, मैने आप के विषय में सुना है कि आप मेरे पिता बालि की कक्ष में छः महीने तक रहे थे। सो आप वही रावण हैं क्या? इस संवाद से भी पता चलता है कि रावण को बालि ने छः महीने तक अपनी कक्ष बगल में दबा कर रखा था। सब कोई आज तक यही कहते और मानते चले आरहे हैं, किन्तु इस बात पर किसी ने कोई विचार नहीं किया कि रावण को बालि ने छः महीने तक बगल में दबा रखा। क्या रावण शरीर की जूँवा (एक प्रकार का कीड़ा जो शरीर के कपड़े और सिर के बालों में उत्पन्न होती है) थी कि जो बालि की कांख में छः महीने तक दबी पड़ी रही। रावण उस ज़माने में कोई साधारण व्यक्ति तो

था नहीं, बहादुर (शूरवीर) योद्धा था, यदि ऐसे प्रसिद्ध योद्धा को कोई किसी तरह से परास्त करके कारागार में डाल कर लोहे की जंजीर से बांध कर छः महीने तक रखले तो यह बात संभव हो सकती है किन्तु उसको बगल में दाबे रखना यह बात कब संभव हो सकती है, और फिर कोई घंटा दो घंटा किसी की बगल में दबा ले तो भले ही दबाले। किन्तु छः महीने तक बगल में दाबे रखना तो बुद्धि स्वीकार नहीं करती। आप किसी आदमी को घंटा दो घंटा तो बगल में दबा कर देखिये आपको कैसा आनन्द आता है। आप एक दम घंटा दो घंटा में ही परेशान हो जावेंगे, और यही चित्त चाहेगा कि इस व्यक्ति को छोड़ दें। फिर रावण को बालि ने छः महीने तक बगल में दबा कर रखा है, तो यह बात बड़ी ही आश्चर्य की होती है, जिसको बुद्धि किसी भी तरह स्वीकार नहीं करती है। बीच २ में इस अविद्या देवी की भारत पर ऐसी कृपा हुई कि इन सत्य सिद्धान्तों को समझना और समझाना भी दूर हो गया जिसने जो कुछ कह दिया अथवा बतला दिया वही करने और मानने लग गये, उसका परिणाम यह हुआ कि सत्य सिद्धान्त लुप्त हुए और उसकी जगह कृत्रिमता को स्थान मिल गया। अब हम आप को यह बतलाते हैं कि रावण बालि की कक्ष में छः महीने तक किस प्रकार रहा सो सुनिये:—

पूर्व प्रकरण में पाठकों को लिख कर बता दिया गया है कि रावण बड़ा भारी आविष्कारक, शूरवीर, विद्वान, तपस्वी तथा प्रत्येक विद्या का जिज्ञासु (research scholar) था। वह योग के परिचय के लिये योगियों के पास पहुँचता, ज्ञान के लिये ज्ञानियों के पास, साइन्स के लिये बड़े २ तत्त्व वेत्ताओं के पास तथा बाहुबल की परीक्षा के लिये बड़े २ शूरवीरों के पास पहुँचता था, और जब तक उन विद्याओं का पूर्ण परिचय न कर लेता था तब तक वह उनका पीछा नहीं छोड़ता था चाहे उसको इस विषय में कितना ही कष्ट आवे अथवा उसका कोई कितना ही मान भंग करे, इस बात की वह कभी भी परवाह नहीं करता था। वह तो केवल सत्य का

पुजारी था, सत्य सिद्धान्त जिधर से भी मिलें उधर से ही प्राप्त करने का बड़ा इच्छुक था। साम्प्रदायिक भावनाओं से उसको बड़ी घृणा थी। रावण वाली की कांख में जो छः महीना रहा, उसका क्या कारण था? इसका यही कारण है कि वह सदा सत्य की खोज में रहता था। बाली भी बड़ा शूरवीर और भुज दण्डों में पराक्रम रखने वाला आदर्श व्यक्ति था और रावण तथा बालि में अपूर्व मित्रता थी। यह रावण अपने मित्र बालि के पास बाहुबल की परीक्षा निमित्त कई समय पहुँचा करता और परास्त हो कर आजाता था, किन्तु वह इस बात की कोई परवाह नहीं करता था। यही कारण था कि रावण अपने बाहुबल की परीक्षा निमित्त बाली की कांख में छः महीना तक रहा। अब वह किस प्रकार बगल में रहा जूं बन कर बगल में दब रहा अथवा और किसी दूसरे प्रकार से दब कर पड़ा रहा सो सब बातें कथा के प्रसंग में संक्षेपतया पाठकों की जानकारी निमित्त वर्णन किया जाता है।

रावण किसी समय बाहुबल की परीक्षा निमित्त भ्रमण करता हुआ बाली की राजधानी किष्किन्धा में सूर्यास्त से कुछ पूर्व पहुँच गया। बाली उस समय अपने भवन से निकल कर भृत्यों सहित सायङ्काल की सन्ध्या करने उपवन को जा रहा था, कि बीच ही में रावण और बाली की भेंट हो गई। बाली ने बड़े प्रेम से मिल कर मुस्कराते हुए रावण से पूछा कि अहो! दशानन आनन्द से तो हो? कहो कहां से शुभागमन हो रहा है? इस पर रावण ने बाली से कहा कि हे बाली! मैं अमुक राजा से मिलने जा रहा था, बीच में जाते २ आपकी नगरी पड़ गई, इससे इच्छा हुई कि बाली से भी मिलता चलूं—बस यही सोच कर आपके मिलने को आ गया हूं। इस पर बाली समझ गया कि रावण मेरी बाहुबल की परीक्षा निमित्त आया है। इसको इस समय बाहुबल की परीक्षा तो क्या कराऊं, क्योंकि यह समय संध्या करने का है अतः इसको इस समय अपनी योग विद्या का परिचय दे देना चाहिये, ऐसा सोच समझ कर बाली ने रावण से कहा कि हे दशानन! बड़ी

खुशी की बात है कि आप पधारे ! किन्तु इस समय सन्ध्या करने को जा रहा हूं; अतः आप भी मेरे साथ सन्ध्या करने के निमित्त उपवन को पधारिये । इस प्रकार रावण और वाली दोनों मिल कर उपवन में पहुंचे और अपना २ आसन बिछा कर सन्ध्या करने को बैठ गये । रावण वाली की कक्ष में अर्थात् बगल में आसन लगा कर बैठा । इस प्रकार दोनों सन्ध्या करने लगे । जब सन्ध्या में प्राणायाम मंत्र आया, तब वाली ने रावण को योग का परिचय कराने के निमित्त छः महीने का प्राणायाम स्थिर किया; अर्थात् दो महीने का पूरक, दो महीने का कुम्भक और दो महीने का रेचक इस प्रकार छः महीने का प्राणायाम साधा । रावण ने देखा कि वाली ने प्राणायाम का साधन कर लिया है तो उसको भी वाली की बगल में बैठे रहना पड़ा, क्योंकि रावण वाली से पूर्व खड़ा हो जाता तब तो उसकी हँसी हो जाती अतः वह भी चुपचाप सन्ध्या करता हुआ तथा प्राण का निरोध करता हुआ वाली की बगल में छः महीने बैठा रहा, जब उसने देखा कि वाली की समाधि छः महीने में भी भंग नहीं हुई, तब रावण ने वाली की समाधि भंग करने की कुछ युक्ति चलाई । तब वाली की समाधि भंग हुई और रावण योग विद्या में परास्त हो लज्जित होता हुआ अपनी राजधानी को चला गया । इस प्रकार रावण को वाली की कांख में छः महीना रहना पड़ा था । लोक में भी कहा जाता है कि अमुक आदमी भोजन करने के लिए अमुक आदमी की बगल में बैठा । इससे कहने वाले का यह अभिप्राय थोड़े ही है कि वह उसकी बगल में जूं बनकर बैठ गया । किन्तु उसके समीप में बैठने को ही बगल में बैठना कहा जाता है । इसी प्रकार रावण का वाली की कक्ष में छः महीने तक रहने का भी अभिप्राय है, कि वह वाली की कांख में जूं बन कर नहीं बैठा रहा और न वाली उसको कांख में दबा कर बैठा रहा । किन्तु वह वाली की कक्ष (बगल) में बैठा हुआ छः महीने तक सन्ध्या करता रहा अथवा वाली की समाधि भंग होने की आशा में ध्यान लगाये बैठा रहा । यही सिद्धान्त उपयुक्त हो सकता है, जो सदा सर्वदा माननीय है । किन्तु उसका जूं बन कर बगल में बैठा रहना अथवा उसको बगल में दबा कर

खागया। इसका भी यह अभिप्राय नहीं है कि वह घर की सारी रोटियों को खागया, किन्तु आवश्यकता से अधिक खागया। यही हाल हनुमानजी का हुआ, वे क्योंकि आवश्यकता से कहीं अधिक बूटियों को तोड़कर लेआये थे, और इसीलिये उनको सारा पर्वत उठाने की उपाधि दे दीगई। किन्तु अविद्या देवी ने सारे द्रोणाचल पर्वत को उठा कर ले आना ही हिन्दू समाज को बोध करा दिया है, जो किसी भी तर्क अथवा बुद्धि द्वारा सिद्ध नहीं हो सकता।

१५. श्री कृष्ण का गोवर्धन उठाना

इसका रहस्य भी वैसा ही है कि जैसा हनुमान जी का द्रोणाचल पर्वत का उठाना है। अन्तर इतना है कि हनुमान जी ने किसी अंश में द्रोणाचल पर्वत की कुछ बूटियों को लाये थे, और श्री कृष्ण भगवान ने कोई कोई पर्वत विशेष चीज न उठा कर केवल गोवर्धन उठवाया था। सो कैसे और किस तरह? इस पर अपने विचार प्रगट किये जाते हैं। कहा जाता है कि यादवों की संख्या ५६ कोटि (करोड़) थी और प्रत्येक यादव के घर में लक्ष २ गायें थी। अब यदि यादवों की संख्या ५६ करोड़ मानी जाय तो इनके साथ में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों की संख्या कितनी होनी चाहिये। और फिर ये सब इस भारत में कैसे समाते थे। आज हम देखते हैं, कि भारत में ४० या ४५ करोड़ जन संख्या में ही यह हाल हो रहा है। कि खाने को अन्न नहीं है, पहिनने को कपड़ा नहीं है, तथा रहने को स्थान नहीं मिलता है तो फिर उस पूर्व स्थिति में जब कि भारत में अरब से भी अधिक मनुष्य रहते थे तब ये सब यहां पर किस प्रकार समाये हुए थे। इससे सिद्ध होता है कि यादवों की संख्या ५६ कोटि नहीं थी। यहां कोटि शब्द करोड़ वाचक सिद्ध नहीं होता किन्तु इस कोटि शब्द के दो अर्थ समझना चाहिये, पहिला कोटि=नसल (Kind) दूसरा कोट=किला=दुर्ग (Fort) अब ५६ कोटि का अर्थ हुआ ५६ प्रकार के यादव, अथवा यादवों के

आधीन में ५६ निवास स्थान थे कि जिनमें ये यादव सुरक्षित रहते थे। जैसे ३३ कोटि देवता कहे जाते हैं, वहां पर ३३ कोटि से ३३ करोड़ देवता नहीं किन्तु ३३ प्रकार के देवता ही सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार यादवों के विषय में भी समझना चाहिये। अब रही दूसरी बात गौओं की। यहां पर यादवों के प्रत्येक घर पर लक्ष २ गायें थीं। अब यदि इस लक्ष शब्द को संख्या वाचक अर्थ लेते हैं तब तो यह निसन्देह सिद्ध हो जाता है कि यादवों के घरों में लाख २ गायें रहती थीं, कि जिससे इनके रहने की अव्यवस्था सिद्ध हो जावेगी। क्योंकि एक २ गाय के बांधने की जगह भी तजवीज की जाय तो कितनी होनी चाहिये, और फिर लाख गायों के लिये कितनी होनी चाहिये। और फिर जब एक ही परिवार का यह हाल होगा तो अनेकों परिवारों का क्या हाल होगा? और फिर इतनी सब गायों के चरने के लिये चागगाह कितने लम्बे चौड़े होने चाहिये। इस लिये बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती कि प्रत्येक यादवों के घर में लाख २ गायें रहती हो। इसलिये इसके वास्तविक अर्थ पर विचार किया जाता है। सुनिये:—

"यादवों का लक्ष्य गाय थी" यहां लक्ष्य शब्द का अर्थ होता है ध्येय (aim)। अर्थात् यादवों का ध्येय ही गौ पालना बन गया था। अर्थात् प्रत्येक यादव अपने हृदय से गौ पालना अपना लक्ष्य समझता था, और यही मुख्य कारण था कि भगवान श्रीकृष्ण को ही गोपाल की पदवी मिली जो आजतक संसार में किसी को भी प्राप्त नहीं हुई। भगवान श्री कृष्ण ने स्वतं गौओं की सेवा की थी, और उनको स्वयं चराया करते थे। और वे स्वयं माखन खाते थे और दूसरों को बाध्य करके खिलाया करते थे। भगवान श्री कृष्ण की शिक्षा ही यह थी कि:—"स्वयं गौ पालो किन्तु बाजार से घी दूध खरीदो नहीं"। भगवान श्री कृष्ण ने इन दोनों बातों का प्रत्यक्षी करण करके बतला दिया था। आजकल लोग गौओं के नाम पर तो श्वांस लेते हैं, किन्तु कुत्तों को बड़े प्रेम से पालते हैं। ऐसे मनुष्यों को भगवान श्री कृष्ण से शिक्षा लेनी चाहिये। भगवान राम को वशिष्ठजी हर समय

गोवरधन की पूजा सदैव से ही चली आती है, और आज भी हम लोग इसकी पूजा कार्तिक मास के अन्तर्गत दीपावली के दूसरे दिन बड़े प्रेम से करते हैं। गोवरधन किस चीज का वताते हैं? सो सुनिये! यह गोवरधन हमारे यहां पर आजतक गाय के गोबर का बनाते हैं, और इसमें गौ से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः सब चीजें यथा दूध, दधि, माखन आदि प्रयोग में लेते हैं। और प्रसाद के लिये माखन मिश्री युक्त चूरमा बनाते हैं, और फिर इस प्रसाद को गुवाल बालों को बड़े प्रेम से खिलाते हैं क्योंकि इस गोवरधन के अधिकारी वे ही होते हैं, जो गोपाल बन कर गौओं की सेवा करते हैं। अब आप सोचिये! यदि गोवरधन के उठाने का अर्थ पहाड़ होता तो हम उसकी मूर्ती गोबर की नही बनाते। किन्तु मिट्टी और पत्थर के संयोग से बनाते क्योंकि पहाड़ में विशेष कर मिट्टी और पत्थरों का ही संयोग पाया जाता है। इससे सिद्ध होता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने पहाड़ों को नहीं उठाया, किन्तु उन्होने तो यादवो से अंगुली के इशारे पर गौओं से सम्बन्ध रखने वाले सारे पदार्थों को उठवा कर पहाड़ के समीप सुरक्षित रखवा दिया। यदि भगवान श्रीकृष्ण उस समय इस असली गोवरधन को न उठवाते, तो सारे यादव मर जाते। क्योंकि यादवों का लक्ष्य तो गौएँ ही थी, इसलिये भगवान श्रीकृष्ण ने असली गोवरधन उठवा कर यादवो के प्राणो की रक्षा करली।

इस पर यदि आपको यह शङ्का है, कि गोवरधन को तो भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं अंगुली पर धारण किया था, सो यहां तो यह बात सिद्ध न हुई, क्योंकि यहां तो गोवरधन का उठवाना यादवों से सिद्ध होता है। सो सुनिये— इसका उत्तर यह है कि जैसे सेना में कमान्डर इन चीफ होता है, और उसके इशारे पर सेना सब काम करती है, अर्थात् शत्रु को मरने मारने का सब कार्य सेना करती है, और विजयी भी सेना ही होती है। किन्तु लोक में प्रसिद्ध होता है कि अमुक कमान्डर इन चीफ ने विजय प्राप्त की। यहाँ पर कोई ऐसा नहीं कहता कि सेना ने विजय प्राप्त करली। बस यही हाल

भगवान श्रीकृष्ण के विषय में जानना चाहिये क्योंकि उस समय बड़ी भयङ्कर वर्षा के चिन्ह बन चुके थे, और यादवों की गोवरधन सम्बन्धी सारी चीजें तितर बितर हो रही थी, अर्थात् कहीं गायों का चारा पड़ा था, कही गायों के कोमल २ बच्छ इधर उधर आमोद प्रमोद में फिर रहे थे, कहीं गायों का गोबर इकट्टा किया पड़ा था, कहीं गायें इधर उधर चर रही थी, कहीं खाने पीने की चीजें यथा अन्न, माखन तथा मिश्री रखी हुई थी, उन सब पदार्थों को यादवों में श्रेष्ट भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी अंगुली के इशारे (सङ्केत) से यादवों द्वारा उन सब पदार्थों को उठवा कर पहाड़ की कन्दराओं के समीप सुरक्षित रखवा दिया। इसी को भगवान श्रीकृष्ण का असली गोवरधन उटाना कहा जाता है। क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण का तथा यादवों का असली गोवर्धन (गौ की सेवा सुश्रुषा द्वारा वृद्धि करना, प्रसन्न करना अथवा रक्षा करना) ही कहा जाता है। अतः भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों को उचित है, कि वे भगवान श्रीकृष्ण के आदेशानुसार अपनी परम पवित्र गौमाता की रक्षा तथा सेवा द्वारा गौ सम्बन्धी सारे पदार्थों को एकत्रित करके असली गोवरधन स्थापित करो, और नकली गोवर्धन के पीछे न पड़ो क्योंकि यह तो पंडे पुजारियों की कूट नीतिज्ञता है, कि उन्होंने असली गोवरधन को भुलावे में डाल कर अपने स्वार्थ की पूर्ती के लिये नकली गोवरधन की पूजा करवाना शुरू करवा दिया। प्यारे पाठको! इन पंडे पुजारियों की लीला अपरम्पार है, उन्होंने अपने स्वार्थ के लिये न जाने जनता जगत को कितने धोखे दिये हैं, और प्रत्यक्ष में रात दिन दे रहे हैं, और फिर भी जनता इनसे आस लगाये बैठी है, कि ये पन्डे पुजारी हमारा उद्धार करेंगे, बस यही एक आश्चर्य की वार्ता है। ये भोले लोग इस बात को नहीं जानते हैं, कि जिन व्यक्तियों के रोम २ में धोखा देना और संसारिक भोग भोगना ही समाया हुआ है, फिर ऐसे व्यक्तियों से क्या यह आशा की जासकती है कि वे संसार में किसी का उद्धार करेंगे। जब ये लोग स्वयं ही अपने कुकृत्यों के द्वारा डूबे जा रहे हैं फिर डूबते हुए प्राणियों को ये लोग निकालें, यह बात कब संभव हो सकती है।

देखिये ! ये लोग भगवान श्रीकृष्ण के असली गोवरधन की पूजा करवाते अर्थात् गोवों की सेवा सुश्रुषा का भाव जनता के सामने रखते तो इनको न तो इतनी आय होती, और न इनको इतने भोग ही मिल सकते थे। क्योंकि सब लोग गौओं की सेवा सुश्रुषा करते, इनको कौन पूछता ? इसलिये इन्होंने जनता को गौ विशेष की सेवा न बतला कर पर्वत विशेष का महात्म्य बतला दिया। कि जिसके बहाने यहाँ पर आवें और हमारे को दान दक्षिणा तथा भोगों की सामग्री प्राप्त हो। इस प्रकार जगत में अर्थ का अनर्थ होगया।

इतना समझाने पर भी फिर यदि कोई मनुष्य हठात् यह कहे, कि नहीं, भगवान श्रीकृष्ण ने तो अंगुली पर धर कर पर्वत ही उठा लिया था, तो फिर इसके विषय में भी वही बात होगी, कि जैसा हनुमानजी का द्रोणाचल पर्वत के उठाने के बारे में पीछे लिख कर समझाया गया है। अर्थात् पर्वत का उठाना आश्चर्य ही नहीं किन्तु असम्भव भी है, क्योंकि बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती। दूसरे गोवर्धन शब्द का वाच्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ करने से भी कोई पर्वत का उठाना सिद्ध नहीं होता।

अतः जनता जगत को चाहिये कि भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश को तथा असली गोवरधन उठाने के प्रभाव को सोचें और विचार करें, अर्थात् जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने यादवों से गोवरधन धारण करा कर उनकी रक्षा की थी, इसी प्रकार आप सब मिलकर अपनी तथा देश व राष्ट्र की रक्षा करें। याद रखो ! बिना गौ पाले आप गोपाल नहीं बन सकते, और गोपाल बने बिना आपको खाने के लिये शुद्ध दूध व माखन नहीं मिल सकता। अतः सब लोग गोवर्धन हितकारी बनें अर्थात् गौमात को सब प्रकार से सुपाश देते हुए इनकी वृद्धि करें और तन मन से सेवा करें। यही भगवान श्रीकृष्ण का अमृतोपम गोवरधन रूपी मंगलमयी दिव्य सन्देश है। जो सदा पालन करने योग है।

१६. भारत का पतन, वर्ण-व्यवस्था

यह वर्ण व्यवस्था कैसे चली, और कब चली, और इसका प्रभाव भारत पर क्या पड़ा ? इसके विषय में कुछ पाठकों को परिचय कराया जाता है। आदि सृष्टि में पहिले कोई ऐसी वर्ण व्यवस्था नहीं थी कि जैसी आज भयङ्कर रूप धारण किये खड़ी है, और जिसने भीषण सम्प्रदाय का रूप लेकर फूट रूपी कुल्हाड़ी से भारत की स्वतंत्रता को काटना ही मुख्योद्देश्य मान रखा है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जो माने गये हैं वे किस प्रकार माने गये हैं ? वेद में इनकी उत्पत्ति के विषय में ऐसा लिखा गया है कि:— ऋ० मं० १० सूक्त ६०, मंत्र ११ तथा १२ देखो।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य को बाहू कावूरू पादा उच्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत॥

अर्थः—प्रजापति ने मानव समाज रूपी जिस पुरुष का विधान किया उसकी कल्पना कितने प्रकार की हुई ? इस पुरुष का मुख क्या है ? इसके दोनों बाहु कौन हैं ? कौन इसकी दोनों जांघें हैं, तथा इसके दोनों पैर कौन हैं ? इन कतिपयप्रश्नों के उत्तर इस प्रकार कहे गये हैं। इस पुरुष का मुख ब्राह्मण है, बाहु क्षत्रिय हैं, जांघें वैश्य हैं, और पैर शूद्र हैं।

यहां पर मुख, बाहू, जांघ तथा पैरों के कहने से यह नहीं समझना चाहिये कि भगवान का कोई साकार स्वरूप है कि जिसके ये सब अङ्ग माने गये हों, यहां पर ये शब्द केवल अलंकार के रूप में प्रयोग किये गये हैं। इस लिये इनका वास्तविक अर्थ यह है, कि जो अपने बुद्धि बल से समाज के मुखिया बन गये वे ब्राह्मण कहलाये, और जिन्होंने बाहुबल से समाज की रक्षा

की, वे क्षत्रिय कहलाये, और जिन्होंने अपने जांघ के बूते कृषि, वाणिज्य तथा गो सेवा आदि करके समाज का भरण पोषण किया वे वैश्य हुए। तथा जिन लोगों ने इन तीन प्रकार की योग्यताओं में से किसी भी योग्यता का परिचय नहीं दिया, वे समाज की सेवा करके शूद्र संज्ञा के भागी बने। पूर्व अवस्था में इन चार वर्णों की कोई आवश्यकता नहीं थी, एक ही परिवार में अनेक प्रकार के काम धन्धे करने वाले व्यक्ति रहते हुए भी उस परिवार में किसी प्रकार की विषमता नहीं होती थी। जैसा कि आजकल योरुप तथा अमेरिका आदि समुन्नत देशों में पाया जाता है, वहां पर मनुष्य न्यारे न्यारे धन्धे करते हुए भी मानव जाति के नाते से एक माने जाते हैं। अर्थात् वहां पर ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की कोई कल्पना नहीं है। उसी प्रकार हमारे भारत में भी यही सुव्यवस्था थी। अर्थात् वैदिक काल में परस्पर जाति सम्बन्धी कोई भेद भावना न थी न उनमें तज्जन्य कोई राग द्वेष ही था, किन्तु जैसे २ परिस्थिति बदलती गई, तथा जैसे २ आर्यों की जन संख्या, भौगोलिक प्रसार तथा जीवन की आवश्यकताएं और समस्याएँ बढ़ने लगी, तैसे २ यहां के लोग भी इस बात को महसूस करने लगे कि संसार के विविध २ कार्यों को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिये अलग २ दल होने चाहिये कि जिनके सदस्य अपने २ निर्द्धारित कर्मों में विशेष रुचि तथा प्रवीणता रखते हों। इससे समाज में कभी अव्यवस्था न आवेगी, और प्रत्येक व्यक्ति अपनी २ समाज के द्वारा निर्धारित किये हुए कार्यों के करने में सदा तत्पर रहेगा, और अपने किये कुल कार्यों का उत्तरदायित्त्व भी रहेगा। ऐसा सोच विचार कर लोगों ने वर्ण व्यवस्था कायम कर दी। और यह वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म तथा स्वभाव पर निर्धारित की गई थी।

इसका फल यह हुआ कि जो जिस काम में दक्ष निकला, उससे वही काम कराया जाने लगा। और अन्य कामों से उसको छुटकारा मिलता चला गया इस प्रकार प्रत्येक वर्ण अपने २ कर्म में रुचि रखता हुआ पारस्परिक में अनुराग और सहानुभूति बढ़ाता चला गया। इस वर्ण व्यवस्था की उस

समय कोई ठेकेदारी न थी, किन्तु जो जिस कर्म के करने का अधिकारी होता था, उससे वैसा ही कार्य लेते थे, और वह उस कार्य के अनुसार ही वर्ण विभाग में लिया जाता था। यदि कोई मनुष्य ब्राह्मण वर्ण में रहता हुआ उस वर्ण के कार्य में अनधिकारी समझा जाता था तो उसको नीचे वर्ण में डाल देते थे। और नीचे वर्ण में कोई उत्तम अधिकारी समझा जाता था तो उसको उत्तम वर्ण में डाल देते थे। इस प्रकार चारों वर्ण परस्पर में सहानुभूति रखते हुए, अपने २ समाज द्वारा सौंपे हुए कार्यों को सहर्ष संपादन किया करते थे। इस वर्ण व्यवस्था की चार दिवारी इतनी कठोर और दुर्भेद्य उस समय नहीं दिखाई देती थीं। किन्तु अपनी २ योग्यता तथा अयोग्यता के अनुसार ही अपनी उन्नति का द्वार बन्द तथा खुला हुआ रहता था। उस समय मनुष्य अन्य जातियों में पैदा होते हुए भी गुण कर्म तथा स्वभाव के कारण ब्रह्म ऋषि मान लिये जाते थे। जैसे वशिष्ट, पाराशर तथा व्यासादि इसमें प्रमाण देखिये:—महा भारत में लिखा है।

गणिका गर्भ संभूतो वशिष्टश्च महामुनिः।
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तत्र कारणम्॥
जातो व्यासस्तु कैवर्त्याः श्वपाकयास्तु पराशर।
बहवोऽन्येऽपि विप्रत्वं प्रासये पूर्वमद्विजाः॥

अर्थात्:—महा मुनि वशिष्ट वैश्या के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, पर वे तपस्या के कारण ब्राह्मणत्त्व को प्राप्त हो गये। यहां पर संस्कार ही कारण माना जाता है, व्यास कैवर्ती (केवट कन्या) से और पाराशर चांडाली से उत्पन्न हुए थे। इनकी तरह बहुत से दूसरे भी जो ब्राह्मण नहीं थे वे भी अपने शुभ कर्मों के द्वारा ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो गये। इसी प्रकार राजा विश्वामित्र तपस्या करके ऋषि पद अर्थात् ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो गये। कहने का अभिप्राय यह है कि उस समय वर्ण व्यवस्था पर किसी का कोई ठेका नहीं था। अर्थात् सब वर्ण अपनी २ मान मर्यादा पर कार्य करते रहते थे।

किन्तु धीरे २ यह वर्ण व्यवस्था अपने मौलिक महत्व गुण, कर्म तथा स्वभाव को खोकर केवल जन्मगत तथा वंशगत में परिणित हो गया। इसका फल यह हुआ कि इन वर्णों की जो संतान हुई उनकी योग्यता तथा अयोग्यता पर कोई विचार न किया जाकर अपने सम्बन्धित वर्ण की ही उत्तराधिकारिणी मानी जाने लगी। और धीरे २ वर्णों में आलस्य तथा प्रमाद फैलने लगा। ब्राह्मण तथा क्षत्रियों ने अपनी अपनी गुटबन्दी करना शुरू कर दिया और बिचारे वैश्य तथा शूद्रों की उन्नति का द्वार सदा के लिये बन्द कर दिया गया। पंडे पुजारियों का आधिपत्य, दब दबा तथा प्रभाव साधारण जनता पर पड़ने लगा। और हमारा हिन्दू धर्म इन पंडे पुजारियों के द्वारा अन्धविश्वास का कारण बनाया गया। कहीं देवी देवता के नाम पर, कहीं स्वर्ग नरक का भय दिखा कर, कहीं गङ्गा यमुना का भय दिखा कर जनता जगत को उल्लू बनाया गया। और धीरे २ पढ़ने पढ़ाने की प्रणाली बन्द करने के लिये "स्त्री शूद्रो न धीयतामिति" अर्थात् स्त्री शूद्रों को पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसी २ बनावटी श्रुतियों की रचना की जाने लगी। क्योंकि ये लोग जानते थे, कि भविष्य में हमारी संतान यदि मूर्ख रह जाय, और दूसरे लोग पढ़ लिख जांयगे तो फिर हमारी यह पोप लीला न चल सकेगी। इस का परिणाम यह हुआ कि संसार में अविद्या व्यापी, और पढ़ने पढ़ाने की व्यवस्था केवल ब्राह्मणों में ही रह गई। आज हम देखते हैं कि जितने धर्म ग्रन्थ, श्रुति स्मृति तथा पुराणादिक की रचना जो हुई है, वह सब केवल ब्राह्मण के ही द्वारा होती रही है, और प्रशाशन कार्य सूत्र क्षत्रियां के हाथ में रहता रहा, और ईश्वर की कल्पना हटा कर केवल क्षत्रियों में से ही अवतार आदि का होना सिद्ध करते रहे। इस प्रकार संसार के वैश्य तथा शूद्र दोनों समाज उभय पदों से भ्रष्ट समझे जाने लगे।

प्यारे पाठको! ब्राह्मण समाज ने जिस उच्च पद को कठोर परिश्रम तथा तपस्या के द्वारा उपार्जित किया था, अथवा लोक कल्याणार्थ जिन उत्तमोत्तम कामोंका संग्रह किया थी, उनको अपने ही कुल में सीमित रखने

की उन्हें स्वभावतः एक प्रबल इच्छा हो गई, उन्हें फिर यह भय होने लगा कि कहीं भविष्य में ऐसा न हो कि अन्य वर्ण के लोग भी गुण कर्मों के द्वारा उन्नति करते २ हमारे पद को छीन न लें तथा हमारी भावी संतान अयोग्यता के कारण अन्य वर्णों में न ढकेल दी जावे। अतः उन्होंने पूर्व रचित गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था को मिटा कर केवल जन्म सिद्ध स्वतः अधिकार दे दिये, और इन अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिये तथा अन्य वर्ण की जनता को बहकाने के लिये अपनी ब्राह्मण जाति के महात्म्य में निम्नलिखित श्लोकों की रचना करनी शुरु करदी।

ब्राह्मणो जायमानोहि पृथिव्या मधि जायते।
ईश्वरः सर्व भूतानाम् धर्म कोशस्य गुप्तये ॥
सर्वस्वं ब्राह्मणस्येद यत्किंचिज्जगती गतम्।
श्रैष्ट्येनाभिजनेनेदं सर्वं वै ब्राह्मणोऽर्हति ॥
स्वमेव ब्राह्मणो भुंक्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च।
आनृशंस्याद ब्राह्मणस्य भुंजते हीतरे जनाः ॥

अर्थात्:—ब्राह्मण जन्म लेते ही पृथ्वी के समस्त जीवों में श्रेष्ट होता है, वह सब प्राणियों का ईश्वर है और धर्म के खजाने का रक्षक है। और इस जगत में जो कुछ सम्पति है, वह सब ब्राह्मण की ही निजी सम्पति है, वह सब ब्राह्मण की ही निजी सम्पत्ति है, अपने उत्तम जन्म के कारण ब्राह्मण सकल सम्पत्तियों के पाने योग्य है। ब्राह्मण यदि पराया अन्न भोजन करता है, पराया वस्त्र पहिनता है, और पराये के धन को लेकर दूसरे को देता है, तो वे सब उसके ही अन्नादि हैं, क्योंकि अन्य सब लोग ब्राह्मण की दया से ही भोजनादि पाते हैं। मनु० अ० १ श्लोक ६६, १००, १०१ में देखो। अब देखिये इन ब्राह्मणों की लीला एक तरफ तो लिखते हैं कि:—

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।
वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ॥

का प्रतिफल हम ही को मिल कर सुख पावेंगे, और एक जमाना आवेगा कि जब विद्या का बोल बोलेगा और हमारी इन सारी करतूतों का भंडा फोड़ हो जावेगा। ऐसी हालत में यदि ये लोग ऐसा समझते तो फिर कभी ऐसा अन्याय तथा अत्याचार न करते।

प्यारे पाठको पूर्व जमाने में सब पुस्तकें तथा धर्मशास्त्र इन्हीं लिखित होते थे, और अन्य जातियों से पढ़ने का द्वार बन्द कर दिया था. लेखक स्वयं विद्वान होते थे, अतः इन्होंने जो कुछ भी संसार से स्वार्थ की पूर्ती करनी चाही तो उसी विषय के श्लोकों की रचना कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर लिया। आज इन्हीं स्वार्थी लेखकों के हजारों श्लोक धर्म ग्रन्थों में विक्षिप्त रूप में भरे पड़े दीख पड़ते हैं। इन्हीं इन श्लोकों के पकड़ने की सीधी सच्ची बात यह है कि जहां २ न्याय विहीन तथा कुबुद्धि को बढ़ाने वाली मलीन बातें पाई जावें, वहां २ समझ लेना चाहिये कि स्वार्थी ब्राह्मणों की अपने निज के स्वार्थ के लिये रचना की गई है। इन स्वार्थी ब्राह्मणों ने यहीं तक अन्याय नहीं किया, किन्तु ये लोग कुछ भी पाप कर डालें, अथवा किसी को धोखा देवें, या किसी को मार डालें, तब भी उनके ऊपर कोई राज-नैतिक तथा धार्मिक विधान लागू न हो सके। ऐसा सोच समझ कर उन्होंने अपने ऊपर से सारे राजनैतिक कानूनों को रद्द करवा दिया गया, अर्थात् कोई राज व्यवस्था इनको किसी अपराध में दंड न दे सके। देखिये मनु० अध्याय श्लोक १२४ में लिखा है कि:—

दश स्थानानि दण्डस्य मनु० स्वायंभुवो ऽ ब्रवीत्।
त्रिषु वर्णेषु यानि स्युरक्षतः ब्राह्मणो व्रजेत्॥

अर्थात् महापराध में मनुजी ने मूत्रेन्द्रिय आदि जो दश स्थान दंड के वर्णन किये हैं, वे क्षत्रिय आदि केवल तीन वर्णों के लिये ही है। ब्राह्मण इन शारीरिक दंडों से मुक्त है। अब भला बतलाइये ! कि जिस जाति को प्रतिबन्ध रहित स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता तथा स्वेच्छाचार पूर्वक भोगों का

अधिकारी मिल जाय तो वह जाति कब तलक स्वार्थ अन्याय पूर्ण दोषों से बच सकती है, यह पाठक ही जान सकते हैं। तुलसीदास जी ने भी कहा है कि "प्रभुता पाई काहि मद नाई" अर्थात् प्रभुता पाकर किसे मद नहीं हुआ अर्थात् सभी मदोन्मत्त होजाते हैं। यही हाल ब्राह्मणों का हुआ। क्योंकि जिस जाति में आवश्यकता से अधिक विद्या, आवश्यकता से अधिक धन व वैभव प्राप्त होते हैं वहाँ आलस्य और प्रमाद बढ़ते हैं; आलस्य और प्रमाद में फँसा हुआ मनुष्य अपने सत पथ से भ्रष्ट होजाता है। इस प्रकार लोगों ने वर्ण व्यवस्था में कर्म प्रधान न रखते हुए जन्म प्रधान रखा। फिर भी इन लोगों को यह भय बना रहा, कि कहीं हमारी करतूतों का पता लगाकर अन्य वर्णी लोग उस वर्ण व्यवस्था को पुनः कर्म व्यस्वथा में परिणित न कर देवें। अतः उन लोगों ने इसको और भी दृढ़ बनाने के लिये राज्य व्यवस्थापकों द्वारा कठिन प्रतिबन्ध चालू कराये, ताकि भविष्य में कोई भी मनुष्य अपने सिद्ध वर्ण व्यवस्था से तनिक भी बाहिर न निकलने पावे।

इस वर्ण व्यवस्था को जन्म प्रधान मान लेने से जो हमारे देश का पतना हुआ है वह पाठकों से किसी प्रकार छुपा नहीं है। जब इसके दृश्य सामने आ जाते हैं तो क्रोध और शोक से हृदय उद्विग्न हो जाता है। इस जन्म मूलक वर्ण व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का वर्ण तथा कर्म उसके वैयक्तिक योग्यता व अयोग्यता पर नहीं बल्कि कुल विशेष वा जाति विशेष में उसके जन्म लेने पर निर्भर हो गया। और राजकीय प्रतिबन्ध द्वारा इसको और भी सुदृढ़ करवा दिया गया ताकि कोई भी मनुष्य अपने से ऊंची जाति का कर्म नहीं कर सकता, देखिये मनु० अध्याय १० श्लोक ९६ पढ़िये:—

यो लोभादधमो ज्यात्या जीवेदुत्कृष्ट कर्म्मभिः।
तं राजा निर्धनं कृत्वा क्षिप्रमेव प्रवासयेत्॥

अर्थात्:— यदि कोई नीच जाति का व्यक्ति लोभ वश ऊंची जाति की जीविका करे तो राजा उसका सर्वस्व छीन कर उसे शीघ्र ही देश से निकाल

दे। अब देखिये कितना कठोर दण्ड बिचारे नीच जातियों के मनुष्यों के लिये लिखा है, क्या यह शासक वर्ग का अन्याय नहीं है ? इसका परिणाम यह हुआ कि संसार में केवल ब्राह्मण और क्षत्रियों का ही स्वार्थ सिद्ध होता रहा, और बिचारे अन्य वर्ग वैश्य तथा शूद्रों की उन्नति में यह बड़ा बाधक सिद्ध हुआ। किन्तु भविष्य में आकर इस स्वार्थ पूर्ण अत्याचार ने इन दोनों ही वर्गों के प्राणियों को आलस्य तथा प्रमाद में रत कर दिया। यदि वैश्य और शूद्रों की उन्नति कानून द्वारा बन्द न की जाती तो क्या वैश्य तथा शूद्र बिचारे शूरवीर व विद्वान बन कर न निकलते। आज तक वैश्य बिचारे डरपोक ही बने रहे और शूद्र बिचारे अपना जीवन मूक पशुओं की तरह चला रहे हैं यह ब्राह्मण तथा क्षत्रियों का अन्यायपूर्ण कानून का ही प्रतिफल है। इस प्रकार भविष्य में ब्राह्मण और क्षत्रियों की गुटबन्दी होती चली गई, और हिन्दू जाति दो वर्गों में विभक्त हो गई। शासक वर्ग अर्थात् स्वराज्य वादी। साम्राज्य वादियों में ब्राह्मण और क्षत्रिय कहलाये और स्वराज्य वादियों में वैश्य तथा शूद्र रह गये कि जो अपने स्वराज्य प्राप्ति विषयक अधिकारों के लिये इन दोनों की ओर मुंह ताकते ही रह गये। फिर आगे जाकर इन दोनों साम्राज वादियों ने अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने के लिये आपस में यह मन्त्रणा करनी शुरू की। इनकी मन्त्रणा के विषय में मनु० अध्याय ९ श्लोक ३२२ में लिखा है कि:—

ना ब्रह्म क्षत्र मृघ्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्द्धते।
ब्रह्म क्षत्रं च सम्पृक्तमिह चामुत्र वर्द्धते॥

अर्थात्:— ब्राह्मण विहीन क्षत्रिय कभी भी वृद्धि नहीं पा सकता, और ब्राह्मण भी क्षत्रिय के बिना वृद्धि नहीं पा सकता।

परस्परं भावयंतः श्रेयः परमुवपस्यथः।

अर्थात् परस्पर के भाव से मनुष्य परम कल्याण को प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार ब्राह्मणत्त्व और क्षत्रियत्त्व एकत्र मिलने पर इस लोक और परलोक में परस्पर वृद्धि पाते हैं।

इस प्रकार जब इस शासक वर्ग अर्थात् साम्राज वादियों में परस्पर गुट बन्दी हो गई तब इन्होंने इसको भविष्य में स्थाई बना रखने के लिये परस्पर में दृढ़ प्रतिज्ञायें की गई। ब्राह्मणों ने क्षत्रियों से प्रतिज्ञा की, कि हम तुम्हारे पूर्वजों को मन्दिर बनवा कर पूजेंगे और लोगों से ईश्वर का अवतार बतलाते हुए उनकी पूजा चालू करेंगे; किन्तु इन मन्दिरों में जो कुछ ईश्वर के नाम पर चढ़ावा व भोग पदार्थ मिलेंगे उसके लेने के अधिकारी हम होंगे। और इन मन्दिरों का ठेका सदा के लिये हमारा ही रहेगा। इस पर क्षत्रियों की प्रतिज्ञा यह हुई कि जो कोई अन्य जाति तुम्हारे स्वार्थ पूर्ण कार्यों की पूर्ति में रोड़ा अटकावेगी उसको हम राजनैतिक प्रतिबंध द्वारा अथवा शासन शक्ति द्वारा दूर करके तुम्हारी रक्षा करेंगे। इस प्रकार साम्राजवादी आपस में दृढ़ प्रतिज्ञ करते हुए अन्य शासित वर्ग वैश्य तथा शूद्रों पर अनधिकार चेष्टा करते रहे। और अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये अनेकों प्रकार के टेक्स लगाये। पाठक आज आप देख सकते हैं कि ब्राह्मणों के जनता जगत पर इतने टेक्स लगाये दीख पड़ते हैं, कि मनुष्य जन्म से मरण पर्य्यन्त देता २ समाप्त हो जाय तब भी उनके टेक्स चालू ही रहते हैं। अर्थात् जीते जी तो बिचारा मनुष्य स्वयं ही उनके टेक्सेज चुकाता है, और मरने के पश्चात् उसके कुटुम्बी स्वर्ग तथा नरक के बहाने चुकाया ही करते हैं। इन साम्राजवादियों के अनेकों प्रकार के टेक्सेज जनता जगत पर लादे गये हैं।

प्यारे पाठको! साम्राजवादी लोग इतने टेक्सेज लगा कर ही चुप नहीं रह गये, अर्थात् इतने से ही इनका पेट न भरा, किन्तु बलात्कार से भी उनका धन लूटने के लिये आर्डिनेन्स कायम किये। अब जरा आप इनके आर्डिनेन्सेज पर ध्यान दीजिये:—मनु० अ० ११ श्लोक १२ में लिखा है कि:—

यो वैश्यः स्याद् बहु पशुर्हीन क्रतु रसोमपः।
कुटुम्बात्तस्य तद्द्रव्यमाहरेगज सिद्धये॥

अर्थात्:—जिस वैश्य के पास बहुत से पशु हों और वह यज्ञ से हीन तथा सोम रस का न पान करने वाला हो उसका धन (क्षत्रिय और विशेष कर ब्राह्मणके) यज्ञ को पूरा करने के लिये छीन लेवे। पासमें प्रचुर धन रखते हुए भी जो वैश्य अपनी कंजूसी के कारण यज्ञादि शुभ कर्म न करे तो उसका धन जबर्दस्ती से छीन कर किसी ब्राह्मण वा क्षत्रिय के यज्ञ में खर्च कर देवे। अब देखा आपने कठिन आर्डिनेन्स। "राजा होय चोरी करे न्याय कौन पर जाय," इस कहावत के अनुसार आप ही तो शासक बन कर आर्डिनेन्स निकाले, और आप ही उसके द्वारा माल उड़ावें। अब देखिये:—इस यज्ञ से अधिक लाभ किसको पहुँचता है तो कहने पड़ेगा कि इन्हीं पन्डे पुजारियों को। क्योंकि इस यज्ञ के बहाने पूड़ी, कचौड़ी, मालपूवे तथा तस्मै आदि हविष्य पदार्थ खाने को मिलते हैं, नाना प्रकार के शाल दुशाले तथा कीमती कीमती वस्त्र अनायास प्राप्त हो जाते हैं। सुन्दर २ दुधारू गायें दूध पीने को मिल जाती हैं, और दान दक्षिणा के बहाने मोटी २ रकमें अर्थात् सोना चांदी प्राप्त हो जाते हैं, कहने का अर्थ यह है कि ये पड़े और पुजारी यज्ञ के नाम पर, धर्म तथा ईश्वर के नाम पर और संस्कृति के नाम पर अन्धविश्वासिनी हिन्दू जनता को स्वर्ग नरक का बहाना बना जनता की गाढ़ी कमाई पर खूब मौज उडा रहे हैं। और विचारे भोले जीवों के रक्त को जौंक बन कर खून चूस रहे हैं। धनवान वैश्य यदि स्वयं यज्ञादि किया करता है तो उसका धन ब्राह्मणों के हक में लगता रहता है, इसलिये इनको इस वैश्य के लूटने को आवश्यकता नहीं है, किन्तु लूटा कौन वैश्य जाता है? कि जो इन पंडे पुजारियों को दान, मानादि के द्वारा खुश नहीं रखता। अब पाठक विचार सकते हैं कि इनमें और डाकू में क्या अन्तर है? डाकू को तो विचारे को पकड़े जाने का भय, मृत्यु का भय तथा और भी कई प्रकार के भय सदा बने ही रहते हैं। किन्तु इनके डाका देने के समय किस माई के लाल की हिम्मत थी कि जो इनको रोक सके। अतः ये लोग निडर और निर्भीक बन कर जनता जगत को धोखा देकर लूटते ही रहते हैं।

अब इन्होंने सोचा कि वैश्य को तो यज्ञ का बहाना बता कर लूटने का आर्डिनेन्ड बना लिया, किन्तु विचारे शूद्र को किस बहाने लूटें, क्योंकि शूद्र को तो यज्ञ करने का भी अधिकार नहीं है। अतः इन्होंने वैश्यों की अपेक्षा उनके साथ और भी कठिन बर्ताव किये गये, और यहां तक अत्याचार कर डाला कि उनका धनोपार्जन ही निषिद्ध करार दे दिया गया, और ब्राह्मणों को आज्ञा दी गई कि वे शूद्रों का धन जब चाहें तब ही लूट लिया करें। देखिये आज्ञा पत्र मनु० अ० १० श्लोक १२६ तथा अ० ८ श्लोक ४१७।

शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धन संचयः।
शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव बाधते॥
विस्रब्धं ब्राह्मणः शूद्राद् द्रव्योपादान माचरेत्।
नहि तस्यास्ति किंचित्स्वं भर्तृ हार्य धनोहि सः॥

अर्थात्:—समर्थ हो कर भी शूद्र धन का संचय न करे; क्योंकि धन पाकर शूद्र ब्राह्मण को पीड़ा पहुंचाता है। ब्राह्मण को उचित है कि वह शूद्र का धन बिना किसी भय या संकोच के ले लेवे। क्योंकि शूद्र का अपना कुछ नहीं है। उसका धन मालिक द्वारा हरण करने से रोका, फिर उसके धन को भी हड़प कर लिया अब भला बताइये कि ऐसा निर्दयता का व्यवहार कसाई पशु के साथ भी नहीं कर सकता, सो निर्दयता का व्यवहार मानव समाज में ब्रह्म कहलाने वाले ब्राह्मणों का है। इनमें और कसाई में क्या भेद रहा? कहा भी है कि "दया बिन सन्त कसाई"। प्यारे पाठको विचारे शूद्र को तो लोगों ने ऐसा दबाया कि इसको तो आज तक सम्भलने ही नहीं दिया। क्योंकि ये लोग जानते थे कि शूद्र के पास में यदि धन तथा विद्या हो जायगी तो ब्राह्मणों की गुलामी कौन करेगा? इन लोगों ने शूद्रों को दासता की चक्की में सदा पीसते रहने के लिये ही ऐसे २ अमानुषिक कानून बनाये, और वैश्य तथा शूद्रों को अपने २ कर्म में सदा जुटाये रखने के लिये भी कानून बनाये गये। देखो मनु० अ० ८ श्लोक ४१८ तथा अ० १० श्लोक ६६।

वैश्य शूद्रो प्रयत्नेनस्वानि कर्माणि कारयेत् ।
तौ हि च्युतौ स्वकर्मभ्यः क्षोभयेतामिदं जगत् ॥

अर्थात्ः—राजा को चाहिये कि वैश्यों और शूद्रों को अपने २ कर्मों में यत्नपूर्वक लगाये रहे, क्योंकि यदि वे अपने २ कर्मों से भ्रष्ट होंगे अर्थात् उन्हें छोड़ देंगे तो ये जगत को व्याकुल कर देंगे। फिर आगे देखो इसके लिये कर्म छोड़ने पर कैसे कठिन दण्ड की व्यवस्था की है।

यो लोभादधमो जात्वा जीवेदुत्कृष्ट कर्मभिः।
तं राजा निर्धनं कृत्वा क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ॥

अर्थात्ः—यदि कोई नीच जाति का व्यक्ति लोभ में पड़ कर ऊंची जाति की आजीविका करे तो राजा उसका सर्वस्व छीन कर उसे शीघ्र ही देश से निकाल दे। अब देखियेः—ये तो करतूत हैं इन साम्राजवादी ब्राह्मण तथा क्षत्रियों की। हमारा देश क्यों उत्तरोत्तर हीन अवस्था को प्राप्त होता चला गया ? तो कहना पड़ेगा कि शासक वर्ग के कठिन अमानुषिक अत्याचारों से। इस प्रकार शास्त्रकारों ने ऐसे २ कानून बना कर वैश्य और शूद्रों के लिये उन्नति का द्वार सदा के लिये बन्द कर दिया। क्या भारत में हिन्दू धर्म के अतिरिक्त और भी कोई दूसरा धर्म है कि जो अपने भाइयों को लूटने की अनुमति देता हो अथवा अपने भाइयों को उन्नति करने में किसी के आगे रोड़ा अटकाता हो। ईस्लाम, इसाई, बौद्ध तथा जैन आदि कितने ही धर्म हैं किन्तु इनके धर्म शास्त्रों में कभी भी अपने सहधर्मियों को लूटने की तथा नीचे गिराने की किसी को भी आज्ञा नहीं दी। इनके यहां पर धार्मिक दृष्टि से सभी धर्म बराबर हैं, इनमें न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। सभी को उन्नति करने का समानाधिकार है। उनके अधिकारों को किसी भी धार्मिक आदेश के बहाने कोई छीन नहीं सकता। यही कारण है कि उनमें परस्पर इतना प्रेम, सहानुभूति तथा सुदृढ़ संगठन है।

प्यारे पाठको, संसार में कोई भी ऐसा देश तथा धर्मशास्त्र नहीं है कि जो अपने सहधर्मियों को धर्म और ईश्वर के नाम पर धोखा देकर लूटते देखे जाते हों। किन्तु हमारा ही देश ऐसा है, कि जिसने धर्म और ईश्वर के नाम पर लुटेरापन कायम किया, तथा लोगों को धोखा देकर पेट पालने की अनेकों स्कीम तैय्यार की; ये सब बातें हमारे देश में मूर्खों ने नहीं की, किन्तु विद्वता का दावा रखने वाले अथवा धर्म के ठेकेदार बनने वाले पंडे पुजारियों द्वारा की गई, कि जो आज तक उसी कुकृत्य को करते हुए अपना पेट पाल रहे हैं, और ऐसे निर्लज्ज हो गये हैं कि इन्होंने अपनी स्वार्थ सिद्धि के निमित्त किसी दूसरे के हित पर ध्यान ही न दिया। देश चाहे रसातल को प्राप्त हो जावे, गरीब प्राणियों को चाहे कितने ही कष्ट झेलें, किन्तु इनके आनन्द में कोई कमी न होने पावे। बस यही इनका मूल सिद्धान्त है, और यही इनके बीज मंत्र हैं। जब इन्होंने वैश्य तथा शूद्रों को लूटने के लिये बड़े २ आर्डिनेन्स कायम कर लिये, और जब देखा कि इन पर अब हमारा पूर्ण सोलह आना अधिकार चल चुका है; किन्तु फिर भी इनको इतने पर संतोष न हुआ, क्योंकि इन्होंने सोचा कि भविष्य में कदाचित जमाना बदल जावे, और विद्या की लाइट द्वारा कोई इनको हमारी नकलियत का भाव करावे, तो हमारे आनन्द में कमी हो जावेगी। प्यारे पाठको! कहावत प्रसिद्ध है कि 'चोर की दाढ़ी में तिनका' इससे इनको सदा भय और शङ्का ही बनी रही। और इन सब की निवृत्ति निमित्त धर्म शास्त्र के रूप में कानून बनाते रहे, और जब धर्म शास्त्र के कानूनों से भी काम न चलता देखा, तब राजाओं द्वारा आर्डिनेन्स चालू कराने लगे। हम पहिले पाठकों को लिख कर बता चुके हैं कि इन्होंने अपने ऊपर से तो सारे कानूनी विभाग उठवा लिये थे। अब ये कानूनी विभाग लागू होते थे तो बिचारे वैश्य और शूद्रों पर। क्षत्रिय लोग क्योंकि शासक वर्ग के लोग थे और ब्राह्मण तथा क्षत्रियों में परस्पर गुटबन्दी थी। अतः इनको अपने २ मार्गों में पूर्ण स्वतन्त्रता थी।



१७. पैशाचिक प्राण दंड की व्यवस्था

वैश्य और शूद्रों को लूटने का आर्डिनेन्स पास हो ही चुका था। और इनके रक्त को चूस २ कर ब्राह्मण लोग अपने पेट को पाल ही रहे थे, किन्तु इतने से इनकी तृप्ति न हुई। कहावत प्रसिद्ध है कि "मारे और रोने न दें"। ये लोग बिचारों पर इतना अत्याचार करें और वे बिचारे उफ! कहकर इनकी ओर अंगुली भी न दिखा सकें, और यदि कोई रोवे चिल्लावे अथवा इनका सामना करें तो और भी कठिन दंड की व्यवस्था में आजावें। वे कठिन दंड क्या थे? पाठक इनको निदर्शन करें? तो आपको ज्ञात होगा कि कसाइयों में और इनमें कोई अन्तर नहीं है। जरा सुनियेः—

शतं ब्राह्मण माक्रुश्य क्षत्रियो दण्ड मर्हति।
वैश्योप्यर्द्धं शतं द्वेवा शूद्रस्तु वधमर्हति॥

अर्थः— यदि क्षत्रिय किसी ब्राह्मण को दुर्वचन कहे तो उस पर एक सौ पण दण्ड लगावे, इसी अपराध पर वैश्य से १५० या २०० पण का दंड लेवे, किन्तु शूद्र तो इस अपराध के लिये वध्य ही हैं अर्थात् जान से मार देना चाहिये। एक पण कितने का होता है सो सुनियेः— "अशीतिभिर्वराटकैः पण इत्यभिधीयते" अर्थात् ८० कौड़ियों का एक पण होता है, हमारे यहाँ अभी एक पैसे में १६ गन्डे अर्थात् ६४ कौडियां आती थी, जिसके हिसाब से पण सवा पैसे के लगभग होता है। अब देखिये! इस हिसाब से जिस अपराध के लिये क्षत्रिय को केवल १०० पण अर्थात् १२५ पैसे= १॥।≡)। और वैश्य को अधिक से अधिक इसका दुगुना अर्थात् ३॥।=)॥ जुर्माना होता था, और शूद्र बिचारे को उसी अपराध के लिये अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता था। यह कितना बड़ा अपराध तथा भयङ्कर अत्याचार था। फिर आगे देखियेः— मनु० अध्याय ८ में।

एक जाति र्द्विजातोस्तु वाचा दारुणया क्षिपन्।
जिह्वायाः प्राप्नुयाच्छेदं जघन्य प्रभवो हिसः॥

अर्थः—यदि शूद्र जाति ब्राह्मणादि तीन वर्णों को कटोर वचन कहे या आक्षेप करे तो उस शूद्र की जीभ काट लेनी चाहिये; क्योंकि वह सबकी अपेक्षा नीच वर्ण में उत्पन्न हुआ है। पुनः देखियेः—

धर्मोपदेशं दर्पेण विप्रमाणामस्य कुर्वतः।
तप्तमासे च येतैलं वक्त्रे श्रोते च पार्थिवः॥

येन केन चिदङ्गेन हिंस्याच्चेच्छ्रेष्ट मन्त्यजः।
छेत्तव्यं तत्तदेवास्य तन्मनोरनुशासनम्॥

पाणि मुद्यम्य दण्ड वा पाणिच्छेदन मर्हति।
पादेन प्रहरन् कोपात् पादेच्छेदेन मर्हति॥

सहासन मभिप्रेप्सु रुत्कृष्ट स्यापकृष्टजः।
कट्या कृताङ्कः निर्वास्य स्फिचं वास्यान कर्त्तयेत्॥

अवनिष्ठीवतो दर्पाद् द्वावोष्टौ छेदयेन्नृपः।
अवमूत्रयतो मेढ्र मवशर्धयतो गुदम्॥

केशेषुगृह्ण तो हस्तौ छेदयेद विचारयन्।
पादयोर्दाढिकायां च ग्रीवांया वृषर्णेषुच॥

मार्जार नकुलो हत्वा चापं मंडूक मेवच।
श्वगोधोलूक काकांश्च शूद्र हत्याव्रतं चरेत्॥

अर्थः— शूद्र यदि किसी द्विज का नाम तथा जाति का उच्चारण करता हुआ, जैसे देवदत्त ब्राह्मण अधम है, इस प्रकार बोलता हुआ निन्दा करे, तो उसके मुंह में दश अंगुल की आग में लाल की हुई लोह की कील घुसेड़ देवे॥ १॥ यदि शूद्र गर्व से, "तुमको यह धर्म करना चाहिये" ऐसा धर्मोपदेश ब्राह्मण को करे, तो उस शूद्र के मुंह और कान में राजा तप्त तेल डलवादे॥ २॥ शूद्र हाथ पैर आदि जिस अंगसे श्रेष्ट जाति के ऊपर प्रहार करे तो राजा उसको वही अंग कटवादे, यह मनुकी आज्ञा है॥ ३॥ शूद्र

यदि श्रेष्ठ जाति को मारने के लिये हाथ वा डंडा उठावे तो उसका हाथ कटवा लेना चाहिये, और यदि क्रोध में आकर चरण से प्रहार करे तो उसका पैर कटवा लेना चाहिये। ॥ ४ ॥ शूद्र यदि ब्राह्मण के साथ एक आसन पर बैठे तो राजा उसकी कमर में तपाई हुई लोह की शलाका से दाग कर उसे देश से निकाल देवे, अथवा उसका चूतड़ कटवा देवे ॥ ५ ॥ शूद्र यदि दर्प से किसी ब्राह्मण के शरीर पर थूक दे तो राजा उसके दोनों होंट कटवादे, यदि पेशाव करे तो मूत्रेन्द्रिय को और अधोवायु छोड़े तो गुदा को कटवाले ॥ ६ ॥ शूद्र यदि अहंङ्कार से किसी ब्राह्मण का केश, चरण, दाढ़ी, गरदन वा अण्डकोष पकड़े तो राजा बिना विचारे उसका हाथ कटवाले ॥ ७ ॥ बिल्ली, नेवला, नीलकंठ, मेंढ़क, कुत्ता, छिपकली, उल्लू और काग को हत्या करने पर प्रायश्चित करे। अभिप्राय यह है कि मनु के मत में शूद्र की जान कुत्ता बिल्ली की जान से बढ़ कर नहीं है। ॥ ८ ॥

प्यारे पाठको ! यह हमारे भारत का धर्म कानून (Religious Law) है। ऐसी राक्षसी दण्ड व्यवस्था क्या किसी अन्य धर्माऽवलम्बियों में किसी भी जगह पासकते हैं। जिस देश में मनुष्य को शूद्र बना कर उसको कानूनी हथकंडों में जकड़ उसके सारे मनुष्योचित अधिकारों को अपनी मुट्ठी में ले लेवें, तथा उसकी हालत को पशु से भी बदतर बना देवे। तो वह देश अपनी मान मर्य्यादा स्थिर रखकर कब तक जीवित रह सकता है। यह बुद्धिमान ही समझ सकते हैं। प्यारे सज्जनो ! न तो यह धर्म है और न राजनीति यह तो केवल ब्राह्मणों का रचा हुआ पाखन्ड रूपी दुर्ग है कि जिसको फांद कर कोई भी मनुष्य इनकी अमानुषिक पोप लीला से बाहिर न जा सके। और इनके संसारिक सुख रुपया पैसा, हलवा, पुड़ी तथा मलाई आदिक किसी भी पदार्थ में कमी न आवें। अब इनसे पूछना चाहिये कि जब वशिष्ट, विश्वामित्र तथा पाराशर अन्त्यज योनियों से पैदा होकर भी शुद्ध ब्राह्मण तथा ऋषि कहला गये, तो फिर विचारे भोले मनुष्यों ने ही तुम्हारा क्या अपराध किया, कि जो इनको आजीवन पुस्त दर पुस्त शूद्र ही बनाये रखने के लिये

इतने कठिन २ आर्डिनेन्स जारी करवाते हुए कठिन यान्त्रणाओं के बीच में कस दिया। अर्थात् इनकी शारीरिक, मांसिक तथा आत्मिक उन्नति में रोड़ा अटकाने के लिये कुठार रूप क्यों बनें? क्या यह तुम्हारा मनुष्यपन है कि आज भारत में १६ करोड़ मनुष्य के लगभग शूद्र कहला कर तुम्हारी जान को रो रहे हैं। और करीब १० करोड़ या १२ करोड़ के लगभग तुमसे जान छुड़ाने के निमित्त विधर्मी बन कर ईसाई तथा मुसलमान कहला रहे हैं। और फिर भी तुम उसी जाल को फैलाये हुए बिचारे भोले लोगों का रक्त चूस २ कर धर्म और ईश्वर की ठेकेदारी में हलवा, पूड़ी, तथा मलाई उड़ाते हुए संसारिक भोग भोगने में दृढ़ संलग्न हो रहे हो। भाइयो! तुमको ये मौजें तो और दूसरे संसार में करने योग्य बहुत से कार्य हैं, उनको विधिवत संपादन करने से भी मिल सकती हैं। देखो! एक व्यापारी है, वह अपने पुरुषार्थ द्वारा नाना प्रकार के व्यापारों को चलाता हुआ लाखों करोड़ों रुपया कमा कर डाल देता है, सैकड़ों महल महलायत बना लेता है. और उनमें संसार भर की भोग सम्बन्धी सामग्रियां एकत्रित करके सर्व प्रकार के भोगों को आनन्द से भोगता है। इसी प्रकार यदि तुम्हारी भी संसारिक पदार्थों के संग्रह करने की अथवा भोग भोगने की इच्छा हो तो तुम भी उसी के समान किसी भी सीधे सच्चे कार्य की साधना में लग जावो, और बड़ी खुशी से भोग भोगो, महल बनाओ, रुपया पैसा इकट्ठा करो। तुमको कोई भी व्यक्ति दोष न देगा। दोष तो तुमको जब ही दिया जाता है कि जब तुम ईश्वर और धर्म के नाम पर लोगों को हर तरह से धोखा देकर उनके द्वारा बड़े २ निवास बनाते हो, उनमें बड़े २ वैषयिक पदार्थों को एकत्रित करके संसारिक भोग भोगते हो, दर्जनों बच्चा पैदा कर देने पर भी लोगों को जितेन्द्रियता का ढोंग दिखाते हो। बस यही कारण है कि आज संसार तुमको घृणा की दृष्टि से देख रहा है।



१६. हमको ब्राह्मण शब्द प्रिय क्यों है ?

पूर्व जमाने की तो भगवान जानें, किन्तु आजकल ब्राह्मण शब्द जो हमको प्रिय हो रहा है, उसका कारण यह है कि इस ब्राह्मण शब्द के नाम पर हमको आवश्यकता से कहीं अधिक भोग सामग्रियां, मान प्रतिष्ठा तथा द्रव्यादि का सुपाश मिल रहा है, इसलिये ये शब्द हमको बहुत प्रिय हो रहा है। अन्य जातियां भी जो ब्राह्मण बनना चाहती हैं; उसका भी मुख्य कारण यही है कि सब लोगों को विना हाथ पैर हिलाये मान प्रतिष्ठा तथा द्रव्य की अनुकूलता मिल जावे, इससे बढ़ कर दूसरा साधन क्या हो सकता है। इस प्रकार यह ब्राह्मण शब्द लोक में प्रिय बना है। किन्तु इसका संपादन बुरी तरह से किया जा रहा है, इसलिये लोक में इसकी निन्दा भी हो रही है। यदि आज ब्राह्मण शब्द के नाम से दिखावटी संसारिक भोग तथा द्रव्यादि की बहुतायत को दूर कर दी जावे, और फिर पूछा जावे कि कौन र ब्राह्मण बनना चाहता है, तो मेरी समझ में कोई भी ब्राह्मण बनना स्वीकार न करेंगे। और दूसरा तो क्या जो ब्राह्मण बने हुए हैं, उनसे भी यदि संसारिक भोग तथा द्रव्यादिकों की बहुतायत को दूर कर दो, तो ये लोग भी अपने ब्राह्मण शब्द से त्याग पत्र दे देंगे। इससे विदित होता है कि ये दोनों प्रकार के ब्राह्मण हैं कि जो केवल ब्राह्मण के नाम पर मौज उड़ाना चाहते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि जब इन दोनों की नाम धारी संज्ञा हो गई, तो फिर शुद्ध ब्राह्मण किसको कहते हैं ? तो इसका उत्तर यह है कि जो संसारिक भोग सम्बन्धी पदार्थों से दूर है, अर्थात् पदार्थों के सग्रह से दूर है और आवश्यकता से अधिक प्राप्त होने वाले द्रव्य का त्यागी है, तपस्वी और विद्वान है तथा ईश्वर और धर्म का उपयोग अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये नहीं किन्तु जनता जगत की भलाई के लिये है। ऐसा जितेन्द्रिय, त्यागी तथा जनता के हितार्थ काम करने वाला है वह कोई भी वर्ग का मनुष्य होवे, सभी ब्राह्मण कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं। और ब्राह्मण नाम धराने वालों में यदि ये गुण न हों तो जनता को सदा बहिष्कृत

करने योग्य है। क्योंकि नामधारी ब्राह्मण केवल जनता जगत को धोखा देने के लिये ही पैदा हुआ है। यदि इस दृष्टि से ब्राह्मणों की परीक्षा की जावे तो ब्राह्मण वर्ग का बहुत शीघ्र ही निश्चित हो सकता है। अब मैं आपको इसका स्पष्टीकरण कर देता हूँ, सुनियेः—

मन्दिर और देवालय के पुजारियों को ब्राह्मण शब्द क्यों प्रिय है, ौर देवता से इनका क्या सम्बन्ध है? इसका उत्तर यह है कि इस ब्राह्मण की छाप लगी रहने से इनके हाथ में मन्दिर और देवालय आ जाते हैं। देवता तथा ईश्वर के नाम पर इनको आवश्यकता से अधिक द्रव्य तथा ारिक भोग प्राप्त होते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मन्दिरों के पुजारियों देवताओं के प्रति पेट पालने का ही सम्बन्ध है। अब इनकी परीक्षा कैसे हो? तो सुनियेः—यदि मन्दिरों में से दिखावटी भोग सामग्रियां, तथा द्रव्य की बहुतायत और जागीरी रूप में प्रदान की हुई गांव तथा जमीनें पुजारियों के हाथ से छुड़ाली जावें और पुजारी का साधारण भोजन वस्त्र का प्रबन्ध कर दिया जावे तो मेरी समझ में सब की पुजारी बनने की इच्छा निवृत्त हो जावेगी। आज ठाकुरजी के नाम पर जो नाना प्रकार के व्यञ्जन बना कर भोग लगाये जाते हैं तथा दूध रबड़ी चढ़ाई जाती है। इसके विषय में पुजारी खूब जानता है कि यह पदार्थ ठाकुरजी के नाम पर मेरे खाने के काम में आवेगा, इसलिये बड़े प्रेम से बना कर ठाकुरजी को भोग लगाता है। यदि इनके भोग लगाये हुए पदार्थों को ठाकुरजी स्वयं खाने लग जांय तो मेरी समझ में इस समय के पुजारी शायद ही कोई हों कि जो भगवान को भोग लगावें, नहीं तो सब के सब बन्द हो जावेंगे। इससे विदित होता है, कि ब्राह्मण को ठाकुरजी के नाम पर नाना माल तथा द्रव्यादि मिलता रहता है इसलिये वह ठाकुरजी से प्रेम करता है और दुनियां में उनका गीत गाता हुआ अपना स्वार्थ सिद्ध करता है। इसके अतिरिक्त ठाकुरजी से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

२०. ब्राह्मणों के दोनों हाथ लड्डू

गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, कि:—

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम् गुण कर्म विभागशः।

अर्थात्:—चार वर्णों को मैंने सृजा अर्थात् बनाया, उनके गुण और कर्मों के अनुसार। भगवान श्री कृष्ण ने यहां कर्मगत व्यवस्था कायम की है, यदि ब्राह्मण लोग इसी व्यवस्था के अनुसार चलते, तब तो संसार में केवल इन्हीं की ठेकेदारी न होती, विचारे और बनियों में से भी ब्राह्मण बनने का किसी न किसी समय नम्बर अवश्य ही आ जाता, किन्तु इन ब्राह्मणों को कब यह स्वीकार हो सकता था कि संसार के दूसरे जीव भी इनके समान सुखी होकर मनुष्योचित अधिकारों को प्राप्त करें इन्हें तो केवल अपने ही दोनों हाथों में लड्डू रखना था। अतः इन्होंने उस कर्म गत वर्ण व्यवस्था को अपने निजी स्वार्थ के लिये जन्म गत वर्ण व्यवस्था में परिणित कर वेद भगवान तथा श्री कृष्ण दोनों के कथन पर मिट्टी डालदी। इसका परिणाम यह हुआ कि जो कुछ मान मर्य्यादा तथा विद्यादि का सम्बन्ध था, वह सब केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित रह गया। अब पाठकों को यह बतलाया जाता है कि इस जन्म गत वर्ण व्यवस्था से ब्राह्मणों को कितना नाजायज फायदा हुआ सो सुनियेः—

आज एक ब्राह्मण है, जो बहुत ही चरित्र भ्रष्ट है। मांस मदिरा तथा अनेकों दुर्व्यसनों में संलग्न है। पढ़ाई लिखाई के हिसाब से काला अक्षर भैंस के बराबर है। इतना सब कुछ होते हुए भी इस जन्म सिद्ध वर्ण व्यवस्था की कृपा से आज भी ब्राह्मण पद से सुशोभित हो रहा है। यदि कर्म गत व्यवस्था रहती तो यह ब्राह्मण देवता न जाने अपने नीच कर्मों से किस अधम योनि में ढकेल दिये जाते। इस प्रकार ब्राह्मण के दोनों हाथ लड्डू हैं। निन्दनीय कर्म करे तो भी ब्राह्मण और अच्छे कर्म करे तो भी ब्राह्मण।

इसी प्रकार एक और ब्राह्मण है, वह सेठजी की रोटी बनाता है, पानी पिलाता है, उसके बाल बच्चों को भी खिलाता है, अर्थात् सेवा का पूरा कार्य करता है। क्या ऐसा कार्य करने वाला ब्राह्मण रह जाता, न मालूम कब ही उसको शूद्रों की योनि में डाल दिया जाता, किन्तु इस जन्म गत वर्ण व्यवस्था ने उसको आज तक शुद्ध ब्राह्मण ही बना रखा है। इस प्रकार ब्राह्मण के दोनों हाथ लड्डू हैं।

एक तीसरे प्रकार का एक और ब्राह्मण है, वह नौकरी भी करता है, सूद (ब्याज) पर रुपया भी चलाता है। लेन देन के कार्य में भी दृढ़ संलग्न है और इतना सब कुछ करते हुए भी जन्मगत वर्ण व्यवस्था ने उसको ब्राह्मण ही बना रखा है, नहीं तो उसको फौरन वैश्य बना दिया जाता। इस प्रकार ब्राह्मण के दोनों हाथ में लड्डू हैं।

अब चौथे नम्बर पर आप एक शूद्र को ले लीजिये, वह बड़ा विद्वान जितेन्द्रिय, तपस्वी तथा संतोषी है किन्तु इस जन्म गत वर्ण व्यवस्था ने बिचारे गरीब को आज शूद्र ही बना रखा है, यदि कर्म गत वर्ण व्यवस्था होती तो न जाने कब का ऋषि कहला कर वशिष्ट तथा विश्वामित्र बन जाता, किन्तु इन ब्राह्मणों द्वारा कठिन तथा पैशाचिक प्रतिबन्धों ने उस बिचारे भोले मनुष्य को ब्राह्मण बनने से रोक रखा। इससे विदित होता है कि आज तक ब्राह्मण के दोनो हाथ लड्डू हैं। इस जन्म गत वर्ण व्यवस्था का ही यह प्रताप है कि आज नीच से नीच कर्म करने वाला, अर्थात् रोटी बनाने वाला, पानी भरने वाला, तथा दुनिया को धोखा देने वाला धूर्त मनुष्य भी अपने आपको ब्राह्मण कहलाने का अभिमान रखता है। और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कर्म करने वाला, अद्वितीय विद्वान सर्व गुण सम्पन्न परोपकारी मनुष्य आज तक इन ब्राह्मणों के सामने शूद्र ही बना हुआ है। यह क्या है? ब्राह्मणों की कृतघ्नता, नीचता तथा धूर्तता का ही कारण है, कि तनिक मीठे स्वाद में पड़कर जनता जगत का कितना महान अपकार किया है। यद्यपि आज यह

दुष्ट कुठाराघातिनि वर्ण व्यवस्था बौद्धिक विकास के कारण अपमानित होकर रसातल को प्राप्त होती हुई आती है, किन्तु ये पंडे पुजारी कि जिन्होंने इसके नाम पर खूब धोखा दे २ कर माल उड़ाया है, वे अभी तक इसका हृदय से स्वागत कर रहे हैं, और बिचारी भोली दुनियां को कई प्रकार की ऊँची नीची बातें बना कर बहकाने में दृढ़ संलग्न हैं। किन्तु जनता जगत को इनके द्वारा किये हुए कुकृत्यों का तथा अमानुषिक अत्याचारों का भली भांति पता लग गया है, और वह जानती है, कि अब इनके वचनों में कुछ सार नहीं है। इस समय इनका यह रोना, चिल्लाना तथा सनातन धर्म की दुहाई देना केवल अपने पेट की पूर्ति निमित्त है, जनता जगत की भलाई का इनके वचनों में कुछ सार नहीं है। अतः इनकी ये सब क्रियायें निष्फल हैं।

२१ समाज सुधार से ब्राह्मणों को भय

जो जाति दूसरों को नाश करके अथवा धोखा देकर माल उड़ाती है, वह सदा सशङ्कित तथा भयभीत बनी ही रहती है। जैसे राजा को अपने राजपाट तथा सुख भोगों की सदा चिन्ता बनी रहती है, कि दूसरा कोई अन्य मुझसे प्रबल राजा मेरे राजपाट तथा मेरी सुख चैन की सामग्री को छीन न ले। वह अपने समक्ष में किसी अन्य राजा की वृद्धि को देख नहीं सकता और जहां तक उसकी सामर्थ्य होती है, वहां तक वह अपने सामने किसी विशेष शक्ति को पनपने भी नहीं देता है, उसको किसी न किसी तरह राजनैतिक कूट नीतियों द्वारा निर्बल बनाये रखने में ही अपना हित समझता है। बस यही हाल ब्राह्मणों का रहा है, कि जो मनुष्य इन से ज्ञान ध्यान, विद्या बुद्धि में महान हुआ, कि बस ये लोग घबरा जाते हैं कि हमारी इस मौज को यह अन्य व्यक्ति किसी तरह हम से छीन न ले। बस इस भय से भयभीत हो ये लोग सदा ऐसे व्यक्तियों को दबाते ही रहे हैं। जैसे किसी जमाने में अङ्गरेज लोग अपने बैठने के फर्स्ट क्लास गाड़ी के डब्बे में किसी अन्य व्यक्ति को बैठने न देते थे। इसी प्रकार ये लोग भी ईश्वर और धर्म रूपी

रेलगाड़ी के समस्त में ब्राह्मण रूपी फर्स्ट क्लास के डब्बे में किसी अन्य को प्रवेश नहीं होने देते । मानों ईश्वर और धर्म रूपी रेल गाड़ी के यही ठेकेदार हों। जब कोई व्यक्ति अपनी योग्यता धारण करके इनके सामने आता है, तो ये लोग अपनी मिथ्या ठेकेदारी के बल पर उसको समाप्त कर देते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि इन ब्राह्मणों की कूटनीति में सदा यही समाया हुआ है कि जिस तरह भी हो दुनियां को ऐसा मार्ग बताते रहें कि जिससे कोई भी व्यक्ति अपना किसी भी प्रकार का सुधार न कर सके, और हमारे सुख चैन की बंसी जैसी सदा से बजती आई है उसी प्रकार बजती रहे। और हमारे सामने कोई भी मनुष्य आंख उठा कर न देख सके।

प्यारे पाठको संसार में जब २ देश सुधारक, आविष्कारक तथा समाज सुधारक महान पुरुषों का जन्म होता है और वे अपने मानसिक विचारों को लोगो के कल्याणार्थ जनता जगत में प्रसारित करते हैं। तब २ ये नाम धारी ब्राह्मण लोग घबराने लगते हैं, और महापुरुषों के कार्य को शिथिल करने की चेष्टा करते हैं। दुनिया को बहकाने के लिये इन के पास में दो शस्त्र होते हैं, इन दोनों शस्त्रों का प्रयोग जब आवश्यकता होती है, अर्थात् इनके स्वार्थ में किसी प्रकार की हानि हुई देखते हैं, तब ही कर डालते हैं। वे दो शस्त्र कौन से हैं सो सुनियेः—

पहला शस्त्र है "सनातन धर्म नाश हो गया" और दूसरा शस्त्र है "गौ माता नाश हो गई"। ये दोनों बातों को कह २ कर जनता को बहकाते हैं। प्यारे पाठको ! यह सनातन धर्म तथा गौ माता का तो एक इन्होंने बहाना ले रखा है; वास्तविक में तो न इनको गौ माता से सरोकार है और न इनको सनातन धर्म से ही सम्बन्ध है, इनको तो केवल इन दोनों के सहारे संसारिक विषय भोगों को सुख चैन से भोगना है। समाज सुधार से इनके विषय भोगों में अर्थात् स्वार्थ में कमी होती है। इसलिये इसका नाम सुनते ही घबरा जाते हैं। अब मैं इनकी कुछ करतूतों का परिचय कराता हूं

कि जिससे पाठकों को पता लग जायगा कि जब २ सोशियल रिफार्मर (समाज सुधारक संसार में आये, तब २ इन लोगों ने उनके सामने कैसी २ कठिन समस्यायें करदी, और जब इनका विद्या बुद्धि द्वारा उन पर कोई वश न चला तब अपनी नीचता द्वारा उनके शरीरों को नाश कर दिया। सुनिये इनकी पैशाचिक घटनाओं पर ध्यान दीजिये:—

पूर्व जमाने में जबकि शासक वर्ग इनकी मुट्ठी में थे, तब तो किस माई के लाल की ताकत थी कि इनकी कुचालें तथा भयङ्कर उत्पातों के विषय में किसी को कुछ कहे, अथवा कुछ बतलावे, क्योंकि उस समय के इनके द्वारा निर्द्धारित कानून ही ऐसे थे "कि जीभ काटलो, हाथ उड़ादो, पैर विहीन करदो, आंखें फोड़ दो तथा शरीर को नाश कर दो" इत्यादि २। ऐसी स्थिति में इनसे कौन बोल सकता था, बस यही कारण था कि "जिसकी लाठी तिसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ होती रही। और इनकी स्वार्थपरता तथा नीचता से भारत का अधपतन होता ही रहा। इन लोगों ने देश को अपने पेट में हड़प कर बिल्कुल खोखला तथा निर्बल बना डाला, तब देश पर विदेशियों के हमले (attack) होना शुरू हुआ और देश की आजादी दूसरे देश वालों के हाथों में चली गई। मुसलमानों के शासन काल में तो हिन्दुओं पर बड़ी आपत्ति आई, क्योंकि इन लोगों ने कोई न्याय युक्त शासन नहीं किया। धर्म शास्त्रों को जलाया, खड्ग के बल पर मुसलमान बनाये, मन्दिर तथा देवी देवताओं की मूर्ति तोड़ डाली। और इन ब्राह्मणों के मन्त्र तन्त्र जिनके बल पर ये लोग फूले नहीं समाते थे, और जिनके द्वारा ये लोग जनता को बहका २ कर महात्म्य सुनाया करते थे, और उनके नाम पर धोखा देकर खूब माल उड़ाया करते थे। सो वे इनके मन्त्र तन्त्र, देवी देवता तथा मन्दिर में विराजमान ठाकुरजी कोई भी जनता के काम न आये। और यवनों ने सबको ध्वंश करके उनके स्थानों पर अपनी मसजिदें कायम करली। और ब्राह्मणों के बीज मन्त्र "सनातन धर्म नाश हो गया" तथा "गौ माता नाश हो गई" ये सब कुछ काल के लिये अन्धेर कोठड़ी में जा

छुपे। इस प्रकार ब्राह्मणों की चालबाजी, धूर्त्तता तथा स्वार्थपरता का भंडा फोड़ सारे संसार में फैल गया, और जनता जगत का विश्वास इनकी ओर से कम हो गया।

'समय किसी का भी सदा एकसा नहीं रहता' इस कहावत के अनुसार मुसलमानों का भी समय समाप्त हो गया, और इसके पश्चात् सोशियल रिफार्म के सांचे में ढली हुई और मानव जीवन के उच्च सिद्धान्तों को समझने वाली न्याय शील गवर्नमेन्ट आई कि जिसको ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के नाम से पुकारते थे। इसने यहां पर आकर सब लोगों के धर्म कर्मों को शान्ति पूर्वक स्थान दिया, बड़े २ सोशियल रिफार्म किये, रेल तार तथा डाक की सुव्यवस्था की, बड़े २ वन काट २ कर सुन्दर २ सड़कें तथा नहरें निर्माण की, डाकुओं को पकड़ा, सुन्दर २ गढ़ किले निर्माण किये, जगह २ स्कूल तथा कालेज खोल कर जनता को विद्वान बनाया। कोली, चमार तथा मेहतर आदि कि जिनके नाम सुनने से लोगों को घृणा होती थी उन सबको पढ़ा लिखा कर शुद्ध नागरिक बनाया, मनुष्योचित अधिकार प्राणि मात्र को दिये गये। स्त्रियों का गौरव बढ़ाया और उनके पढ़ने के लिये अलग ही स्कूल और कालेज स्थापित किये गये। बड़े २ कला कौशल के कारखाने खोले और निरुद्यमी भारत को पुनः उद्यमशील बनाया। लोगों ने मनुष्यों को मारने के लिये कई प्रकार के धार्मिक हथकंडे रच लिये थे, जैसे काशी करोत, देवताओं के नाम पर नर बलि तथा सती सिस्टम के नाम पर अबोध बालिकाओं की हत्या। इन सब अत्याचारों पर राजनैतिक आर्डिनेन्स लगा कर बन्द किया। इस प्रकार जो देश कठिन उत्पातों के कारण दुखी तथा भय भीत हो रहा था, वह इनकी राजनीति द्वारा एकदम सुखी हो गया। सर्वत्र देश में अमन की बंशी बजने लगी।

अब पाठक सोच सकते हैं कि देश में सोशियल रिफार्मरों की कितनी आवश्यकता है, और सोशियल रिफार्म में जनता का कितना हित छिपा हुआ

है। जिस सोशियल रिफार्म को देख कर ये ब्राह्मण रूप पंडे पुजारी घबड़ा जाते हैं, और उनके सामने कई प्रकार के स्वार्थ सम्बन्धी ईंट रोड़ा अटकाने में तनिक भी संकोच नहीं करते। अब भला बतलाइये इन ब्राह्मणों को हम लोग देश रक्षक कहें कि देश भक्षक? प्यारे पाठको! निश्चय जानो! ऐसे नाम मात्र ब्राह्मण बन कर दुनिया में माल उड़ाने वालों पर जब तक जनता की ओर से अथवा राष्ट्र की ओर से कोई कठिन प्रतिबन्ध न लगाया जायगा, तब तक देश का उद्धार होना कठिन है। सोशियल रिफार्म में और इनमें पृथ्वी आकाश का अन्तर होता है। सोशियल रिफार्मर कहता है कि:—"Nation's duty is the religion" "जाति सेवा अर्थात् मानव सेवा ही धर्म है" और इन नाम मात्र ब्राह्मण की शिक्षा है कि "दान दक्षिणा द्वारा हमारा पूजन तथा नाना प्रकार के भोजन करा कर हमको तृप्त कर देने का नाम ही धर्म है"। यही कारण है कि ये ब्राह्मण लोग सोशियल रिफार्म को सहन नहीं कर सकते हैं, अब इन ब्राह्मणों ने सोशियल रिफार्मरों के सामने क्या २ जात पांत की तथा क्या २ विघ्न बाधायें उपस्थित की सो सुनियेः—जब देश में सोशियल रिफार्मर विदेशों से आये तब हमारे देश में भी सोशियल रिफार्म का स्रोत बहा, और अनेकों समाज सुधारक प्रेमी देश में उत्पन्न होने लगे, और ब्राह्मण लोग उनसे घबराते रहे, और विरोध भी करने लगे। देश सुधारकों में पहिला नम्बर महर्षि स्वामी दयानन्द का था कि जिन्होंने इन पंडे पुजारियों को पोपों की संज्ञा दी थी और इनकी कपटमयी कई एक करतूतों को तथा जिन सिद्धान्तों के द्वारा ये लोग जनता जगत को धोखा देकर माल उड़ा रहे थे, उस सबके गूढ़ रहस्यों को 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक पुस्तक में लिखकर प्रकाशित कर दिया, ताकि भविष्य में ये लोग अपनी वाङ्मयी कपटी चातुर्य्यता से जनता को धोखा न दे सकें। स्वामीजी ने कई एक गुरुकुल, अनाथालय तथा विद्यालय स्थापित कराये कई स्थानों पर गौशालायें स्थापित होने लगी, जनता के लिये स्थान २ पर आर्य समाज स्थापित होने लगी, घर २ में वेद मन्त्र तथा हवनादि का प्रचार बढ़ा। जन्म गत वर्ण व्यवस्था मिटा कर पुनः गुण कर्म स्वभाव वाली वर्ण व्यवस्था कायम

हुई। कन्याओं के पढ़ने के लिये भी विलग २ गुरुकुल तथा पाठशाला स्थापित किये, बाल विवाह तथा वृद्ध विवाह का घोर अपवाद चलाकर दोनों में अच्छा सुधार किया और स्थान २ पर व्यायाम शाला तथा स्वास्थ्य मन्दिर कायम किये। इनको देख कर ये सारे पंडे पुजारी भयभीत हो गये थे, और मन में विचार करने लगे थे कि यह स्वामी दयानन्द हमारे लिये काल की मूर्ति बन कर कहां से आगया है। पीछे से ये लोग स्वामीजी की निन्दा किया करते थे, किन्तु सामने कुछ नहीं कह सकते थे। क्योंकि इन लोगों में और स्वामी दयानन्द में पृथ्वी आकाश का अन्तर था। देखो! स्वामी दयानन्द सत्य के पुजारी थे, ये लोग झूंठ के पुजारी थे। स्वामी जी ब्रह्मचारी थे, किन्तु ये लोग कामी तथा इन्द्रिय लोलुप थे। स्वामीजी परोपकारी थे, ये लोग केवल अपनी मौज चाहते थे। स्वामी जी ईश्वर और धर्म का प्रचार करते थे, ये लोग सब के सब ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देकर अपना पेट पालने वाले थे। इन लोगों ने स्वामी जी के सामने कई प्रकार के विघ्न बाधा रूप ईंट, पत्थर तथा रोड़ा अटकाये यहां ही तक नहीं किन्तु इनमें से कई एक दुष्टों ने विष का प्रयोग भी किया, और अन्त में जोधपुर पहुँचते २ तो स्वामी जी के प्राण दुष्टों ने ले ही डाले। अब पाठक गण सोच सकते हैं कि समाज सुधारक के प्रयत्नों में जनता की कितनी भलाई है। और इन पंडे पुजारियों की कितनी नीच वृत्ति है, कि जो ऐसे महान देश सुधारक परोपकारी महा पुरुषों के मारने में भी तनिक संकोच नहीं करते, तिस पर अभिमान इतना कि जिसके द्वारा भू देव तथा जगत गुरु का मिथ्या पद लिये बैठे हैं। ऐसे दुष्ट क्रूर कर्मी भू देवों को तो लज्जा रूपी शोक समुद्र में डूब मरना चाहिये।

अब पाठक हमारे देश प्रेमी समज सुधारक नेता के विषय में सुन-चुके, अब दूसरे समाज सुधारक प्रेमी की बातें सुनियेः—जब अंग्रेजों का भारत पर पूर्ण अधिकार हो चुका, उस समय हमारे बंगाल में एक बहुत प्रसिद्ध देश भक्त नेता राजा राममोहनराय सुनामी विद्वान हो गये हैं।

कोई ध्यान न देकर शारदा बिल भी पास हो गया। और इसके पास होने से न तो सनातन धर्म नाश हुआ और न हिन्दू ही नाश हुए। अब पाठक सोच सकते हैं कि ये नामधारी ब्राह्मण कितने दुराग्रही होते हैं कि जो देश के उन्नति शीर्षक रिफार्मों को भी देख नहीं सकते। क्यों कि ये लोग जानते हैं कि देश में यदि सोशियल रिफार्मर इस प्रकार के रिफोर्म करेंगे तो भविष्य में हमारी पोप लीला समाप्त हो जावेगी। इसलिये ये लोग सदैव भय भीत बने रहते हैं। और अपनी हलवा पुड़ी की खैर मनाते हैं।

अब चौथा नम्बर आता है सोशियल रिफार्म में हिन्दू कोड बिल का। इस का तो नाम सुनते ही पंडे पुजारी चिल्ला उठे, और ऊपरी श्वांस छोड़ने लगे। क्योंकि ये बिल स्त्री जाति के उद्धार निमित बनाया गया है कि स्त्रियो का भारत में इस समय कोई आदर नहीं देखा जाता है और इनकी अवज्ञा के लिये कई प्रकार के वचन भी बना रखे हैं, यथा:—ढोल गंवार शूद्र और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी" अब देखिये! जो स्त्री रत्नों की खान समझी जाती थी कि जिनकी कोख से अर्जुन और भीम जैसे योद्धा तथा ध्रुव व प्रह्लाद जैसे भक्त रत्न पैदा होते थे, उन्हीं के विषय में आज कहते हैं कि ढोल, गंवार, शूद्र और स्त्री ये सब ताड़न के अधिकारी हैं, तो यह कितनी नीचता की बात है। इस स्त्री जाति के साथ में मनुष्य ने इतना अन्याय किया है, कि इसको शूद्र संज्ञा दी है और इसके साथ कई प्रकार के अत्याचार कर रहे हैं। देखिये! जब किसी के पुत्र पैदा होता है तो नक्कारा बजाते हैं और कई प्रकार की खुशी मनाते हैं। किन्तु यदि किसी के पुत्री होती है तो आनन्द मनाना तो दूर रहा उल्टे शोक सागर में डूब जाते हैं। लड़के को बाजार से लाकर मिठाई खिलाते हैं, दूध पिलाते हैं, किन्तु लड़की के लिये भर पेट रोटी भी नहीं देते। जब लड़का पांच छः वर्ष का हो जाता है तो उसके हाथ में बस्ता देकर पाठशाला में पढ़ने निमित्त भेज देते हैं, और लड़की के हाथ में गोबर लाने के लिये टोकरी देते हैं, पानी लावो, गोबर लावो, चौका लगावो, रोटी बनाओ। अर्थात् सारा दासी का जैसा

काम सुपुर्द कर देते हैं। लड़की पिता के घर पर भी दासों की तरह काम करती है, और पति के घर पर तो साक्षात् दासी ही बन जाती है। इस प्रकार स्त्री जाति के साथ में सब ओर से अन्याय ही अन्याय किया गया है। आपको देहातों में सैकड़ों लड़के ग्रेजुयेट मिल जावेंगे, किन्तु लड़कियां कहीं शहरों में दो चार कठिनता से ढूँढने पर मिलेंगी। इससे साफ प्रगट होता है, कि सब ओर से स्त्री जाति का अपमान हो रहा है। यही सोच समझ कर हमारे भारत के प्रसिद्ध और अद्वितीय विद्वान लोगों ने हिन्दू कोड बिल बना कर स्त्री जाति के सुधार निमित्त भारत सरकार के समक्ष में रख दिया है। इस पर स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ के निमित्त विरोध कर रहे हैं। इन विरोध करने वालों में दो दलों के लोग अधिक दिखाई देते हैं। पहिले नम्बर पर तो पंडे पुजारियों के रूप में ब्राह्मण लोग हैं, और दूसरे नम्बर पर कुछ पूंजी पति लोग। सो ये सब लोग स्त्री जाति के हित के लिये विरोध नहीं कर रहे हैं, किन्तु इनका विरोध केवल अपने पेट के लिये है, सो कैसे है? जरा सुनिये!

पंडे पुजारी नामक ब्राह्मण लोग क्यों विरोध कर रहे हैं? इसका यह कारण है कि इनकी दान दक्षिणा तथा नाना प्रकार का माला उड़ाने का सब कुछ कार्य इन भोली भाली स्त्रियों से चल रहा है, स्त्रियाँ मूर्खा रहने से इनके बहकाने में जलदी आती हैं, मैंने कई जगह इन पंडे पुजारियों के मंदिरों में जाकर देखा है, वहाँ पर मनुष्य कम पाये हैं, स्त्रियां बहुत सारी देखी जाती हैं। इसका कारण यह है कि मनुष्य कुछ साक्षरी होगये हैं, और पंडे पुजारियों की पोप लीला को भी जान गये हैं, इसलिये बहुत कम लोग इनसे प्रेम करते हैं, किन्तु स्त्रियां बिचारी अभी तक भोली भाली तथा निरक्षरा हैं, इसलिये ये इनके फन्दे में खूब फंसती हैं। मैंने कई बड़े २ सुनामी मन्दिरों में प्रत्यक्ष अपनी आंखों से देखा है, कि स्त्रियों का अपने पतिदेव की सेवा में तो मन नहीं लगता है, किन्तु ये लोग जब मन्दिरों में जाती हैं, तो पंडे पुजारियों के मुख पर पंखा झलती हैं, उसके चरण दाबती हैं, उनको नाना प्रकार के माल

खिलाती हैं, और अनेकों प्रकार की दान दक्षिणा देकर उनको संतुष्ट करती हैं, और फिर उनसे अपनी मनो कामनाओं की पूर्ति कराती हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि स्त्रियां मूर्खा होने के कारण से इन पंडे और पुजारियों के चक्कर में फंसी हुई हैं। जब हिन्दू कोड बिल स्त्रियों के सुधार में बन जावेगा तो स्त्रियां पढ़ लिख जावेंगी, और पढ़ी लिखी स्त्रियों पर इन पंडे पुजारियो के बहकावट का कोई प्रभाव न पड़ेगा, और इस प्रकार इनको दान दक्षिणा तथा वैषयिक भोगों की सामग्री का प्राप्त होना भी दुस्तर हो जावेगा। इसलिये ये सब पंडे पुजारी नामक ब्राह्मण अपने भोगों के लिये चिल्ला रहे हैं और हिन्दू कोड बिल का विरोध कर रहे हैं, ताकि स्त्रियाँ पढ़ लिख कर विद्वान न होजावें। और इनकी भोग लीला तथा दान लीला का कार्य संसार में इसी प्रकार से चलता रहे। इसलिये जनता जगत का कर्तव्य है, कि वे इन पंडे पुजारियों की बहकावट में न आकर शीघ्र ही हिन्दू कोड बिल की स्वीकृति निमित्त गवर्नमेन्ट से अपील करें। क्योंकि इसके पास हुए बिना स्त्री जाति का उद्धार होना कठिन है, और अब रहे दूसरे नम्बर के कुछ पूंजीपति लोग कि जो हिन्दू कोडबिल का विरोध कर रहे हैं। सो मालूम होता है, कि इन विचारों को इन पंडे पुजारियों ने अपना अर्थ सिद्ध करने के निमित्त बहका दिया है। क्योंकि कई एक पुंजी पति मुझ से भी पूछा करते है कि स्वामी जी यदि हिन्दु कोड बिल पास हो जायगा तो क्या लड़की हमारी पूंजी में से अपना हिस्सा बांट लेगी? अब देखिये इन भोले भाइयों को हिन्दु कोडबिल के पास होने तथा न होने की चिन्ता नहीं, इनको तो चिन्ता है केवल पूंजी बट जाने की। कहावत भी प्रसिद्ध है कि "चमड़ी जावे किन्तु दमड़ी न जावे" देश बरबाद हो जावे, घर बरबाद हो जावे, इसकी इनको चिन्ता नही है। जब ये लोग समझते हैं कि पुत्र और पुत्रियाँ हमारा ही अंश हैं तो फिर ये लोग पुत्र के समान अपने द्रव्य विभाजन अधिकार पुत्रियों को क्यो नहीं देते हैं। अपने पुत्रों को जिस प्रकार अच्छा २ खिला पिला कर उनको पढ़ाने खिलाने का सुन्दर सुप्रबन्ध रखते हो, ऐसी व्यवस्था लड़कियो को भी क्यो नहीं देते। तुम अपने मन में यही तो सम-

मते हो, कि लड़कियाँ तो विवाह होने के पश्चात् दूसरों के घर में चली जॉयगी, और लड़का हमारा घर में रह कर हमारी सेवा करेगा। तुम्हारी इस विषमता को दूर करने के लिये ही हिन्दू कोड बिल की आवश्यकता समझी गई है। इसके द्वारा जब तुमको ज्ञात हो जावेगा कि राजनैतिक नियमों की दृष्टि से तुम्हारी पुत्री तथा पुत्र का समानाधिकार है, तो फिर तुम अपनी पुत्रियों को पढ़ाने लिखाने में संकोच न करोगे। अब रहा द्रव्य विभाजन का प्रश्न ? सो द्रव्य कहां जायगा अर्थात् जितना द्रव्य तुम्हारी लड़की लेकर दूसरे के घर में जावेगी, इसी प्रकार तुम्हारे लड़के की शादी में दूसरे का द्रव्य तुम्हारे घर में आजावेगा। इस प्रकार दोनों तरफ का बेलेन्स बराबर रहेगा। और अब जो तुम शादी विवाह करते हो उसमें भी यही बात है कि जितना द्रव्य अपनी लड़की की शादी में खरच करते हो उतना ही द्रव्य तुम अपने लड़के की शादी में दूसरों से वापिस ले लेते हो। अतः तुम लोगों की यह धारणा कि द्रव्य दूसरे के घर में चला जायगा सो हिन्दू कोड बिल के रहस्य को न जानने के कारण है। इससे तुम्हारा, तुम्हारे पुत्र और पुत्रियों का तथा देश और राष्ट्र सबका भला होगा। इसलिये इसका विरोध करना ठीक नहीं है। पंडे पुजारी तो अपने स्वार्थ के लिये अर्थात् पेट पालने के लिये इसका विरोध करेंगे ही। और सदा से वे तो समाज सुधार के कार्यों में विरोध करते चले ही आये हैं, क्योंकि इन लोगों की धारणा में तो यही समाया हुआ है, कि देश में जितनी मूर्खता रहेगी उतना ही अधिक हमारा लाभ होगा। किन्तु जनता जो समाज सुधार के कार्यों में विरोध करती है वह केवल पंडे तथा पुजारियों की बहकावट है, कि जो जनता को इधर उधर से कुछ झूंटी सच्ची बातें बता कर अपना अर्थ सिद्ध करती है। अतः जनता को चाहिये कि वे ऐसे कपटमय वाक चातुर्य्यता द्वारा धोखा देने वाले जीवों से सदा सावधान रहें। और समाज सुधार के कार्यों को अपना अङ्ग समझें। क्योंकि इसी के आधार पर जगत के समस्त प्राणियों का जीवन चल रहा है। अतः सदा सर्वदा इनका स्वागत करना राष्ट्र तथा देश दोनों के लिये हितकर है।

२२. क्या मनुष्य शुद्र है ?

शास्त्र कहता है, कि भगवान ने ८४ लक्ष (लाख) योनियां उत्पन्न की हैं, उनमें २१ लक्ष अण्डज (अण्डे से पैदा होने वाली जैसे कबूतर, मोर तथा चिड़िया आदि जीव), २१ लक्ष उष्मज (उष्णता से होने वाले जीव जैसे मच्छर, खटमल तथा युंका (जूं) आदि जीव), २१ लक्ष स्थावर (जमीन को फोड़ कर निकलने वाले जैसे वृक्ष तथा पौधा, घास आदि), और २१ लक्ष पिण्डज जैसे मनुष्य, गाय, घोड़ा तथा बैल आदि पेट से पैदा होने वाले जीव)। इस प्रकार चार खानि के जीवों के हिसाब से ८४ लक्ष योनि सृष्टि कर्त्ता ने बनाई। अब इनमें से मानव जाति के विषय में यहां विचार किया जाता है। क्योंकि इन चार प्रकार की योनियों में मानव जाति को ही सर्व श्रेष्ट माना जाता है जैसा कि शास्त्र में कहा है कि:—

"सर्वेषामेव जीवानाम् मानुष्यत्त्वं सुदुर्लभम्"

अर्थात्:—सब जीवो में मनुष्य योनि सुदुर्लभ है। इसीलिये इसकी श्रेष्टता सभी शास्त्रों में वर्णन की गई है। अब यह योनि क्यों श्रेष्ट मानी गई? तो इसका उतर शास्त्र में यों दिया है कि:—

"आहार निद्रा भय मैथुनं च, समान मेतत् पशुभि र्नराणाम्।
ज्ञानं नराणामधिको विशेषः, ज्ञानं विहीना पशुभिस्समानाः॥"

अर्थात्:—अहार, नींद, भय तथा मैथुन आदि ये चार बातें तो मनुष्य में तथा पशु पक्षियों में समान रूप से ही पाई जाती हैं, किन्तु मनुष्यों में ज्ञान अधिक होने के कारण सर्व श्रेष्टता दी है। इसीलिये पशुओं को भोग योनि और मनुष्य को कर्म योनि कहा जाता है। यह मनुष्य अपने ज्ञान बल से बहुत कुछ उन्नति कर सकता है जैसा कि कहा है:—

"पशु की तो पनिया बने, नर का बने न कोय।
नर से तो ऐसा बने, कि नर नारायण होय"॥

अर्थात्:—पशु के तो मर जाने के पश्चात् उसके चमड़े से कई प्रकार की उपकारी चीजें यथा जूता आदि बन सकते हैं, किन्तु मनुष्य का मरने के पश्चात् कुछ नहीं होता है। और यदि होता है तो ऐसा होता है, कि नर का नारायण बन जाता है अर्थात् ज्ञान के द्वारा आत्म साक्षात्कार कर सकता है। इस प्रकार मनुष्य की अन्य प्राणियों से सर्व श्रेष्ठता सिद्ध होती है। अब यहां प्रश्न होता है, कि जब मनुष्य की सर्व श्रेष्ठता ही सिद्ध है तो फिर मनुष्य में भेद क्यों हुआ? सो सुनिये:—

मनुष्य में यदि देखा जाय तो कोई भेद नहीं है, यह भेद भाव की कल्पना तो मनुष्यों ने अपने निजी स्वार्थ के लिये बनाई है। मनुष्य एक जाति है, इसमें यदि भेद ही मानना हो तो स्त्री जाति तथा पुरुष जाति करके मान सकते हो, किन्तु मनुष्य जाति के कहने से भेद मानने की कोई कल्पना शेष नहीं रहती। क्योंकि स्त्री जाति तथा पुरुष जाति दोनों का समावेश मनुष्य जाति में हो जाने के कारण यह भेदभाव की कल्पना समाप्त हो जाती है। अब यहां पर प्रश्न यह है कि जब मनुष्य २ में कोई भेद नहीं है तो फिर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र आदि करके भेदभाव कहां से उत्पन्न हुआ? सो सुनिये:—मैं आपको कह चुका हूँ कि यह मनुष्य बौद्धिक जीव (rational being) है यह सदा अपनी बौद्ध शक्ति से काम लिया करता है। सृष्टि तथा कर्ता के नियम सुचारु रहें, और मनुष्य अपनी शक्ति से मनुष्य को दुखी न कर सके अर्थात् सब जीवों के स्वभाविक कर्मों में कोई बाधा न उपस्थित हो जावे यह सोच विचार कर हमारे यहां के पुरुषों ने इस मानव जाति को चार भागों में अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र आदि में बांट दिया। और चारों को अपनी २ योग्यतानुसार कर्म (ड्यूटी) बता दी। इस प्रकार सब प्राणी अपनी २ योग्यतानुसार कर्मों में प्रवृत्त हो गये। अब यहां पर फिर प्रश्न उपस्थित होता है कि मनुष्यों को चार भागों में बांटा यह तो हमारी समझ में कुछ अन्याय हुआ? क्योंकि एक मनुष्य को तो सब से बड़ा अर्थात् सब का शिरोधार्य बना दिया, दूसरे क्षत्रियों को सब पर

(शूद्र) ही बना हुआ है, बस यही कारण है कि यह ब्राह्मण समाज आज अन्य समाज की दृष्टि में नीच समझा जाता है।

आज यह ब्राह्मण समाज गंदा क्यों हुआ? तो इसका कारण यह है इस समाज में स्वार्थ की मात्रा आवश्यकता से अधिक बढ़ी, और कुछ मनुष्य इसमें अपने स्वार्थ के निमित्त गंदगी का काम करने लगे, शुद्ध ब्राह्मणों ने ऐसे गंदे ब्राह्मणों पर कुछ ध्यान न दिया, और यह गंदगी उत्तरोत्तर बढ़ती रही। आरम्भ में ये शुद्ध ब्राह्मण लोग उन गन्दे ब्राह्मणों को गुण कर्म तथा स्वभाव के अनुसार उनको अन्य वर्णों में ढकेलते रहते, और अन्य वर्णों मेंसे गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण बनाते रहते तो इस ब्राह्मण समाज में इतनी गन्दगी न फैलती। अब क्योंकि यह गन्दगी ब्राह्मण समाज में सिर से पैर तक फैल गई है, इतना ही नहीं, किन्तु सर्वत्र अर्थात् रोम २ में समा रही है। ऐसी स्थिति में इस ब्राह्मण समाज का शुद्ध होना सहज ही नहीं, अपितु असम्भव है। जैसे कोई डाक्टर किसी फोड़े को ठीक करने के लिये ओपरेशन करता है, तो वह देखता है कि इस फोड़े की गंदगी कहां तक फैली है, जब उसको गंदगी का पता लग जाता है तब वह उस फोड़े को उतनी ही मर्य्यादा में चीर फाड़ कर ठीक कर लेता है, किन्तु उस फोड़े की गंदगी यदि सारे शरीर में फैल जावे, और सारा शरीर उस गंदगी से सड़ जावे तो फिर डाक्टर बिचारा क्या करेगा, ऐसी स्थिति में शरीर ही नाश हो जावेगा। यही हाल आज इस ब्राह्मण समाज का है, आज इस ब्राह्मण समाज की छटनी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार की जावे, तो कितने शुद्ध ब्राह्मण निकल सकते हैं। और थोड़े बहुत निकल भी आवें तो उनकी स्थिति भी इस कृत्रिम ब्राह्मण समाज में ऐसी होगी कि जैसी हज़ार नकटों में एक नाक वाले की होती है, अर्थात् उसको भी नकटों के समान ही बन कर रहना पड़ेगा। इस प्रकार ब्राह्मण समाज गंदा हो जाने से इसका प्रभाव दूसरे वर्णों पर भी पड़ा है। और आज यह वर्ण व्यवस्था परस्पर की खैंचातानी से दुखी हो बिचारी रसातल को भाग चली है। और इसके स्थान पर नवीन

गुण व्यवस्था दूसरे देशों से दौड़ी चली आ रही है। जिस के स्वागत के लिये बड़े २ युग धर्म के मानने वाले (देश काल और स्थिति पर विचार करने वाले) बड़े २ प्रसिद्ध नेता लोग हाथ बांध कर सामने खड़े हैं। इसके पदार्पण करने से संभव है कि देश का तथा राष्ट्र का शीघ्र ही कल्याण होगा। और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र कि जो कल्पना मात्र हैं, वह नवीन युग धर्म में प्रवेश होकर समस्त मानव जाति के उच्च सिद्धान्तों के रूप में परिणित हो जावेगी। अतः युग प्रवर्त्तक युवकों का कर्तव्य है कि देश तथा राष्ट्र की उन्नति के लिये इसके प्रभाव को समझें और हृदय से स्वागत करें।

मानव जाति के उच्च सिद्धान्तों पर यदि विचार किया जाय, ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र कोई भी नहीं है। हमको मनुष्यों में जो परस्पर भेद भाव प्रत्यक्ष दीखता है, वह केवल संसार की बाहिरी उपाधि कृत तथा हमारी भूल का ही द्योतक चिन्ह कहा जा सकता है। भगवद्गीता में तो कहा है कि सदाचारी ब्राह्मण, अज्ञानी, दुराचारी, चांडाल, मानव प्राणी तथा गाय, हाथी तथा कुत्ता आदि पशु सब में सम दृष्टि रखना चाहिये। अब देखिये। जब गीता में दुराचारी, अज्ञानी ब्राह्मण, गाय, कुत्ता तथा पशु में सम दृष्टि लिखा है, तो फिर ये लोग भंगी, चमार, तथा कोली आदि जीवों को शूद्र की संज्ञा देकर विलग दृष्टि से क्यों देखते हैं, तो इसका कारण यह है कि कुछ मनुष्यों ने अपना बड़ापन रखने के लिये इनको स्वार्थ वश नीच संज्ञा देदी है। इनमें जो सम और निर्दोष तत्त्व है उसको नहीं देखते हैं। अब यहाँ प्रश्न यह है कि:— क्या ब्राह्मण तथा चाण्डाल समान है? क्या मानव प्राणी और पशु समान है? क्या गाय और कुत्ता समान है? क्या मच्छर तथा हाथी समान है इत्यादि २? सर्व साधारण प्राणी इसी प्रकार की शङ्कायें किया करते हैं। अब ये समदृष्टि क्या चीज़ है? इस पर विचार करते हैं। उदाहरण के लिये सोने के बने हुए नाना प्रकार के आभूषणों को ले लीजिये, कोई आभूषण सिर में धारण किया जाता है, कोई हाथ में धारण किया जाता है, तो कोई पैर में धारण किया जाता है, शरीर के भिन्न २

तथा भेद भाव की कल्पना कहां से आगई ? उसका कारण यही है कि मनुष्यों के द्वारा किये हुए अन्याय तथा अत्याचारों से अथवा स्वार्थ मय पैशाचिक वृत्तियों से पीड़ित से आज भोले भाले गरीब लोग करोड़ों की संख्या मनुष्य होते हुए भी शूद्र कहलाने का अधिकार लिये बैठे हैं। जो राष्ट्र और देश के लिये बहुत ही कलंकित वार्ता है। जो सेवा का कार्य हमारे देश में ये भोले लोग कर रहे हैं, उन्हीं सब कार्यों को अन्य देश में वहां के निवासी हर्ष पूर्वक संपादन कर रहे हैं, किन्तु वहां के मानव समाज में कोई भी व्यक्ति शूद्र नाम से नहीं देखा जाता है, और न उनमें राष्ट्रीय नाता से अथवा धार्मिक नाता से छूता ऽ छूत ही देखी जाती है, और न छोटे बड़े का प्रश्न ही चलता है। इसका परिणाम यह हुआ कि वहां का मानवसमाज बल, बुद्धि, विद्या तथा कला कौशल आदि सभी विषयों में अधिक उन्नति करते चले गये, और हमारा भारत देश बल विद्या तथा बुद्धि के नाते से सबका गुरू कहलाता हुआ भी इस ऊंच नीच के मिथ्याभिमान में पड़ कर कला कौशल सम्बन्धी सारी बातों को भूल कर सब का दास बनता चला गया।

आज हमारी कला कौशल क्यों मारी गई, आज हम मूर्ख और गंवार क्यों समझे गये ; आज हमारे सत्य विचार तथा सत्य सिद्धान्त क्यो नाश होगये ? तो इसका कारण यही है, कि हमारी सारी बातों में कृत्रिमता (Imitation) आगई, सत्य सिद्धान्त तथा सत्य विचारों के स्थान पर अपने स्वार्थ के लिये मिथ्या सिद्धान्त तथा मिथ्या बातों के प्रचार करने में लग गये और कला कौशल से सम्बन्ध रखने वाले सारे कार्यों को शूद्र का काम समझने लग गये। आज हमारे देश में खेती का काम करने वाला शूद्र, लुहार का काम करने वाला शूद्र, मिट्टी का काम करने वाला कुम्हार शूद्र, लकड़ी का काम करने वाला खाती, शूद्र, गाय तथा पशुओं का पालने वाला गुवाल शूद्र, पत्थर का कार्य करने वाला शिल्पी शूद्र इत्यादि। अब देखिये ये सब मनुष्य जो कला कौशलसे सम्बन्ध रखने वाले उत्तमोत्तम कर्मों के करने वालों को तो शूद्र बना दिये; और झूंठ बोलने वाले, धोखा देने

वाले, चोरी जारी, मांस मदिरा सेवन करने वाले ब्राह्मण ही बने रहे। बस यही कारण है कि देश में से कला कौशल से सम्बन्ध रखने वाले सारे कार्य समाप्त होगये। और इनके स्थान में लाखों मन्दिरों के नाम पर, गंगा यमुना के नाम पर, स्वर्ग नरक के नाम पर तथा सनातन धर्म और गौ माता के नाम पर धोखा देने के लिये अनेकों प्रकार के (हथकंडे) षड़यन्त्रों रूपी अनुपयोगी व्यवसायों में प्रवृत्त होगये।

अब पाठकगण सोच सकते हैं, कि आज इस कृत्रिम वर्ण व्यवस्था के चक्कर में पड़ कर देश कितना रसातल को प्राप्त हो गया। आज यह वर्ण व्यवस्था देश के कुछ स्वार्थी लोगों के चक्कर में पड़ी हुई और इनके कृत्रिम हथकंडों से दुखी हुई अपना पीछा सदैव के लिये छुड़ाना चाहती है, किन्तु ये कुछ स्वार्थी लोग जिन्होंने इसके आश्रय दूसरे गरीब लोगों के अधिकारों को छीन कर बड़ापन का पद प्राप्त करके मौज उड़ाई है, वे लोग इस बिचारी को बलात्कार से पकड़े हुए इसको जाने न देने के लिये बाध्य कर रहे हैं, अतः नवयुवकों का कर्तव्य है कि वे सब मिल कर इन स्वार्थी लोगों के षड़यन्त्र रूपी हाथों को कि जिनसे इन्होंने इस को पकड़ रखा है अपनी स्वार्थी रहित देशोपकार की भावना से युक्त तर्क बुद्धि रूपी तलवार से काट कर इस बिचारी दुखिया के बन्धनों को ढीला करदें। ताकि यह बिचारी इनके हाथों से मुक्त हो अपने निवास स्थान अविद्या रूपी क्षेत्र में सदा के लिये भारत से कूंच कर जावे। याद रखो! जब तक इस भारत में इस कृत्रिम वर्ण व्यवस्था का चक्कर चलता रहेगा तब तक यह ब्राह्मणपना, क्षत्रिय पना तथा वैश्य पने का झूंठा दावा दूर न होगा, और इस दावे के दूर हुए बिना देशोन्नति न होगी। और मानव समाज के उच्च सिद्धान्तों पर कोई विचार न रहेगा। अतः देश काल तथा स्थिति को देखते हुए इस मानव युग परिवर्तन के समय नवीन युग धर्म प्रवेश के लिये नवीन मानव गुण व्यवस्था कायम कर देनी चाहिये। और यह जन्मतः वर्ण व्यवस्था जो वेद तथा शास्त्रों के सिद्धान्त से सदा विरुद्ध है, इसको सदा के लिये समाप्त कर

देना चाहिये। क्योंकि इसी के प्रताप से भारत में ऊँचता तथा नीचता आई, परस्पर में खैंचातानी करते हुए फूट पैदा हुआ, भारत की संतानों को घटना होने से रोका, बौद्धिक शक्ति का ह्रास हुआ, ईश्वर और धर्म के ठेकेदार पैदा किये। मनुष्यों को देवता से राक्षस बनाये, पोप लीला चालू हुई, कला कौशल को बड़ा धक्का पहुंचा, ब्राह्मण तथा अब्राह्मणों की पहिचान जाती रही। सत को असत् में, धर्म को अधर्म में, मनुष्य को शूद्रों में, और सच को भूंठ में परिणित कर दिया, कहां तक कहें इसने आर्यों की कीर्ति तथा गुण रूपी रत्न की खानि को रेत से बने मिट्टी के ढेलों में परिणित कर दिया। और देश की स्वतन्त्रता को छीन कर विदेशियों के हाथ में सौंप दिया।

अब क्योंकि भारत कुछ वर्षों से आजाद हो गया है, इससे भय है कि कहीं यह कृत्रिम वर्ण व्यवस्था हमारी इस आजादी को आपस में फूट डाल कर पुनः परतन्त्रता की शृङ्खला (लोहे की जंजीर) में न बांध दे। अतः हमारा कर्तव्य है कि सब मिल कर परस्पर में स्वतन्त्रता के आनन्द को प्राप्त होते हुए इसको शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करदें। यह मेरी ही राय है, ऐसा नहीं समझना चाहिये, किन्तु भारत के प्रमुख २ देशोद्धारक विद्वान नेताओं की तथा महापुरुषों की भी राय है, कि वर्तमान समय को देखते हुए इसको शीघ्र ही पतन करदें। क्योंकि भारत का पतन इसी से हुआ है अतः इसके तोड़ देने में ही देश की भलाई है। अब महापुरुषों की इस विषय में जो कुछ सम्मत्तियाँ हैं वह जनता जगत के सूचनार्थ प्रकाशित की जाती है। जनता इनके वचनों पर ध्यान दें, और देश की भलाई के लिये वर्ण व्यवस्था को हटा कर गुण व्यवस्था कायम करें।

गुण व्यवस्था की परिभाषा तथा लाभ

लोहे की बनी हुई भिन्न भिन्न चीजों को एकत्रित कर के देखें तो देखने वाले को सब चीजों में लोहा ही दृष्टि आवेगा किन्तु

उपकार की दृष्टि में अर्थात् गुण करके किसी को कैंची, किसी को उस्तरा, किसी को तलवार, किसी को कुदाल, किसी को फावड़ा तो किसी को परात आदि नामों से उच्चारण करेंगे, और जब इनकी आवश्यकता होगी, तब समय २ पर इनको प्रयोग में लेते हुए अपने अनेकों कार्यों की साधना करेंगे। अब देखिये ये सब वस्तु जाति करके तो लोहा है, किन्तु गुण कर के कुदाल, फावड़ा तथा परात आदि नामों से पुकारे जाते हैं। इसी प्रकार गुण व्यवस्था में जाति करके तो सब मनुष्य हैं किन्तु, किसी को शूर, किसी को योद्धा, किसी को चमार, किसी को लुहार, किसी को सुनार किसी को कुम्हार किसी को किसान तथा किसी को व्यापारी आदि नामों से पुकारे जावेंगे। और राजनैतिक समाजिक, धार्मिक तथा मानव जाति के उच्च सिद्धान्तों के समझने तथा पालन करने के लिये सब को समानाधिकार होगा। कोई छूत अछूत, भेदाभेद तथा ऊँच नीच का भाव न रहेगा। इससे परस्पर प्रेम होगा, गुणों कि वृद्धि होगी, ईश्वर और धर्म की मिथ्या ठेकेदारी न चलेगी। हर प्रकार की विद्याओं का विस्तार होगा, अनुपयोगी व्यवसाय सब बन्द हो जायेंगे, निरुद्यमता नाश होगी, और इसके स्थान पर नाना प्रकार के कला कौशल सम्बन्धी कार्यों का प्रचार होगा, अधर्म का नाश होगा। पोप लीला समाप्त हो जावेगी और देश तथा राष्ट्र का हित होगा। और भारत की स्वतन्त्रता सुरक्षित रहेगी। अब यदि कोई जन्मतः वर्ण व्यवस्था के नाम पर माल उड़ाने वाला यह शङ्का करे अथवा भोले लोगों को बहकावे कि इस वर्ण व्यवस्था के नाश हो जाने और दूसरी नवीन गुण व्यवस्था आ जाने से देश का सत्यानाश हो जायगा और सनातन धर्म मिट्टी में मिल जावेगा ? तो इस पर मेरा कथन यह है कि आपकी वर्ण व्यवस्था तो इसी भारत में देखी जाती है, और वह भी अब नाम मात्र को रूढ़ि वादियों ने अपने बड़प्पन के लिये अथवा इसके आश्रम जीवों को धोखा देकर पेट पालने के लिये कृत्रिम रूप से बना रखी है, किन्तु अन्य बड़े २ राष्ट्र यथा योरुप, अमेरिका, रूस, जापान, चीन, फ्रान्स आदि देशों में जहां आपकी इस वर्ण व्यवस्था का नाम भी नहीं है, फिर भी वहां के लोग विद्या बुद्धि में

तथा कला कौशल में बढ़े चढ़े अर्थात् उन्नति के शिखिर पर पहुँचे हुए हैं। और हमारा भारत इस वर्ण व्यवस्था रूपी महान् चक्कर में फंस कर कितना पतन हो गया है, अतः प्यारे भाइयो! अब तुम्हारा कृत्रिम वर्ण व्यवस्था का झूठा दावा, तथा ईश्वर धर्म की ठेकेदारी में पेट पालने का दावा जनता जगत में किसी तरह भी न चल सकेगा। और फिर इस भारत में भी बहुतसी ऐसी जातियां हैं, जैसे सिख, पारसी, जैन, ईसाई तथा मुसलमान जो तुम्हारी इस वर्ण व्यवस्था को न मानते हुए भी कितनी उन्नति कर रही हैं, जब इन्हीं का नाश नहीं हुआ तो फिर तुम्हारा और तुम्हारे सनातन धर्म का ही नाश कैसे हो जावेगा? अतः यह बात तुम्हारी बिना सिर पैर की केवल भोले जीवों को धोखा देकर अपने चंगुल में फंसाये रखने के लिये है। इस गुण व्यवस्था से तुम्हारा धोखा देना तथा दुनियां का माल उड़ाना बन्द हो जावेगा इसी से तुम चिल्ला रहे हो। किन्तु तुम्हारे इस चिल्लाने में जनता जगत की कोई भलाई नहीं है अतः निरर्थक है।

वर्ण व्यवस्था की परिभाषा तथा हानि

प्राचीन समय में यह वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म तथा स्वभाव पर निर्धारित होती थी किन्तु आजकल लोगों ने इसको जन्म से ही मान ली है। अर्थात् प्रत्येक आदमी की जाति का ठेका उसके जन्म से ही सिद्ध हो जाता है, और आज यही कारण है, कि ब्राह्मण चाहे कितना भी नीच कर्म करने वाला, मूर्ख तथा दुर्व्यसनी हो तो भी वह ब्राह्मण है और अन्य जाति का व्यक्ति लाख विद्वान, सदाचारी तथा धनिक होता हुआ भी सामाजिक दृष्टि में हीन (तुच्छ) समझा जाता है। इस जाति पांति के कारण हिन्दुओं में शिल्प कला की यथेष्ट उन्नति न हो सकी। इसका कारण यह है कि जिन जातियों का पैत्रिक व्यवसाय शिल्प कला है, जैसे कुम्हार, दर्जी, लुहार नाई तथा तेली आदि ये सब के सब सामाजिक दृष्टि में छोटे देखे जाते हैं। अतः किसी भी जाति ने इस विषय में जी जान से उन्नति न की, किन्तु सब लोग

उपेक्षा दृष्टि से अपने धन्धे करते रहे। इस जाति पांति के कारण हिन्दुओं का हृदय विशाल नहीं हुआ और हर एक की सहानुभूति अपनी जाति बिरादरी तक ही सीमित रह गई। हर एक आदमी की भावना में अपनी जाति बिरादरी की सेवा और दूसरी बिरादरी की उपेक्षा समझी गई। ऐसा करने से न्याय अन्याय तथा औचित्य अनौचित्य का कुछ भी विचार नहीं करता। इस जाति पांति के बन्धन में पड़ कर आज १६ करोड़ भारत के लाल अछूत तथा पद दलित बन कर कूकर शूकर के समान जीवन व्यतीत कर रही हैं और इनके पहिनने को कपड़ा तथा रहने को घर और पेट भरने को सूखा अन्न तक नहीं है। इस जाति पांति के कारण ही हिन्दुओं की एक बड़ी संख्या ईसाई तथा मुसलमानों के फन्दे में फंस कर जीवन बिता रही है। इस जाति पांति के कारण ही परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति का ऐसा अभाव हो गया है, कि जिसके कारण एक दूसरे को मरने और मारने को तैय्यार हो रहे हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि इस जात पांति रूपी वर्ण व्यवस्था ने देश और धर्म दोनों का नाश कर दिया है (अतः इसका शीघ्र ही नाश कर देना बुद्धिमानों का कर्तव्य है।

२३ जाति पांति तोड़ने पर सम्मतियां

१. पं० जवाहर लाल नेहरू

भारतवर्ष में जाति पांति प्राचीन काल में चाहे कितनी उपयोगी क्यों न रही हो, पर इस समय सब प्रकार की उन्नति के मार्ग में यह बड़ी भारी बाधा और रुकावट बन रही है। ………… हमें इसको जड़ से उखाड़ अपनी सामाजिक रचना एक दूसरे ढंग से करनी होगी।

२. स्वर्गीय सर रवीन्द्र नाथ ठाकुर

यदि हिन्दू धर्मोन्मत्त विधर्मियों के घातक आक्रमणों से अपनी रक्षा

करना चाहते हैं, तो उन्हें जाति पाँति का सर्वथा त्याग करके अपने को संगठित करना होगा।

३. स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू

जब तक जाति का नामो निशान मिटा नहीं दिया जाता तब तक भारतवर्ष संसार के सभ्य राष्ट्रों में अपना उचित स्थान नहीं ले सकता।

४. श्री विनायक दामोदर सावरकर

शुद्धि, छूतछात निवारण और संगठन इत्यादि—इस प्रकार के उद्देश्य इस एक ही वाक्य के अन्दर पाये जाते हैं कि:—

"जाति पाँति का झंझट तोड़ दो"।

५. श्री राजा खलक सिंह जूदेव बहादूर, खनिया धाना राज्य।

मेरा यह पक्का विचार है कि जन्म मूलक जाति पाँति और छुआ छुत जैसी कुरीतियों के रहते हुए हिन्दू जाति कभी उन्नति नहीं कर सकती।

६. श्री. भगवान दास एम. ए. (काशी)

वर्तमान काल में जाति प्रथा जिस रूप में प्रचलित है, उसका एकान्त रूप से विनाश करना ही होगा। अगर भारत की जनता को नया जीवन प्राप्त करना है, तो उसे वर्ण भेद के वर्तमान रूप को मिटा देना होगा, क्योंकि वह उन्नति के सभी मार्गों में भयङ्कर रूप से बाधा उपस्थित कर रहा है।

७. स्वर्गीय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी

मेरा पूर्ण विश्वास है कि जाति पांति के जंजाल के टूटे बिना हिन्दुओं का उद्धार न होगा।

८. स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द

मैंने अपना यह नियम बना लिया है कि किसी ऐसे विवाह संस्कार में सम्मिलित न हूँगा और न उस जोड़े को आशीर्वाद दूंगा, जिसमें जाति पांति का प्रबन्ध न तोड़ा गया हो।

९. स्वर्गीय लाला लाजपत राय

जाति पांति हिन्दू धर्म का सब से बड़ा कलंक है, ब्राह्मण और अब्राह्मण, जात और गैर जात और नाम मात्र ऊँच नीच जातियों के वैमनस्य का यही कारण है और इसी ने छूता छूत को जन्म दिया है। जबतक हिन्दू जाति पाति की बेड़ियों से मुक्त नहीं होते, तब तक उनका एक जाति बनना असम्भव है।

१०. विश्व वन्द्य महात्मा गाँधी

जाति पांति तोड़क विवाह आपत्ति जनक नहीं है, शूद्र पुरुष ब्राह्मण स्त्री से विवाह कर सकता है।

११. डाक्टर मुंजे

अन्तर्जातीय विवाह द्वारा ही हम जाति पांति को मिटा सकते हैं।

१२. स्वामी सत्य देव

जाति पांति की दिवारों को गिरा दो, फूट के कारण को मिटा दो, तभी वास्तविक संगठन हो सकेगा।

१३. श्री सी. आई. चिन्ता मणि

वर्ण व्यवस्था मनुष्य की बनाई हुई है वह ईश्वर की ओर से कदापि नहीं हो सकती। जातीय भाव, जो इसकी कृपा से हमारे हृदय में जम गये हैं, लानत के योग्य है। आज इस बात की आवश्यकता है कि इसका खूब विरोध किया जावे। निसन्देह इस घातक प्रथा ने हमारी उन्नति को बहुत दूर फैंक दिया है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिन्दुओं के इस भेद भाव के कारण हम पूरा २ प्रयत्न करने पर भी पूर्ण और स्थायी स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं कर सकते।

१४. सर पी. सी. राय

जब तक जन्म मूलक जाति भेद का अन्त न होगा और वर्ण व्यवस्था गुण कर्मानुसार न मानी जायगी, तब तक देश स्वतन्त्र नहीं हो सकता। जाति पाति के कृत्रिम भेद भाव हमारे देशकी उन्नति के मार्ग में बाधा सिद्ध हो रहे हैं। इसलिये इन्हें शीघ्र दूर कर देना चाहिये।

१५. सर हरी सिंह गौड़

जाति पांति हिन्दुओं की एकता और उन्नति में रुकावट है। इस हानिकारक जाति पांति के विरुद्ध नव युवकों को आन्दोलन करना चाहिये।

१६. स्वामी राम तीर्थ

देश और धर्म तुमसे आशा करता हूँ कि जाति पांति के अत्यन्त कठोर नियमों को तुम ढ़ीला कर डालोगे और भ्रातृ भाव के प्रकाश के लिये तुम कड़े वर्ण भेदों को नियन्त्रित कर दोगे।

१७. पं० सन्त रामजी बी० ए०

जाति पांति ने शुद्धि, संगठन और दलितोद्धार की सभी चेष्टाओं को विफल कर दिया है। जब तक जाति पांति है, ये तीनों बातें असम्भव हैं।

हिन्दू समाज के सभी सच्चे हित चिन्तक और नेता इस बात को मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं।

१८. महाशय देव राज, प्रधान, कन्या महा विद्यालय, जालंधर

जाति पांति के अयोग्य बन्धनों ने हमें ऐसा अभिमानी, आलसी और कर्म हीन बना दिया है कि हम मनुष्य कहलाने के भी योग्य न रहे। यह कुप्रथा तोड़ने योग्य है।

१९. श्री नारायण स्वामी

जाति पांति का बन्धन हिन्दू जाति के लिये कलंक का टीका है, और इसने सारी जाति को छिन्न भिन्न कर रखा है। हिन्दु जाति में घृणा और परस्पर द्वेष का प्रचार इसकी कृपा का फल है। इसलिये आर्य जाति की उन्नति इस बन्धन के तोड़ने पर ही अवलंबित है।

२० श्री माखी राव जयकर

एक बात जो हमने स्वराज संग्राम में सीखी है वह यह है कि हमें जाति पांति को सर्वथा मिटा कर जन्म की बड़ाई का त्याग कर देना चाहिये।

२१. श्री के० नटराजन

वर्तमान जाति पांति शास्त्र और तर्क दोनों के विरुद्ध है। हिन्दुओं की आपस की फूट का यही कारण है। यह राष्ट्रीय भावना के विरुद्ध है। जितना शीघ्र इसमें क्रान्तिकारी सुधार होगा, उतना ही इससे देश और विशेष कर के हिन्दुओं का कल्याण होगा।

२२. श्री रजनी कान्त शास्त्री, बी० ए०, बी० एल०

कहते हैं कि इस जाति पांति के कारण ही हिन्दुओं में परस्पर इतना द्वेष भाव फैला कि वे एक होकर विदेशियों का सफल सामना न कर सके,

जिसका फल यह हुआ कि भारत पराधीन होगया। अतः इसको शीघ्र ही समाप्त कर देना चाहिये।

२४. हमारा सनातन धर्म नाश हो गया

प्यारे पाठक! जब २ कोई समाज सुधारक (Social reform) अपने देशोन्नति के निमित्त समाज सुधार के लिये मानव समाज की सेवा में खड़ा होता है। और अपने वचनों द्वारा ईश्वर और धर्म के ठेकेदार की प्रवृत्तियों के विषय में जनता जगत को सावधान करता है। तब ये मिथ्या ठेकेदार लोग घबरा जाते हैं और उनके ठोस (Solid) कार्यों में नाना प्रकार के विघ्न बाधा उपस्थित करते हुए कहना तथा चिल्लाना शुरू करते हैं कि देखो! ये लोग जाति पांति को तोड़ना चाहते हैं। भंगी, चमार तथा कोली को ब्राह्मणों के साथ बिठा कर एक पंक्ति में भोजन कराते हैं। हमारे ठाकुरजी के मन्दिर में इनको प्रवेश करा कर ठाकुरजी का अपमान करते हैं। ये लोग हमारे सनातन धर्म को नाश करने के लिये कुठाराघात कहां से पैदा हो गये। अब देखिये! जो महापुरुष देश सेवा निमित्त कुछ समाज सुधार करना चाहता है, तब तो ये लोग उनको खोटी खरी कहने में तनिक भी संकोच नहीं करते। किन्तु जब ये स्वयं ही अपने स्वार्थ के लिये सनातन धर्म को नाश कर डालते हैं तब ये स्वयं के लिये ऐसा क्यों नहीं कहते कि हम लोग केवल पेट पालने के लिये सनातन धर्म को नाश कर रहे हैं, उस समय तो सब चुप होकर गिद्धों वाली दावतें उड़ाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि जब इनके स्वार्थ का प्रश्न सामने आता है तब ये लोग उसकी पूर्ति के निमित्त चाहे सारे सनातन धर्म के सिद्धान्त नाश हो जावें तो भी उसकी परवाह नहीं करते, किन्तु जब कोई सज्जन महापुरुष इनकी नीच करतूतों के विवरण जनता के समक्ष में रखता है तब इनका सनातन धर्म शीघ्र ही नाश हो जाता है। कहावत प्रसिद्ध है कि:—

"लखत फिरे पर की फूली देखे नहीं निज टैंट"।

अर्थात्:---दूसरों को तो ये लोग दोष देना चाहते हैं, किन्तु अपने दोषों पर ध्यान नहीं देते। अतः यहां पर लिख कर पाठकों को बताया जाता है कि ये लोग अपने स्वार्थ के निमित्त सनातन धर्म के सिद्धान्तों को किस प्रकार नाश करने में लगे हुए हैं। जरा सुनिये:—

देखो! जब कोई गरीब हरिजन इनके कुवे पर पानी भरना चाहता है, तब ये लोग उसको कुवे पर चढ़ने नहीं देते हैं, क्योंकि हरिजन के कूवे पर चढ़ने से इनका सनातन धर्म नाश हो जाता है। किन्तु वही हरिजन यदि ईसाई तथा मुसलमान हो जावे, तब वह इनके कुवे पर चढ़ कर पानी भर सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि जब तक वह हरिजन इनकी मिथ्या वर्ण व्यवस्था में बंधा रहा तब तक तो वह इनके कुवे पर पानी भरने का का अधिकारी नहीं हुआ किन्तु जैसे ही वह इनकी वर्ण व्यवस्था से मुक्त हुआ त्यों ही वह इनके कुवे पर चढ़ने का तथा इनके पास में बैठ कर बातचीत करने का अधिकारी हो गया। अब पाठक सोच सकते हैं कि इनका सनातन धर्म बड़ा हुआ या ईसाई तथा मुसलमान धर्म! तो कहना पड़ेगा कि इनके नीच सिद्धान्तों से तो ईसाई तथा मुसलमान धर्म की ही श्रेष्टता सिद्ध होती है।

आज यदि कोई हरिजन मार्ग में जा रहा हो तो ये नकली सनातन धर्मी उससे छूतछात का भाव रखेंगे। किन्तु जब ये रेलगाड़ी में सफर कर रहे हों, और वह हरिजन भी रेलगाड़ी में जा रहा हो तब ये कुछ न बोलेंगे, बल्कि वह हरिजन रेलगाड़ी में उनके पास में बैठने का अधिकारी हो जायगा। क्योंकि भूतपूर्व गवर्नमेन्ट ने सब मनुष्यों के लिये मनुष्योचित अधिकारों को प्राप्त करने के लिये पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की थी। इससे ज्ञात होता है कि इन नकली सनातन धर्म के मानने वालों का यह भाव हमारे देश वासियों को केवल भ्रम में डालने के लिये है, बाकी छूता छात कोई परमात्मा के घर से नहीं आई है, यह तो वर्ण व्यवस्था के दुष्परिणाम का तथा परस्पर खैंचा-तानी के द्वारा दूसरे प्राणियों पर अपना प्रभुत्व जमाये रखने की ही भावना

है। क्योंकि इनकी यदि यह भावना सच्ची होती तो इनका यह छूताछूत सर्वत्र बना हुआ दिखाई देता, किन्तु विदेशियों की सच्ची नीति तथा सत्य सिद्धान्तों के सामने इनका नकली सनातन धर्म दूर भाग जाता है। अभी जब भारत को स्वतन्त्रता मिली, और यहां का शासन सूत्र हमारे देश वासियों के हाथ में आया तब हमारी वर्तमान कांग्रेस गवर्नमेन्ट ने भी महात्मा गांधीजी के हरिजन उद्धार के सिद्धान्तों के अनुसार समाज सुधार करना शुरु कर दिया, तब इनका वही नकली सनातन धर्म का सिद्धान्त सामने आया, और उसको सामने रखते हुए पुनः लोगों को बहकाना शुरू कर दिया, कि कांग्रेस गवर्नमेन्ट समाज सुधार के बहाने हमारे सनातन धर्म को नाश करना चाहती है। इससे सिद्ध होता है कि इनका सनातन धर्म का ढोंग केवल हमारे देश वासियों पर ही चलता है, किन्तु विदेशियों के सामने टप्प हो जाता है। अतः हमारे देश वासियों को हमारे इन नकली सनातन धर्म वालों से सावधान रहते हुए अपने असली सनातन धर्म कि जिसमें समस्त संसार के प्राणियों का समावेश तथा समस्त मानव जाति के उच्च सिद्धान्त सुरक्षित हैं, उसको पालन करना चाहिये। और सुपाश देते हुए इस योग्य बना लेने चाहिये कि जिससे कोई मनुष्य उनसे घृणा न करे, और हमारे राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक प्रत्येक कार्यों में हमारे सहयोगी हो सकें।

देखो। ये नकली सनातन धर्मी जब कुवे पर स्नान करते हैं, और जिस रस्सी और डोल से पानी निकालते हैं, तो उसको हजारों दफा ही मिट्टी और जल से साफ करते रहते हैं। आपने प्रत्येक धार्मिक कुओं पर तथा बगीचियों के कुओं पर धार्मिक डोल बाल्टी पड़े देखे होंगे, वहां पर ये लोग सायं प्रातः शौच तथा स्नानादिक के बहाने सैकड़ों ही पहुँचते हैं और प्रत्येक आदमी उस डोल (पात्र) को अनेकों ही समय मार्जन करते हैं, क्योंकि इनका तो सिद्धान्त ही यह है कि एक दूसरे के हाथों से छू जाने पर ही पात्र अशुद्ध हो जाता है। अब देखिये! धार्मिक बगीची तथा देवालयों पर तो इनका यह हाल है, किन्तु जब ये लोग रेलगाड़ी में सफर करते हैं तो

अपने सारे सनातन धर्म के सिद्धान्तों को स्वयं नाश कर डालते हैं। आपने देखा होगा कि जब रेल गाड़ी में सफ़र करते हुए इन लोगों को प्यास लगती है, तब ये लोग वाटर मेन जो रेलवे की ओर से नियुक्त होता है उससे पानी मांगते हैं, और वह वाटर मेन अपनी उस बाल्टी से मुसलमान, ईसाई, हरिजन, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य आदि सब को ही पानी पिलाता है, और उस बाल्टी को वह कभी मृतिका से शुद्ध नहीं करता। और फिर इसी पानी को ये नकली सनातन धर्म का बहाना करने वाले लोग भी बड़े प्रेम से पीते हैं। और इनके इस सिद्धान्त से सनातन धर्म नाश हो जाता है तो फिर ये लोग ऐसा क्यों करते हैं ? इससे ज्ञात होता है कि जब इनको अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है तब तो ये लोग अपने सनातन धर्म को नाश कर डालते हैं, और दूसरे अन्य समय में सनातन धर्म सनातन धर्म कह कर चिल्लाते रहते हैं तो ऐसी स्थिति में इनका यह चिल्लाना ढोंग नहीं तो और क्या कहा जावेगा। इनके इस दिखावटी रहस्य का ही यह प्रताप है कि आज मनुष्य अपने सजातीय मनुष्य में घृणा तथा छूताछूत करने लग गया है। अतः युवकों को इससे सदा सर्वदा बचना चाहिये।

इसी प्रकार जब ये नकली सनातन धर्म का ठेका लेने वाले ठेकेदार किसी कुवे पर अपना डोल बाल्टी लेकर पानी भरने को जाते हैं, और उसी समय बिचारे गरीब लोग माली, जाट तथा कुम्हार आदि भी पानी लेने के लिये अपनी डोल बाल्टी तथा रस्सी लेकर पहुंच जाते हैं। और आपस में पानी खैंचते हैं, तब ये धर्म के ठेकेदार इस बात का ध्यान रखते हैं, कि वे माली जाट तथा कुम्हार अपना डोल उनके डोल पर कुवे में डाल न देवें अर्थात् इनके डोल में उनका डोल न छू जावे। यदि किसी गलती से डोल से डोल कुवे में छू भी जावे तब ऐसी स्थिति में वे लोग अपने सनातन धर्म के सिद्धान्त से इस डोल को अपवित्र मान लेते हैं, कई समय लोगों में इस विषय पर झगड़ा भी होते देखा होगा ? अब वह डोल शुद्ध कैसे होता है ? सो सुनिये। थोड़ी सी मिट्टी नाम मात्र को डोल के भीतर डाल दी और

थोड़ी सी बाहिर बुरकादी, बस इतना करने से ही इनका डोल पवित्र हो गया, और उस मिट्टी वाले डोल को ही पुनः कुवे में डाल दिया। मैंने इन धर्म के ठेकेदारों को कई समय देखा है कि जब ये शौच कर वापिस आते हैं। तब ये लोग लोटा भर कर मिट्टी लाते हैं, क्योंकि यहां इनको मिट्टी की कोई कीमत नहीं देनी पड़ती, किन्तु बम्बई आदि शहरों में जाकर इनकी यह भावना नष्ट हो जाती है, क्योंकि वहां पर मिट्टी नहीं मिलती, और जो मिलती है तो बड़ी मंहगी दामों से मिलती है, अतः वहां पर तो नाम मात्र से ही अपना काम चला लेते हैं। किन्तु जहां पर मिट्टी मुफ्त मिलती है, वहां पर इनको लोटा भर कर चाहिये। अब ये लोग उस मिट्टी को लाकर कुवे पर ढेर लगा देते हैं, डोल को मांजने का काम नहीं किन्तु एक मुट्ठी मिट्टी डोल के भीतर डाल दी और एक मुट्ठी डोल के ऊपर बुरकादी कि बस डोल मार्जन हो गया और कुवे में छोड़ कर पानी निकाल लिया, इस प्रकार एक २ आदमी तीन २ समय डोल को मार्जन करते हैं, और मार्जन करने वाले सैकड़ों ही लोग कुवे पर पहुंचते हैं। अब इस हिसाब से पाठकगण सोच सकते हैं, कि दिन भर में कितनी मिट्टी कुवे में पहुँचती होगी और उसका कुप्रभाव मनुष्यों के स्वास्थ्य पर कितना खराब पड़ता होगा, किन्तु ये लोग अपनी अज्ञानता के कारण किसी के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देते। और जिस डोल मांजने के उद्देश्य से ये लोग इस क्रिया को करते हैं उससे इनका उद्देश्य भी पूरा नहीं देखा जाता। यदि कोई मनुष्य मन लगा कर एक ही समय डोल को मिट्टी से रगड़ कर मांज लेवे तो वह चांदी की भाति चमक जाता है किन्तु इनके द्वारा हजारों वार मार्जन किये हुए डोल को भी यदि आप ध्यान पूर्वक देखेंगे तो डोल का चमकना तो दूर रहा, किन्तु उसके पैंदे में काई जमी हुई पाठको की दृष्टि में आवेगी।

कहने का अभिप्राय यह है, कि इनकी ये जितनी भी क्रियाये हैं, सब दूसरों को दिखाने के लिये और अपना बड़प्पन रखने के लिये केवल धोखा मात्र हैं। पाठक इस बात का विचार करें कि जब कुवे पर इनका

डोल पानी निकालते समय किसी दूसरे डोल से छू जाता, और उस छू जाने को ये अपने बनावटी सनातन धर्म के सिद्धान्तों से अपवित्र समझते हैं ! किन्तु जब ये लोग पानी लेने के लिये अपनी डोल बाल्टी लेकर किसी नल पर पहुँचते हैं, और वहां भीड़ में एक दूसरे के ऊपर दूसरा अपने बर्तन डालते ही रहते हैं तो वहां पर इनका सनातन धर्म क्यों नहीं नाश होता है। इससे यह तात्पर्य निकलता है कि यह सनातन धर्म विचारा इनका खरीदा हुआ निज का सिद्धान्त है कि जब जी चाहे इसको अपने स्वार्थ के लिये नाश कर दिया और जब जी चाहे तब इसको अपने स्वार्थ के निमित्त सनातन धर्म सनातन धर्म कह कर पुनर्जीवित कर लिया। इससे सिद्ध होता है कि इनकी ये सब क्रियायें न तो धर्म है और न सिद्धान्त, केवल दूसरे लोगों पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिये और छूताछूत का भेदाभेद डालते हुए देश और राष्ट्र को नाश करने के निमित्त ही हैं। जो बुद्धिमानों को सदा सर्वदा त्यागने योग्य है।

इसी प्रकार खाने पीने की चीज़ों के विषय में भी इन्होंने कई प्रकार की कपोल कल्पनायें बना रखी हैं। माली, जाट तथा कुम्हार आदि को तो इन्होंने शूद्र संज्ञा देते हुए इनके हाथ से बनाया हुआ भोजन नहीं करते हैं, चाहे वे ब्राह्मणों को कितनी ही शुद्धतापूर्वक रोटी दाल बना कर खिलावें किन्तु ये लोग उनके बनाये हुए भोजन को कच्चा भोजन कह कर छोड़ देते हैं, और कहते हैं, तुम्हारे यहां का कच्चा भोजन स्वीकार नहीं करते; किन्तु हां ! अलबत्ता यदि तुम लोग पुरी कचौड़ी, हलवा तथा खीर आदि बनाकर खिलावो तो अवश्य तुम्हारे हाथ का बनाया भोजन स्वीकार कर सकते हैं। अब देखिये एक तरफ तो दाल रोटी आदि कच्चा भोजन करने से तो इनका सनातन धर्म नाश होजाता है किन्तु दूसरी तरफ उन्हीं व्यक्तियों के द्वारा बनाये हुए खीर पुरी तथा हलवा आदि पदार्थों को झट ही भोजन कर लेने में इनका सनातन धर्म नाश नहीं होता है यही एक आश्चर्य की बात है। जहाँ इन को सूखी रोटी खाने को मिलती, वहाँ तो इनका सनातन धर्म नाश हो जाता

है, और जहाँ इनको माल खाने को मिला तो वहां सनातन धर्म वैसा का ही बना रहता है। धर्म क्या है ? मानों मोम की नाक है, कि जिसको जिधर घुमाना चाहो उधर ही घूम जावेगी। अब देखिये! जिस दाल रोटी को इन्होंने कच्चा भोजन कह दिया और हलुवा पुरी आदि पदार्थों को पक्का भोजन समझ लिया, अब इनके इस मिथ्या सिद्धान्तों को कौन मान सकता है; क्या दाल रोटी कच्ची है ? कच्ची रोटी को कोई खाकर तो देखे! कैसा जोर से पेट में दर्द चलने लग जाता है। अतः यह सिद्धान्त इनका दुनिया को बहका कर अपना अर्थ सिद्ध करना है। अब मैं अपने पाठकों को इस कच्चे तथा पक्के भोजन का जो वास्तविक सिद्धान्त है, सो समझाता हूँ। कच्चा पक्का पदार्थ लोक में दो प्रकार से सिद्ध होता है। एक तो वस्तु अग्नि और जल द्वारा सिद्ध हो जावे वह पक्की होती है जैसे दाल, रोटी तथा शाकादि। और दूसरी जो समय पाकर पक जावें, जैसे आम, अमरूद, अंजीर, सेब, तथा अंगूर आदि फल जो समय पाकर पक जाते हैं, वे तो पक्के कहलाते हैं। और न पके हुए फल कच्चे कहलाते हैं। अब इसके अतिरिक्त जो तीसरा साधन घी दूध तथा मिष्टान के संयोग से बनी हुई चीज ही पक्की होती है यह अपने स्वार्थ का रचा हुआ सिद्धान्त है। क्योंकि इसके द्वारा घी दूध की मात्रा अधिक खाने को मिल जाती है इसलिये इन्होंने पक्के तथा कच्चे का सिद्धान्त स्थिर (कायम) कर लिया है। जो प्रकृति तथा धर्म के सिद्धान्तों से विरुद्ध है। और देश तथा राष्ट्र दोनों को पतन करने वाला है।

अब इसके आगे पाठकों को इनकी कुछ और करतूतें वर्णन की जाती हैं। लुहार, सुनार तथा खाती आदि या कोई माली जाट तथा कुम्हार आदि लोग इन ब्राह्मणों को अपने घर पर निमन्त्रण करके बुलावें कि महाराज मेरे घर पर चल कर प्रेमपूर्वक शुद्धता से बना हुआ दाल भात का भोजन कर लीजिये तो ये लोग झट से उसको कह देंगे, कि हम तुम्हारे यहां कच्चा भोजन स्वीकार नहीं करेंगे। क्यों कि इस प्रकार करने से हमारा सनातन धर्म नाश हो जाता है, किन्तु किसी समय वे ही माली जाट तथा

कुम्हार आदि अपने घरों के सामने मिट्टी की चिलम लेकर तमाखू पी रहे हों, और कदाचित् कहीं से घूमते घामते पंडितजी की भी लार टपक पड़ी तो एकदम उन पीने वालों की पंक्ति में बैठ कर प्रेम से तमाखू पीने लगते हैं। कई समय तो देखा जाता है कि पीने वालों के मुख का थूक तथा लार तक पीते समय चिलम को लग जाता है। अब भला बतलाइये! क्या यह चिलम गंगाजी की रेणुका से बनाई है, कि जो पवित्र मान ली गई, और जो भोजन बड़ी पवित्रतापूर्वक बनाया गया था उसको अशुद्ध मान लिया गया! बस यही सनातन धर्म को भ्रष्ट करना है।

अब पाठकों को पता लग गया होगा, कि ये नाम मात्र ब्राह्मण लोग अपने स्वार्थ के लिये किस प्रकार रात दिन इस सनातन धर्म को नाश कर रहे हैं किन्तु इनको "स्वार्थी दोषो न पश्यति" इस वार्ता के अनुसार अपना यह महान् दोष दिखाई नहीं देता। किन्तु जब कोई समाज सुधारक अपने समाज सुधार तथा राष्ट्र के हित के लिये प्रचार करता है कि भाई! "जाति पांति तोड़दो, सब मनुष्यों को योग्य बना कर अपने समान समझो, भेदाभेद को दूर करो, छूताछूत को पानी में बहा दो।" तब ये लोग चिल्लाने लगते हैं, कि हमारा सनातन धर्म नाश हो रहा है। अब यह इनका चिल्लाना केवल अपने स्वार्थ के निमित्त भोले भाले जीवों को धोखे में डालने के लिये है। अतः मनुष्य मात्र का कर्तव्य है कि वह सदा ऐसे मनुष्यों से कि जो ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देने वाले हैं इनसे सदा सर्वदा सावधान रहना चाहिये।

२५ छूताछूत पर कुछ विचार

यदि ज्ञान दृष्टि से देखा जाय तो संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है कि जिसको हम अछूत कह सकें। इस समय जो हमको छूताछूत दिखाई दे रहा है वह केवल हमारा मिथ्याभिमान तथा स्वार्थ पूर्ण कामनाओं की विशेष

प्रवृत्तियां हैं, अथवा यों कहिये कि हम ने अपने बड़प्पन को रखने के लिये ऊँच नीच तथा भेदाभेद की कल्पना करते हुए आत्म ज्ञान के स्तर से बहुत नीचे गिरा लिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि हमने मनुष्य होते हुए भी इतर प्राणियों से घृणा उत्पन्न की और अपने आपको अनेकों फिरकों तथा जातियों में विभाजित करके एक दूसरे का प्राण लेने पर कटिबद्ध हो गये। आज ब्राह्मण ब्राह्मण में भेद, क्षत्रिय क्षत्रिय में भेद, इसी प्रकार अनेकों जातियों में भी अनेकों प्रकार के भेदों की कल्पना करादी। इस भेदाभेद की कल्पना से ही एक दूसरे के हाथ का खाने पीने में, उठने बैठने में, तथा विश्व बंधुत्त्व प्रेम से सब को विमुख बना दिया। यह भेदाभेद केवल हमारे शरीरों तक ही सीमित न रह गया, किन्तु इसने हमारे धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्र पर भी हाथ मारा, और सब तरह से भारत को खोखला बना दिया। आज पशु पक्षियों को देखिये! कितना प्रेम तथा संघठन है, क्या इन में भी आपको खाने पीने, बैठने उठने की कोई पंक्ति भेद दिखाई देता है! किन्तु इस मिथ्या भेदाभेद की कल्पना ने बौद्धिक शक्ति का दावा करने वाले मनुष्य समाज को इस पशु पक्षियों के समाज से भी नीचा गिरा दिया है। हमारे इस भेदाभेद के कारण ही बिचारे ईश्वर को, देवी, देवताओं को तथा तीर्थादिकों को भी छोटा बड़ा बना दिया है। आज एक मन्दिर में ठाकुरजी के सामने हजारों स्त्री तथा पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड एकत्रित होकर हाथ जोड़ रहे हैं, नाना प्रकार के हविष्य पदार्थ भोग लगा रहे हैं। ठाकुरजी खाने पीने तथा वस्त्राभूषण पहिनते २ अघा गये हैं। किन्तु बिचारे दूसरे ठाकुरजी के सामने एक पुजारी को छोड़ कर दूसरे स्त्री पुरुषों का दर्शन ही दुर्लभ है। और खाने को हविष्य पदार्थ तो दूर रहे, किन्तु सूखा चना भी मिलना कठिन हो रहा है। इसी प्रकार तीर्थादिक तथा देवी देवताओं में भी अनेकों प्रकार के भेदों की कल्पना पाई जाती है। कहने का अभिप्राय यह है कि इस छूताछूत का प्रभाव मनुष्य क्षेत्र से भी बढ़ कर ईश्वर तथा देवी देवताओं तक पहुँच चुका है जो हिन्दू जाति के लिये बहुत ही कलंक की बात है।

प्राकृतिक नियमों से पता चलता है कि मनुष्य किसी भी तरह अछूत नहीं माना जा सकता। आज जो मनुष्य मेहतर तथा चमार आदि हरिजनों को अछूत समझ रहे हैं, उनसे पूछा जाता है, कि ये विचारे क्या घृणित कार्य कर रहे हैं, कि जो अछूत कहलाने के अधिकारी समझे गये? क्या समाज की सफाई अर्थात् गंदगी को दूर करने वाले अछूत कहला सकते हैं? मुझको तो संसार में दो ही शक्तियां ऐसी दिखाई देती हैं कि जिनको महा पुरुष कहा जा सकता है। एक तो वे ज्ञानी महात्मा हैं, कि जो निस्वार्थ भाव से अपने वचनामृत द्वारा सत्य उपदेशों से जनता जगत के अन्तः करण रूपी मलों को धो २ कर साफ कर रहे हैं, और दूसरे नम्बर ये विचारे हरिजन लोग हैं, कि जो जनता जगत के द्वारा फैलाई हुई बाहरी गंदगी को दूर करके उनको सदा पवित्र बनाये रखते हैं। इस प्रकार ये दोनों महापुरुष मिल कर संसार की बाहिर तथा भीतरी शुद्धि को सदा बनाये रखते हैं। अब जो मनुष्य इन हरिजन को अछूत बनाये रखने में ही अपना गौरव समझता हो, उसको लज्जा रूपी समुद्र में डूब मरना चाहिये, क्या किसी एक भी देश का उदाहरण बता सकते हो, कि जहां पर मनुष्य अछूत समझा जा सकता हो? संसार में बड़े २ सभ्य राष्ट्र हैं, किन्तु किसी भी राष्ट्र निवासियों ने यह घोषणा नहीं की, कि मनुष्य अछूत है, फिर हमारे देश के पंडे पुजारियों में ही यह भावना कहां से आगई, कि जिसके द्वारा संसार का महान उपकार करने वाले करोड़ों की संख्या में रहने वाले भोले भाले हरिजनों को अछूत बना कर उनके मानव जीवन को नष्ट कर दिया। क्या इनका यह अन्याय उस दुष्ट कसाई से कुछ कम है, कि जो एक भोले जीव को अपने स्वार्थ के लिये उसके गले पर छुरी चलाने में तनिक भी संकोच नहीं करता।

यदि कोई यह कहे कि हरिजन गंदा काम करते हैं अर्थात् मल मूत्र उठा कर साफ करते हैं, तो प्यारे भाइयो! क्या मल मूत्र उठाने में या सफाई का काम करने में कोई पाप होता है? देखो! तुम लोग नित्य शौचादि के निमित्त पाखाने में जाते हो, उसमें जब तक शौच से निवृत्त न

हो जावे तब तक बैठा रहना पड़ता है, फिर तुमको अपनी गुदेन्द्रिय को तथा मल त्याग इन्द्रिय को अपने हाथ से साफ करना पड़ता है। इस प्रकार प्रति दो टेम तो मेहतर का काम सभी जीवों को करना पड़ता है, किन्तु कोई भी आदमी तुम में से अपने आपको मेहतर नहीं कहता, सब लोग अपने नामों के साथ में शर्मा तथा वर्मा का पद लगाये बैठे हो। फिर और देखो। तुम्हारे घरों में तुम्हारी स्त्रियां सब अपने बच्चों की टट्टियां अपने हाथ से साफ करती हैं, उनके गंदे कपड़े धोती हैं, किन्तु कोई भी तुम में से उनको मेहतरानी नहीं कहते। ये स्त्रियां अपने परिवार के बच्चों की तो टट्टियां उठा लेती हैं, किन्तु दूसरे परिवार के बच्चों की टट्टी उठाने में घृणा करती हैं। क्योंकि इनकी आत्मा शक्ति केवल अपने परिवारिक भावना में ही समाप्त हो जाती है। किन्तु जिन मनुष्यों की आत्म शक्ति बढ़ जाती है वह जगत में विश्व बन्धु की भावना लेकर सेवा करता है। इसी प्रकार ये हरिजन लोग भी अपनी राष्ट्रीय भावना में बंधे हुए जनता जगत को अपना परिवार समझते हैं, और आप लोगों को अपनी इस परिवारिक भावना से अपना बाल बच्चे समझते हैं, तथा आप लोगों की टट्टी पेशाब साफ करते हुए आपकी गंदगी दूर करके आपको अनेक प्रकार के रोगों से बचाते हैं। यदि ये हरिजन लोग एकत्रित होकर आपकी टट्टी पेशाब उठाना बन्द करदें, तो आपका सारा संसार नरकालय बन जावेगा। फिर आपको स्वयं टट्टी पेशाब उठाना पड़ेगा, और हर एक के लिये मेहतर बनना पड़ेगा। अतः आप लोग व्यर्थ इनको अछूत बना कर अपने शिर पर कलंक का टीका क्यों लगाते हो ?

फिर यदि आप लोग ये कहें कि ये हरिजन लोग सदा गंदे क्यों रहते हैं ? तो इसका कारण यह है कि आप लोगों ने इनके साथ इतने अन्याय तथा अत्याचार किये हैं कि जिसकी कोई हद नहीं है, आप लोगों की ये जितनी सेवा करते हैं उतना आप लोग उनको फल नहीं देते हैं अर्थात् आपकी ओर से न इनको खाने पीने का सुपाश है और न पहिनने तथा

रहने का ही सुपाश है। कहीं आपने ऐसा भी प्राणी देखा है कि जिसको सर्व प्रकार का सुख होते हुए भी फिर अपने आपको गंदा बनाये रखे। मेरी समझ में तो ऐसा कोई भी प्राणी देखने को न मिलेगा। किन्तु आप लोगों के अन्याय अत्याचारों के कारण तथा आप लोगों के द्वारा निर्धारित किये हुए कठिन प्रतिबन्धों के कारण ही आज भारत की १६ करोड़ संतान फूट २ कर आपको कोस रही है, तो फिर क्या आप इनके आर्तनाद से सुखी हो सकते हैं? अतः भाइयो! अब तो विचारे गरीब जीवों के वे कठिन प्रतिबन्ध तोड़दो। और इनको मनुष्योचित अधिकारों की व्यवस्था करो आज अन्य देशों को देखो। क्या वहां पर कोली, चमार तथा महतर नहीं हैं? तो कहना पड़ेगा कि सब कुछ हैं। किन्तु वहां पर कोई भी आदमी गंदा नहीं नहीं है। क्योंकि उन लोगों ने इनको सर्व प्रकार का सुपाश दे रखा है। देखो। वे लोग समय के अनुसार अपनी ड्यूटी देते हैं. ड्यूटी देने के पश्चात् सब को तेल साबुन तथा बाथ रूम (नहाने के कमरे) की व्यवस्था है, कपड़े बदलने की व्यवस्था है, होटल में जाकर सब के हाथ बैठकर खाने की व्यवस्था है, गिरिजाघर में जाकर सब के साथ भगवान की प्रार्थना करने की व्यवस्था है, राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में भाग लेने की व्यवस्था है। कहने का अभिप्राय यह है जि उन देशों के लोगों में किसी भी व्यक्ति के साथ में कोई अन्याय तथा अत्याचार की भावना नहीं है। क्योंकि वहां पर प्रत्येक मनुष्य को अधिकार है कि वह राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक प्रत्येक क्षेत्र में जा सकता है, और मनुष्योचित अधिकारों को प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि वहां के लोग सर्व प्रकार के सेवा सम्बन्धी कार्यों के करते हुए भी कोई अछूत (गंदा) नहीं रहा। सब लोग मानव जीवन के उचित अधिकारों को प्राप्त किये हुए सहर्ष जीवन व्यतीत कर रहे हैं। किन्तु यहां पर हरिजनों के साथ में इतने अन्याय तथा अत्याचार किये गये हैं, कि जिनकी कोई सीमा नहीं है। मनु० अध्याय १० मन्त्र २५ में लिखा है:—

उच्छिष्ट मन्नं दातव्यं जीर्णानि वसनानि च ।
पुल्काश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छदः ॥

अर्थात्:—शूद्र को भोजन के लिये जूठा अन्न, पहिनने के लिये पुराने वस्त्र तथा बिछाने के लिये धान का पुआल एवं पुराने गुदड़े आदि देना चाहिये। फिर लिखा है कि:—

न शूद्राय मति दद्यान् नोच्छिष्टं न हविष्कृतम्।
न चास्योपदिशेद्धर्म्मं न चास्य व्रतमादिशेत् ॥
यो ह्यस्य धर्म्म माचष्टे यश्चैवादिशति व्रतम्।
सोऽसंवृतं नाम तमः सहते नैव मज्जति ॥

अर्थात्:—शूद्र को बुद्धि नही देनी चाहिये। अपने सेवक के अतिरिक्त दूसरे शूद्र को जूठन तथा हव्य के हुतावशिष्ट भाग को न देवे। शूद्र को धर्म उपदेश न करे, अथवा उसे किसी व्रत का भी उपदेश न देवे। जो पुरुष शूद्र को धर्मोपदेश वा प्रायश्चित्तादि किसी व्रत का उपदेश करता है, वह उस शूद्र के साथ असंवृत नाम नरक में डूबता है।

अब पाठक विचार कर सकते हैं कि जब शूद्रों के लिये इतनी कठिन व्यवस्था करदी है। तब ये बिचारे क्या उन्नति कर सकते हैं, और यदि कोई उन्नति भी करे तो इनके लिये कठिन २ दंड विधान किये गये हैं। अर्थात् जिस प्रकार ब्राह्मणों ने अपनी श्रेष्ठता बता कर संसार सम्बन्धी सारे भोग भोगने का ठेका ले लिया, इसी प्रकार बिचारे शूद्र को संसार के सारे सुखों से पृथक् करके सब से गया बीता नीच से भी नीच बना दिया। इस प्रकार बिचारे भोले जीवों को सब प्रकार से अपने बन्धन में डाल कर नर पशु बना लिया। पहिले इन मनुष्यों को शूद्र कह कर शरीर सम्बन्धी सारे कार्य लिया करते थे किन्तु इनके लिये अछूत कहीं नहीं समझा जाता था। अब आज कल जो मनुष्य इनको अछूत समझ रहे हैं, उसका कारण क्या ? तो कहना पड़ेगा, कि वही अन्याय तथा अत्याचार का फल है कि जो इनको कई प्रकार

प्रतिबन्ध बना २ कर जकड़ लिया था। अब जो मनुष्य यह कहते हैं, कि इन लोगों की गंदगी को देखकर अछूत समझ लिया। तो प्यारे भाइयो! इसमें दोष किसका है, आप जैसे इनसे काम लेते हो वैसा इनको फल क्या देते हैं? वही झूंटी रोटी, वह भी पेट भर कर नहीं, फटे पुराने कपड़े वे भी पुष्कल नहीं, रहने को गांव या नगर से बिल्कुल बाहिर और फिर भी मकान आदि की कोई व्यवस्था नहीं, नहाने की तो कौन कहे जब विचारों को पीने के लिये शुद्ध पानी ही नहीं, पढ़ने लिखने की तो बात ही क्या, जब विचारे को सत्य उपदेश सुनने का ही अधिकार नहीं। और तिस पर सबसे बड़ा अत्याचार यह है कि उसको सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक किसी भी विषय में उसको प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं। ऐसी स्थिति में वह विचारा गंदा न रहे तो क्या करे? अतः जनता जगत को चाहिये कि वह इन हरिजनों को प्रत्येक वस्तु का सुपाश तथा प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने का अधिकार देते हुए इस अछूत रूपी कलंक के टीके को शीघ्र ही समाप्त करदे। क्योंकि किसी भी देश तथा सभ्य राष्ट्रों में मनुष्य के रूप में अछूत नहीं देखा जाता है।

आज लोग अछूतोद्धार! अछूतोद्धार!! तो चिल्लाते हैं, किन्तु वास्तविक में अछूतोद्धार क्या चीज है? इस पर ध्यान नहीं देते। आजकल का अछूतोद्धार भी केवल चिल्लाने वालों के पेट तक ही सीमित रह जाता है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष में देखी जाती है कि जो मनुष्य अछूतोद्धार का बहाना लेकर सामने आता है। और जनता जगत को अछूतोद्धार का पाठ पढ़ाता है, तब जनता के सामने वह सौ दो सौ अछूतों को एकत्रित करता है और हलुवा पुड़ी आदि किसी भी चीज़ को बनवा कर उन अछूतों के हाथ से जनता के सौ, दो सौ आदमियों में बटवा देता है। और ज्यादा से ज्यादा अछूतोद्धार करते हैं तो सौ, दो सौ अछूतों को एकत्रित करके किसी मन्दिर या देवालय में प्रवेश कर देते हैं बस यहीं पर इनका अछूतोद्धार समाप्त हो जाता है। तो प्यारे भाइयो! यह अछूतोद्धार न तो अछूतों को ही हित कर

है, और न जनता जगत को ही हितकर है। यह अछूत क्यों है ? इस बात पर जब तक विचार न किया जायगा, अर्थात् इनका अछूतपना जब तक शरीर से दूर न किया जायगा, तब तक वास्तविक में अछूतोद्धार न होगा। इसलिये बुद्धिमानों का कर्तव्य है कि वे सब से पहिले इनकी गंदगी को कि जिसके कारण ये बिचारे अछूत कहला रहे हैं उसको दूर करें। यह गंदगी कैसे दूर होगी ? तो जाने रहो, यह गंदगी केवल अछूतोद्धार अछूतोद्धार चिल्लाने से अथवा उन अछूतों को उपदेश देने मात्र से ही दूर न होगी। क्योंकि उपदेश तो केवल श्रद्धा दिलाने के निमित्त ही होता है, किन्तु यथेष्ट फल की प्राप्ति तो करने से ही सिद्ध होती है। अतः उपदेश देने के साथ ही साथ उनके लिये तथा उनके लड़कों के लिये स्थान २ पर जहाँ २ हरिजनों की कोलोनी हैं वहाँ २ पढ़ने के लिये सुन्दर व्यवस्था की जावे, भोजन के लिये सुन्दर प्रबन्ध किया जावे। वस्त्रों की ठीक व्यवस्था की जावे, रहने के लिये साफ मकानों का प्रबन्ध किया जावे, जल के लिये उनकी कोलोनी में सुन्दर कूप निर्माण किये जावें। इस प्रकार उनको प्रथम शारीरिक सुपास देकर उनकी गंदगी कि जिसके कारण ये लोग अछूत माने गये हैं उसको दूर करके फिर इनको राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में भाग लेने के अधिकारी समझे जावें। इससे पूर्व यदि उनकी गंदगी दूर न करके इनको धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में प्रवेश किये जांयगे तो इनकी गंदगी के कारण समाज में भी वे ही दोष आजावेंगे। समाज ने इनसे घृणा क्यों की ? तो कहना पड़ेगा, इनकी गंदगी से। और ये गंदे क्यों रहे ? तो कहना पड़ेगा, कि समाज के अन्याय तथा अत्याचारों से पीड़ित होकर उचित शारीरिक व्यवस्था तथा सुपाश न मिलने के कारण। अतः सबसे पहिले हमको इनके लिये हर प्रकार का शारीरिक सुपास देते हुए इनकी गंदगी को दूर करो, और कुछ समाज सुधारक इनकी कोलोनियों में जा जा कर इनको धार्मिक तथा राजनैतिक बातों से परिचय कराते हुए स्वच्छता तथा प्रकृतिक नियमों पर उपदेश दें, इस प्रकार जब इनकी शरीर की बाहिरी गंदगी दूर हो जावेगी तो समाज फिर इनसे स्वयं ही घृणा न करेगी। हमारे यहां पर भूत पूर्व विदेशी

गवर्नमेन्ट ने क्या किया था ? जब उसको अपनी शारीरिक सेवा के लिये कुछ व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ी तब उसने हमारे देश में मुसलमानों को तथा हरिजनों को अपनी सेवा के लिये खोज निकाला था। हरिजन उनके गृह सम्बन्धी परिचर्य्या के सभी काम करते थे, उनके टट्टी पेशाब भी साफ करते थे, घर की शुद्धि करते थे, बिछौना बिछाते थे, भोजन बना कर भी खिलाते थे, उनके साथ उनके गिरिजाघरों में भी जायाकरते थे।

कहने का अभिप्राय यह है कि ये लोग अंग्रेजों की गृह सम्बन्धी सारी सेवा करते थे। तो अब पूछना चाहिये कि वे गंदे रह कर उनकी सेवा किया करते थे ? तो कहना पड़ेगा कि उन्होंने इन हरिजनों को सर्व प्रथम शारीरिक सुधार की व्यवस्था की, अर्थात् उनको खाने, पीने तथा पहिनने का यथोचित प्रबन्ध करते हुए उनकी शारीरिक ऊपरी गंदगी को दूर कर दिया। फिर उनको राजनैतिक क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिये तथा उनको मानुषी अधिकार देने के लिये जनता पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा कर अपने राजनैतिक क्षेत्र में इसके अछूतपन को दूर किया। यथा रेल गाड़ी में हरिजन सब के साथ बैठ कर सफर करते थे, नलों पर सबके साथ पानी भर सकते थे। स्कूल और पाठशालाओं में उनके लड़कों को प्रवेश करके विद्या पढ़ा सकते थे। पढ़े लिखे हरिजनों के लिये राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने का पूर्ण अधिकार था, अर्थात् जैसे अन्य वर्ण के लोग तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यादिकों को बाबू बनने का अधिकार था, उसी प्रकार इन हरिजनों को भी पूर्ण अधिकार था। अतः मेरी जनता जगत से तथा हमारी वर्तमान गवर्नमेन्ट से अपील है कि वे इन हरिजनों को सर्व प्रथम इस गंदगी से दूर करें। अर्थात् उनको खाने, पीने नहाने धोने, रहने पढ़ने लिखने तथा हमारे साथ बैठने उठने की उचित व्यवस्था करें तो यही आपका इन गरीबों के लिये सच्चा अछूतोद्धार होगा, और हमारे राष्ट्र पिता स्वर्गीय महात्मा गान्धीजी की आज्ञा का पालन करना भी कहा जावेगा। यदि आप इनके प्रति अपने खजाने में से पैसा पाई कुछ भी खर्च न करते हुए नाम मात्र के लिये अछूतोद्धार २

चिल्लाते रहेंगे तो आपका चिल्लाना ऐसा होगा कि जैसे कोई मनुष्य अपने दोनों हाथों की मुट्ठी बन्द करके किसी अबोध बालक को प्रलोभन देते हुए दौड़ता लिये चले, और वह बच्चा इनके प्रलोभन के मोह से मोहित हो कोसों उसके पीछे दौड़ता चला जावे और वह आदमी आगे जाकर अपने दोनों हाथों की रीती मुट्ठी खोल कर बता दे और वह बच्चा उस आदमी का मुँह ताकते रह जावे। यही हाल आज आप अछूतों के साथ में कर रहे हैं, कि उनके लिये अपनी जेब में से कुछ खरच न करते हुए अछूतोद्धार २ चिल्ला रहे हो, तो आपको यह चिल्लाना इन हरिजनों के लिये ऐसा ही है, कि जैसा उस बच्चे को लड्डू के लिये झूठा प्रलोभन देना। इसे चिल्लाने से हरिजनों को कोई लाभ न होगा। अतः जनता जगत तथा राष्ट्र का कर्तव्य है कि वे इन हरिजनों के लिये सच्चा अछूतोद्धार करके बतलावें, ताकि देश और राष्ट्र दोनों के माथे से यह अछूत रूपी कलंक का टीका सदैव के लिये दूर हो जावे।

प्यारे पाठको! सच मानिये, किसी भी धर्म शास्त्र, देश तथा राष्ट्र में यह बात नहीं पाई जाती कि जहां पर मनुष्य अछूत देखे या सुने जाते हों। मेरी दृष्टि में तो भारतवर्ष में कुछ पंडे और पुजारियों को छोड़ कर मनुष्यों को अछूत कहने वाला दिखाई देता नहीं है, हां! यदि मुझको कोई अछूत दृष्टि आता है तो ये सिंह, बिच्छू तथा सर्प आदि हैं कि जिनके छूने से ये काट खाते हैं, और मनुष्य को घोर पीड़ा होती है। किन्तु ये बिचारे हरिजन जो रात दिन जनता की सेवा में दृढ़ संलग्न रहते हैं, और ये जनता की सेवा में अछूत बने हुए हैं, बस यही एक शोक की बात है। अतः इसका दूर करना मनुष्य मात्र का कर्तव्य है।

२६. क्षात्र धर्म सुधार

पूर्व में वर्ण व्यवस्था प्रकरण में पाठकों को लिख कर बता दिया गया है कि वेदों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों की जो कल्पना की गई है, वह मानव जाति के उच्च सिद्धान्तों को तथा राष्ट्र के नियमों को सुचारु रूप

से चलाने के निमित्त मनुष्यों के न्यारे २ गुण, कर्म तथा स्वभावों के अनुसार निर्धारित की गई थी। यह गुण कर्म तथा स्वभाव के अनुसार चालू की गई वर्ण व्यवस्था जब तक मानव समाज में ठीक २ चलती रही तब तक संसार सम्बन्धी तथा राष्ट्र सम्बन्धी सभी कार्य विधिवत् पालन होते रहे, किन्तु पीछे जाकर यह गुण कर्म स्वभाव वाली वर्ण व्यवस्था नाश को प्राप्त होकर जन्म गत वर्ण व्यवस्था कायम की गई, उसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को छोड़ कर सब के लिये उन्नति का मार्ग सदैव के लिये बन्द होता चला गया। विद्या, बुद्धि, कला कौशल तथा धन दौलत और संसार सम्बन्धी सर्व प्रकार के पदार्थों पर इन दोनों का ही प्रभुत्व दिखाई देने लगा, और वैश्य तथा शूद्र बिचारे इनके बनाये कठिन प्रतिबन्धों के द्वारा मूक पशु की भांति अपना जीवन चलाने लगे। ब्राह्मण तथा क्षत्रियों का जब तक सम्पर्क बना रहा तब तक भी कुछ विद्या, बुद्धि की उन्नति होती रही। क्षत्रिय विद्वान होने के कारण ब्राह्मणों को भी अपनी विद्या बुद्धि तथा अध्यात्म शास्त्रों में प्रवृत्त होना पड़ता था। और इन दोनों वर्गों में परस्पर शास्त्रार्थ भी होता रहता था। इस प्रकार क्षत्रियों को ब्रह्मऋषि बनने की अभिलाषा रहती थी, और ब्राह्मणों को सदा अपनी ब्रह्मऋषि पदवी को सुरक्षित रखने के लिये सावधान रहना पड़ता था। इस प्रकार परस्पर उन्नति के मार्ग को ग्रहण करते हुए विद्यादि सद्गुणों की बाढ़ सारे संसार में उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। इसी का यह प्रताप था कि विश्वामित्र जैसे क्षत्रिय राजाधिराज को भी ब्रह्म-ऋषि बनने के लिये कितनी कठिन तपस्या करनी पड़ी थी और वशिष्ट जैसे ब्रह्मऋषि से इस पद की प्राप्ति के लिये उसको कितने समय नीचा देखना पड़ा था। किन्तु कहावत प्रसिद्ध है कि पुरुषार्थी संसार में क्या नहीं कर सकता अर्थात् पुरुषार्थ करने से संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है कि जो सिद्ध न हो सके, बस इसी के प्रताप से विश्वामित्र ने अपने मनोभिलषित पद की प्राप्ति करली, और वशिष्ठ को भी विश्वामित्र के पुरुषार्थ के सामने झुकना पड़ा और उसको ब्रह्मऋषि की पदवी देनी पड़ी। उस समय क्षत्रियों को ही ब्रह्म-विद्या (Divine knowledge) प्राप्त करने के निमित्त ब्राह्मणों के पास

जाना पड़ता था, सो बात नहीं है किन्तु ब्राह्मणों को भी क्षत्रियों के पास में ब्रह्मविद्या अध्ययन करने के निमित्त समय समय २ पर उपस्थित होना पड़ता था। इस बात को सब जानते हैं कि व्यासजी ने अपने पुत्र शुकदेव के लिये राजा जनक के पास में आत्म विद्या सीखने के निमित्त भेजा था। इसी प्रकार उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु ने अपने पिता से पंचाग्नि विद्या (जो पूर्व जन्म के सिद्धान्त जानने की परम विद्या है) उसके विषय में पूछा था तो उसके पिता ने कहा कि बेटा मैं इस विद्या को नहीं जानता, कैकय देश का नरेश इस विद्या को भली भांति जानता है सो उसके पास में चल कर यह विद्या अवश्य प्राप्त करना चाहिये। उन दोनों पिता पुत्रों ने जिस प्रकार उस नरेश के पास जाकर पंचाग्नि विद्या को अध्ययन किया, सो सब छांदोग्योपनिषद् में पूर्ण प्रकार से वर्णन है सो पाठक वहां देख लेवें।

कहने का अभिप्राय यह है कि जब तक ब्राह्मण तथा क्षत्रियों में यह परस्पर विद्याऽध्ययन तथा अध्यापन की प्रणाली बनी रही तब तक ब्राह्मण लोग भी पढ़ने पढ़ाने में लगे रहे और अनेकों प्रकार की विद्या प्रचार में दृढ़ संलग्न रहे। किन्तु समय सदा एक सा नहीं रहता। इन दोनों को जब आवश्यकता से अधिक धन तथा विद्या बुद्धि तथा संसार सम्बन्धी भोगैश्वर्य प्राप्त होने लगा, तब आलस्य तथा प्रमाद की वृद्धि हुई, और क्षत्रियों ने अपनी प्रभुता (धनैश्वर्य) तथा राज मद आदि से चूर हो विद्या पढ़ना छोड़ दिया, और राजवैभवादि मिथ्याभिमान में पड़ कर अविद्या रूपी घोर निद्रा में शयन करते चले गये, जब ब्राह्मणों ने देखा कि क्षत्रियों ने विद्याऽध्ययन करना छोड़ दिया है तो फिर ये लोग क्यों पढ़ने में परिश्रम करने लगे, इस प्रकार अविद्या का क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया और ईश्वर और धर्म के नाम पर नाना प्रकार का धोखा चलने लगा। और सत्य विद्या तथा ईश्वरीय भावना शनैः २ ह्रास को प्राप्त होती हुई रसातल को कूंच करने लगी। जब इन ब्राह्मणों ने देखा कि हमको गांठ के पूरे और आंख के अन्धे क्षत्रिय रूप शासक वर्ग यजमान मिल गये हैं तो फिर इन्होंने इन पर खूब माया की कर-

दूत चलाना शुरू किया गया और इन से कितने ही प्रकार के राजनैतिक प्रबन्ध अपने स्वार्थ के लिये चालू कराये गये, इस प्रकार संसार में वैश्य तथा शूद्र समाज के लिये परमार्थिक सर्व प्रकार की उन्नतियां सदैव के लिये बन्द करदी गईं।

अब पाठकों को पता लग गया होगा कि क्षत्रिय समाज का पतन क्यों हो गया? तो इसका कारण यही कहा जा सकता है कि अविद्या देवी का ही यह प्रताप है। यह अविद्या देवी सदा सीधी बात को उलटी बनाती रहती है, यह अविद्या जिस देश व जाति में उत्पन्न हो जाती है, बस उसको शीघ्र ही नाश कर डालती है। यह अवकाश पाकर बड़े २ ज्ञानी तथा ध्यानियों को भी धोखे में डाल दुखी कर डालती है। अतः प्राणी मात्र का कर्तव्य है कि इससे सदा बचने की चेष्टा करते रहें। क्षत्रियों में जब विद्या प्रचार की कमी होगई और अनेक प्रकार के भोगैश्वर्य तथा पृथ्वी का राज मिल गया तो स्वतः ही आलस्य तथा प्रमाद को स्थान मिलना चाहिये; इस आलस्य तथा प्रमाद में फँस जाने के कारण इनमें अनेकों प्रकार के दुर्व्यसन भर गये, कोई मांस मदिरा में रत होगये, कोई अफीम तथा भंग खाकर नशे में चूर हो गये, तो कोई कबूतर, शशक तथा लोमड़ी आदि के मारने में ही अपनी वीरता का परिचय देने लगे। तो कोई २ इनमें से प्रजा के रक्त चूस २ कर पेट पालने को ही मुख्य कर्तव्य मान बैठे। इस प्रकार यह क्षत्रिय जाति जो सब जीवों की रक्षा के लिये नियुक्त हुई थी वह अब सबको घातक प्रतीत होने लगी। श्रीमद्भगवद्गीता में क्षत्रियों के पालन करने के लिये निम्नलिखित प्रकार से वर्णन किया गया है यथाः—

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं, युद्धे चाप्यऽपलायनम्।
दानमीश्वर भावश्च, क्षात्र कर्म स्वभावजम्॥

अर्थात्—बहादुरी, तेज, धृति, चतुरता, युद्ध से न भागना, दान देना तथा ईश्वर भावनायें क्षत्रियों के स्वभाविक कर्म बतलाये गये हैं। इसी

प्रकार मनुस्मृति (Religious Law) आदि में भी क्षत्रियों के पालन करने के लिये नियम वर्णन किये गये हैं। ये क्षत्रिय लोग पूर्व ज़माने में प्रजा की सब प्रकार से रक्षा किया करते थे, और मानव समाज की सुव्यवस्था के लिये ये अपने प्राणों तक को न्योछावर करके जनता जगत के कल्याण करने को सदैव तत्पर रहा करते थे और इन्हीं सद्‌गुणों के कारण इनका नाम क्षत्रिय रखा गया था। आज कल ये ही क्षत्रिय लोग राजपूत नाम से पुकारे जाते हैं। क्षत्रियों का नाम राजपूत क्यों पड़ा? इस पर विद्वानों के कई प्रकार के मत प्रचलित हैं। वेद शास्त्रों में क्षत्रियों के लिये राजपूत शब्द का प्रयोग किसी भी स्थान पर देखा नहीं जाता, अमर कोष जो संस्कृत का मूल कोष है, उसमें क्षत्रियों के पर्य्यायवाचक शब्द निम्न लिखित प्रकार से वर्णन किये गये हैं।

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजो क्षत्रियो विराट्।
राजा राट् पार्थिवक्ष्मा भृन्नृप भूप महीक्षितः॥

अर्थात्:—मूर्द्धाभिषिक्तो, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, विराट, राजा, राट्, पार्थिव, क्ष्माभृत, नृप, भूप और महीक्षित् ये क्षत्रिय शब्द के पर्य्याय वाचक हैं। देखिये:—इनमें कहीं राजपूत शब्द का तदर्थक कोई भी अन्य शब्द नहीं आया है। इसी प्रकार आजकल जो क्षत्रियों ने अपने नाम के साथ सिंह लगा रखा है सो यह सिंह शब्द भी प्राचीन काल में क्षत्रियों के नाम के साथ में कहीं भी लगा हुआ दिखाई नहीं देता। चन्द्र वंशी तथा सुर्यवंशी अनेकों प्रकार के शूरवीर राजा हो गये किन्तु किसी के नाम के साथ सिंह शब्द लगा हुआ दिखाई नहीं देता। इससे ज्ञात होता है कि क्षत्रियों में राजपूत तथा सिंह शब्द का प्रयोग मुसलमानी शासन काल से प्रचलित दीख पड़ता है। ये शब्द सम्भव है कि पृथ्वीराज तथा जयचन्द के शासन काल पीछे ही नियुक्त हुआ विदित होता है। भारतीय तथा यूरोपीय विद्वानों ने इस राजपूत काल का ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्णतः पता लगा लिया है। जिस काल में इस जाति का भारत के राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण हुआ, उस काल में यह

एक नवागन्तुक समझी जाती थी। बंगाल के अद्वितीय विद्वान स्वर्गीय रमेश चन्द्र दत्त महोदय अपने (Civilization in Ancient India) नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में लिखते हैं कि:—

The Rajputs were scarcely reckoned among Aryan Hindus before the eighth Century. We find no mention of this name in the literature of the country or in the records of foreign travellers and no traces of their previous culture ………………Dr. H. H. Willson has held that they were the descendents of the Sakas and other invaders who swarmed into India for centuries before the time of Vikramaditya (Vol. II. Page 164)

अर्थात्:—आठवीं शताब्दी के पूर्व राजपूत जाति आर्य हिन्दू नहीं समझी जाती थी। देश के साहित्य तथा विदेशी पर्यटकों के भ्रमण वृतान्तों में उनके नाम का उल्लेख हम लोगों को नहीं मिलता और न उनकी किसी पूर्व संस्कृति के चिन्ह ही देखने में आते हैं। डाक्टर एच० एच० विल्सन ने यह निर्णय किया है कि ये राजपूत उन शक आदि विदेशीय आक्रमण कारियों के वंशधर हैं कि जो विक्रमादित्य से पहिले, सदियों तक, भारत में झुन्ड के झुन्ड आए थे।

विद्वान् लोग जो कुछ भी इन राजपूतों के विषय में समझें सो समझें! किन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि यह राजपूत जाति अपने जमाने की एक बहुत ही पराक्रमशालिनी, विजयी तथा वीरप्रसू जाति सिद्ध हुई है। जो अपनी वीरता के कारण सर्वदा क्षत्रिय कहलाने के योग्य है। इस जाति ने मुसलमानों के उत्थान के मध्यवर्ती काल में जिसको राजपूत काल कहा जाता है, और जिस का मान लगभग ५०० वर्षों का माना जाता है। उस समय इन लोगों ने अपने विजय नाद का डंक्का भारतवर्ष के एक छोर से दूसरे

छोर तक बजवा दिया था। महाराजा पृथ्वीराज, राणा संग्राम सिंह तथा वीर केशरी राणा प्रताप सिंह इसी वीर जाति में पुरुष सिंह पैदा हुए थे कि जिनका प्रातः स्मरणीय नाम भारत के कोने २ में निनादित होता हुआ उनकी यशोकीर्ति पताका फहरा रहा है। और जिनके भय से भयभीत हो महमूद गौरी आदि विदेशी आक्रमणकारी भी लोहा मान गये थे। इन सब का मूल कारण इनकी ओर से प्रजा की सद्भावना ही थी। पूर्व जमाने से क्षत्रिय लोग प्रजा को अपने प्राणों से भी अधिक प्यारी समझते थे, वे लोग तनिक भी अपनी प्रजा के कष्ट को सहन नहीं कर सकते थे। यदि कोई अन्यायी, अत्याचारी तथा आक्रमणकारी दुष्ट मनुष्य अपने अन्याय तथा अत्याचार से जनता जगत को तनिक भी दुखित करते थे तो ये लोग अपने हाथ में तलवार ले अन्यायी तथा दुष्ट आक्रमणकारियों को दमन कर सदा रक्त की नदी बहाने को तत्पर रहा करते थे। किन्तु शोक है! कि आज कल ये क्षत्रिय लोग अपने परम पुरुषार्थ सिंह स्वरूप को भुला कर प्रजा को इतना दुखी तथा विपत्तियो से ग्रसित होने पर भी दुख दूर करने की चेष्टा नहीं करते। और अविद्या देवी की गोद में सुख की ऐसी खर्राटे युक्त नींद सो रहे हैं कि तोप के गोले की आवाज का भी पता नहीं लगता।

इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमानों के उत्थान के मध्यवर्ती काल तक तो क्षत्रिय लोग अपनी तलवार का परिचय कराते हुए शत्रुओं के दांत खट्टे करते रहे, और समय २ पर अपनी बहादुरी का परिचय देते रहे। किन्तु जैसे ही मुसलमानों का शासन काल समाप्त हुआ और विदेशी गवर्नमेन्ट का बोल बाला भारत में हुआ, तैसे ही राजपूतों की तलवारों को मोर्चा (जंग) लगना शुरू हो गया। और ये लोग धीरे २ हुकूमत के मद में चूर हो नाना प्रकार के विषय भोग भोगने में दृढ़ संलग्न हो गये, प्रजा की ओर का इनको कुछ भी ध्यान न रहा। सरस्वती तथा शक्ति दोनों का ह्रास होने लग गया, क्योंकि (Sarswati and Shakati dwell not with Bhoga) भोगों का दास हो जाने पर सरस्वती और शक्ति दोनो दूर भाग जाती हैं।

भोग लिप्सा अधिक बढ़ जाने के कारण मांस तथा मदिरा में प्रवृत्ति होने लगी। और मदिरा के नशे में चूर हो एक नशेबाज का जैसा जीवन बनता चला गया। इतने से नशे से ही ये लोग सन्तुष्ट न हो पाये, किन्तु साथ ही साथ अफीम तथा पोस्त आदि का सेवन करते २ पूरे अफीमची बन बैठे। इस प्रकार के नशों ने क्षत्रियों के जीवन को बेकार तथा निकम्मा बना दिया।

आज हम देखते हैं कि संसार में आर्थिक स्थिति जितनी क्षत्रियों की कमजोर है, उतनी और किसी वर्ग की नहीं देखी जाती। इसका कारण यह है कि ये लोग संसार सम्बन्धी नाना प्रकार के विलास प्रियता के भोगों में फँसे रहने के कारण तथा अनेकों अनुपयोगी दुर्व्यसनों में तथा मादक पदार्थों को अधिक सेवन करने के कारण आर्थिक स्थिति के संकटों में सदा ग्रसित रहते हैं। मैंने इनमें से कितने ही बड़े २ जागीरदारों को तथा भूमिपतियों को देखा है कि इन लोगों के पास में बड़ी २ जागीरें तथा मान प्रतिष्ठा होते हुए भी कर्जदारों के झमेले में फँसे जा रहे हैं, हजारों रुपयों का कर्ज़ा लेने पर भी इनका काम नहीं चलता। यदि इतनी जागीर किसी वैश्य के हाथ में आजावे तो वह थोड़े ही समय में उससे लाखों रुपया कमा कर करोड़पति तथा लखपति बनकर दिखला सकता है। किन्तु इन लोगों का इन जागीरों से स्वयं ही कार्य नहीं चल सकता है। फिर लखपति तथा करोड़पति की तो बात ही क्या है। इसका कारण क्या है? तो कहना पड़ेगा वही अपनी सम्पति का दुरुपयोग तथा पुरुषार्थ का अभाव। मैंने इस प्रकार के कई क्षत्रिय परिवारों को देखा है कि आवश्यकता से अधिक मांस मदिरा तथा अफीम आदि सेवन करने के कारण बड़ी २ जागीरें होते हुए भी दरिद्री तथा कंगाल बने हुए हैं। और किसी भी प्रकार के संसार सम्बन्धी उन्नति के कार्य करने को समर्थ नहीं होते। किन्तु रात दिन खाने पीने की चिन्ता ही में सदा तल्लीन न रहते हैं।

प्यारे पाठको! याद रखो, जिस किसी भी परिवार में यह नशे आदि का दुर्व्यसन घुस जाता है कि बस वह उस परिवार को थोड़े ही समय में दरिद्री

तथा कंगाल बना शीघ्र ही समाप्त कर डालता है, मैंने क्षत्रियों में देखा है कि ठाकुर साहब जितना अफीम नित्य प्रति खाते हैं उतना ही ठकुरानी साहिब, कुंवर साहिब तथा कुंवरानी साहिब भी सेवन करती हैं और तिस पर मदिरा आदि का सेवन तो लगातार बना ही रहता है, और तिस पर संसार के अनेकों विषय भोगों में तल्लीन, ऐसी स्थिति में यह सारा परिवार रोगों का दास बन जाता है। और आलस्य तथा प्रमाद का पुजारी बनने में तो सन्देह ही क्या है। और फिर इन्हीं दुर्व्यसनों के साथ २ बीड़ी, सिगरेट तथा तमाखू आदि का पीना। इससे शीघ्र ही फेफड़े खराब हो जाते हैं अल्प समय में ही राजयक्ष्मा (टी. बी.) आदि का शिकार होना पड़ता है। और द्रव्य की जितनी हानि होती है वह तो प्रत्यक्ष ही है। कहां तक कहें यदि सचमुच पूछो तो क्षत्रियों का पतन ही इन दो कारणों से हुआ है। पहिला विद्या न पढ़ना और दूसरा मादक (नशे सम्बन्धी) पदार्थों में अधिक आसक्त होजाना। इन दो बातों ने क्षत्रियों को रसातल में बैठा दिया, इतना सब कुछ होते हुए भी क्षत्रिय लोगों की अभी तक आंखें नहीं खुल रही हैं, और उसी प्रकार अविद्या रूपी देवी की गोद में शयन करते हुए नाना प्रकार के मादक सम्बन्धी भोगों के भोगने में ही इतिश्री मान रहे हैं। अतः क्षत्रियों को चाहिये कि वे अपने सिंह स्वरूप का परिचय राष्ट्र की सेवा में सिंह बन कर देना आरम्भ करें, और ये विषय विकार तथा नशे सम्बन्धी पदार्थों को शीघ्र ही अपने शरीर से दूर करें। यदि आप लोग इस समय सचेत न होकर राष्ट्र की सेवा में तल्लीन न होंगे तो आपके इस क्षात्र धर्म को भी लोग रद्दी कागज की तरह रद्दी खाने की टोकरी में उठाकर फैंक देंगे।

आशा है कि क्षत्रिय लोग मेरी इस बात पर अवश्य ध्यान देंगे और अपने शरीरों से नशे सम्बन्धी पदार्थों को दूर करते हुए अपनी स्वसंतानों को योग्य शिक्षा से सुशिक्षित बनावेंगे। ब्राह्मण का जीवन जिस प्रकार विषय विकार तथा आवश्यकता से कहीं अधिक भोग विलास से दूर रहना चाहिये,

उसी प्रकार क्षत्रियों को भी अत्यन्त भोग लिप्सा करना ठीक नहीं है। क्योंकि अधिक भोग भोगने से शरीर में कोमलता आती है, और एक प्रकार की उत्तेजना पैदा होती है कि जो ब्रह्मचर्य के लिये बहुत ही हानिकार सिद्ध हुई है। सैनिक विभाग में सैनिकों के लिये इस बात का सदैव ध्यान दिया जाता है कि उनका जीवन भोग सम्बन्धी पदार्थों में पड़ कर कोमल न बन जावे, और उनको ऐक्टिव (active) बनाये रखने के लिये कई ड्रिल तथा फिजिकल एक्सरसाइज कराते ही रहते हैं। क्षत्रियों का जीवन भी सैनिक की भांति ही हुआ करता है। सच्चा क्षत्रिय ही वास्तविक सैनिक कहला सकता है। और देश को आज़ादी का सच्चा पाठ पढ़ा सकता है। आज देश की आजादी को सुरक्षित रखने के लिये सच्चे क्षत्रियों की बहुत आवश्यकता है। अतः आप लोगों को भोगों से दूर रहते हुए सच्चे क्षात्र धर्म के ढांचे में ढलना भी बहुत आवश्यकीय है। शास्त्र में क्षत्रियों के लिये आखेट करने की जो आज्ञा दी गई है, उसका कारण भी यही था कि क्षत्रियों में शौर्य्यता, वीरता तथा तेजस्विता आदि सद्गुणों की वृद्धि उत्तरोत्तर होती रहे। किन्तु आजकल क्षत्रिय लोग अपने इस आखेट कर्म को भी भूल कर इनका दुरुपयोग कर रहे हैं। यह आखेट कर्म (Hunting) क्या है तथा इसका सदुपयोग क्या था सो सुनियेः—

आजकल क्षत्रिय लोगों ने आखेट कर्म का रहस्य केवल छोटे २ जानवर बिल्ली, चूहा, कबूतर, शशहा (खरगोश), हिरण तथा बकुला आदि पशु पक्षियों के मारने में ही अपना गौरव समझ रखा है। किन्तु याद रखो! क्षत्रियों के लिये इन बिचारे तुच्छ निरपराध जीवों को मारना आखेट नहीं कहा जाता है। मैं पहिले पाठकों को बता आया हूँ कि क्षत्रिय शब्द का अर्थ प्रजा की तथा जीवों की रक्षा करना ही कहा जाता है। इसलिये क्षत्रियों के इस आखेट कर्म से भी प्रजा को सुख तथा जीवों की रक्षा होनी चाहिये, सो कैसे होता है सो सुनियेः—आखेट कर्म का अर्थ छोटे जीवों को मारना नहीं किन्तु हिंसा के जन्तु जैसे—व्याघ्र, तथा भालू आदि जो जनता को तथा

जीवों को दुख पहुंचाते हैं, इनको मारना ही आखेट कर्म कहा जाता है। फिर अपनी बहादुरी तथा हिंसा परिचय के लिये भी इन हिंसक जन्तुओं को मारना ही उपयुक्त विदित होता है। अब यदि ये लोग केवल कबूतर, बिल्ली, चूहा तथा चिउँटा चिउटी के मारने में ही अपनी बहादुरी का परिचय देने लग जांयगे, तो फिर जब इन लोगों को किसी समय सिंह का सामना करना पड़ेगा तो ये लोग उसके सामने कैसे ठहर सकेंगे। आजः क्षत्रियों का कर्तव्य है कि ये लोग ऐसे निरपराध जीवों को न मार कर केवल हिंसक तथा दुखदाई जन्तुओं को ही प्रजा हितार्थ आखेट द्वारा हनन किया करें। इनमें से बहुत से भोले भाले मनुष्य यह कहा करते हैं कि हम छोटे २ जानवरों की आखेट इसलिये किया करते हैं कि इससे हमको शस्त्र अस्त्र चलाने का अभ्यास हो जाता है। किन्तु इनका यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि जीवों को मारने से किसी को भी शस्त्र अस्त्र चलाने का बोध नहीं हुआ करता है, इसके लिये तो प्रथम कृत्रिम पदार्थों द्वारा अभ्यास करना पड़ता है। देखिये जब कोई देहाती सैनिक सेना विभाग में नया भर्ती होकर जाता है तो उसको बन्दूक आदि चलाना सब ही विधिपूर्वक सिखलाया जाता है; क्या उनको बन्दूक आदि का निशाना बनाने के लिये जानवर आदि मारना पड़ता है? तो कहना पड़ेगा कदापि नहीं। इसके लिये उसकी चान्दमारी के रूप में कई प्रकार के लक्ष्य (निशान) बनाना पड़ता है और इस प्रकार अभ्यास कराते २ एक दिवस बस हन्टर (Hunter) तथा शूटर (Shooter) बन सकता है। अतः क्षत्रियों का कर्तव्य है कि वे लोग आखेट के नाम पर छोटे २ निरपराध जीवों को न मार कर हिंसक (मोटे जीवों) को प्रजा हितार्थ मृगया किया करें।

इसके अतिरिक्त क्षत्रियों में एक और कुप्रथा पाई जाती है कि जिसको पर्दा सिस्टम कहा जाता है, यह पर्दा सिस्टम भी मुसलमानी शासन काल से ही चालू हुआ प्रतीत होता है क्योंकि इससे पूर्व क्षत्रियों में किसी समय भी पर्दा प्रथा दिखाई नहीं देती। इससे क्षत्रियों का इस समय कितना

अनिष्ट हो रहा है वह किसी से छुपा नहीं है। इस दुःख का अनुभव तो उस कैदी को ही हो सकता है कि जिसको किसी विशेष कठिन प्रतिबन्ध के द्वारा चहार दिवारी की कठिन कोठरी में बन्द होने की आज्ञा दी गई हो। क्या हमारे देश की शूरवीर क्षत्रानियों की दशा इस कैदी से किसी प्रकार से कम है कि जिनकी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सर्व प्रकार की उन्नतियां चार दिवारी में बन्द रहने के कारण कोई भी विकास को प्राप्त नहीं होती। कितने गरीब क्षत्रियों के घरों में ये देवियां पुष्कल पानी के अभाव में भी सदा दुखी रहती हैं, समय पर न स्नान करने की ही व्यवस्था है, और न वस्त्र साफ करने की। पर्दा सिस्टम के कारण कई बातों में इन देवियों को नर्क का जैसा दृश्य देखना पड़ता है। संसारी वातावरण से तो ये सदा अपरिचित रहती हैं। आज इस पर्दा सिस्टम के कारण ही क्षत्रानियों में विद्या प्रचार की कमी रही। यदि इनमें ये कुप्रथा न होती तो क्या हमारे क्षत्रियों के घरों में ये देवियां साक्षरी न होती, आज अन्य वर्गों में ब्राह्मण तथा वैश्यों में तथा अन्य जातियों में देखिये! कितनी अधिक लड़कियां विदुषी पद प्राप्त कर बी० ए० तथा एम० ए० पास कर २ के प्रति वर्ष स्कूल तथा कालेजों से निकल रही हैं। यदि ये भयङ्कर कुप्रथा क्षत्रियों में न होती तो क्या ये क्षत्रिय देवियां तथा इनकी पुत्रियां बी० ए० तथा एम० ए० पास कर के सैकड़ों की संख्या में विदुषी पद प्राप्त न करती। जब क्षत्रिय देवियों में तथा कन्याओं में विद्या प्रचार की कमी रही तो इनके पुत्रों में भी विद्या प्रचार की कमी होनी चाहिये। आज अन्य वर्ग के पुत्रों की शिक्षा के विषय में देखें और फिर उन्हीं का समानाधिकरण इन क्षत्रिय बालकों से करें तो क्षत्रिय बालकों में विद्या प्रचार की बहुत ही कमी दिखाई देगी। अतः सुबोध क्षत्रियों का कर्तव्य है कि वे लोग अपनी जाति से इस पर्दा रूपी कुप्रथा को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने की चेष्टा करें। क्योंकि इस समय इस पर्दा सिस्टम की कोई विशेष उपयुक्तता दिखाई नहीं देती। यह प्रथा तो केवल मुसलमानी शासन काल में एक आपत्ति धर्म के रूप में चालू की गई थी, वह आपत्ति धर्म

इस समय दूर हो गई है, अतः ऐसी स्थिति में इस कुप्रथा को भी नाश करना ही बुद्धिमान क्षत्रियों का मुख्य कर्तव्य है।

क्षत्रियों को मनन करने योग्य कुछ बातें

१. क्षत्रिय बनना है तो क्षत्रिय शब्द का सार्थक करना सीखो। अर्थात् जनता जगत की सर्व प्रकार से रक्षा करना ही क्षत्रियों का मुख्य कर्तव्य होना चाहिये।

२. श्रीमद्भागवद्गीता में कहा है कि:—

"नरणांच नराधिपम्"।

अर्थात्:—मनुष्यों में राजा का रूप ईश्वर तुल्य ही है। जिस प्रकार ईश्वर सब जीवों की रक्षा करता है, उसी प्रकार राजा भी सब प्रजा की रक्षा करता है। जिस प्रकार ईश्वर सब जीवों के कर्मों की उचित न्याय व्यवस्था करता है, उसी प्रकार राजा को भी सब जीवों के कर्मों की व्यवस्था न्यायानुकूल करनी चाहिये। जिस प्रकार ईश्वर की दृष्टि में कोई साम्प्रदायिक भावना नहीं होती है उसी प्रकार राजा की दृष्टि में भी कोई साम्प्रदायिक भावना नहीं होनी चाहिये।

३. अपनी शौर्य्यता, वीरता तथा तेजस्विता आदि सद्गुणों पर सदैव ध्यान देना चाहिये, और इसके लिये ब्रह्मचर्य का विधिवत् पालन स्वयं भी करे और अपनी संतानों को भी इसका पालन करना सिखावे।

४. अपने शरीर को भोग विलास के पदार्थों में कोमल न बनाने देवें, किन्तु एक शुद्ध सैनिक की भांति रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करें।

५. मादक पदार्थ जैसे मद्य (मदिरा), अफीम, सुलफा, गांजा, भङ्ग, तमाखू तथा बिड़ी सिगरेट आदि पदार्थों से सदैव दूर रहें।

६. पर्दा सिस्टम एक महान कुप्रथा है, इससे देवियों के चरित्र

निर्माण का तथा स्वास्थ्य को बहुत ही हानि होती है। अतः इसको सदा सर्वदा बन्द कर देना ही मुख्य कर्तव्य है।

७. विद्या की उपासना करना जीवन तथा अविद्या की उपासना ही मृत्यु समझना चाहिये।

८. क्षत्रियों में विद्या प्रचार की बहुत कमी है। अन्य वर्गों की अपेक्षा इसमें क्षत्रिय बालक तथा बालिकायें बहुत कम साक्षरी हैं। अतः इन सब को विद्वान बनाना क्षत्रियों का मुख्य कर्तव्य है।

९. इनको पढ़ने के लिये स्थान २ पर शिक्षा मन्दिर खोलना चाहिये, राजपूत बोर्डिङ्ग हाउस कायम करें, और साथ ही साथ राजपूत बालकों के लिये सैनिक शिक्षा का भी सुप्रबन्ध करना चाहिये।

१०. राजपूत कन्याओं के पढ़ने के लिये अलग ही स्कूल तथा पाठशालायें कायम करना चाहिये। और इसमें कन्याओं की शिक्षा का सर्व सुपास रखना चाहिये।

राजपूत (क्षत्रियों) की दशा पर गायन

अब तुम जागियोरे क्षत्रिय वीर वृत नृपाला ॥टेर॥
पूर्व समय में क्षात्र धर्म की, महिमा बड़ी विशाला।
जिनके घर में स्वयं हरि ने, लिया जन्म हो लाला ॥१॥
गौ ब्राह्मण की रक्षा करते, प्रजा धर्म तिन पाला।
कुल की करनी ब्रह्म कहा कर, जीत लिये दिक पाला ॥२॥
धर्म ध्वंसक वेद विदूषक, जो कहीं वे सुन पाते।
तुरत मार यमराज पठा कर, धर्म ध्वजा फहराते ॥३॥
अहिंसक धर्म वाद किया जारी, हिंसा वाद मिटाया।
आजकल तो क्षत्री देखो, मदिरा मांस चलाया ॥४॥

काम सभी सिंहन के कीने, जब नाम दास पद डाला।
जब से नाम पर सिंह लगा, तब हुए हाल बे हाला ॥५॥
धर्म राज हा! मिटा जगत में, पाप चक्र अब चाला।
स्वामी नारायण आज कल तो, क्षत्रिन ने घर घाला ॥६॥

२६. ब्राह्मणों का पतन तथा उत्थान

मैं पूर्व प्रकरण में लिखकर बता आया हूँ कि जब तक ब्राह्मण तथा क्षत्रियों में परस्पर पठन पाठन की प्रणाली चालू रही तब तक ये दोनों वर्ग मिलकर लौकिक तथा पारलौकिक कार्यों की अन्वेषणा में लगे रहे। क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को बड़ा बनाया, और ब्राह्मण लोग क्षत्रियों को बड़ा बनाते रहे। इस प्रकार गीता के कथनानुसार "परस्परं भावयन्तः श्रेयपरमवाप्स्यथः" अर्थात् परस्पर के भाव से परम श्रेष्ठपद को प्राप्त होते हैं। ऐसे दोनों वर्ग आपस में मिलकर एक दूसरे के सहयोगी होते रहे। और जब तक क्षत्रिय लोगों के हाथ में अखण्ड राज्य रहा तब तक तो ब्राह्मण लोग भी इनके साथ लगे रहे। और इनके पुरुषाओं की मूर्तियों को मन्दिरों में स्थापना करा २ कर उनको ईश्वरीय अवतारो में घोषित कर उनके द्वारा मिलने वाले अनेकों प्रकार के भोगैश्वर्य को भोगने में दृढ़ संलग्न होगये। और ब्राह्मण तथा क्षत्रिय का तो जोड़ा होता है ऐसी भावना क्षत्रियों को दिखाकर उनसे अपने हित सम्बन्धी अनेकों प्रकार के आर्डिनेन्स कायम कराये, ताकि भविष्य में कोई इनके सामने आँख उठा कर न देख सके। किन्तु शनैः २ क्षत्रियों ने पढ़ना लिखना बन्द किया, और देश में मूर्खता व्यापने लगी; तो आपस में फूटा फाटी मचने लगी, विदेशियों के आक्रमण होना शुरू हुआ और देश की हकूमत सैकड़ों वर्ष तक मुसलमानों के आधीन हो गई। मुसलमानों का शासन देश को घातक सिद्ध हुआ, और यहाँ के निवासी इनके चंगुल से निकलने के लिये कई प्रकार से पुरुषार्थ करते रहे। इसी बीच में भारत में एक और दूसरी विदेशी गवर्नमेन्ट आधमकी, जिसको ब्रिटिश गवर्नमेन्ट

के नाम से पुकारते थे। इसने हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को अपनी मुट्ठी में कर लिये। मनुष्य मात्र के लिये इसने अपने धर्म तथा कर्मों में आज़ादी प्राप्त कराई। वैश्य तथा शूद्र जो किसी जमाने में बिचारे मूक पशु की तरह जीवन व्यतीत करते थे, उनको इनके शासन काल में पढ़ने लिखने की तथा व्यापार व कला कौशल द्वारा द्रव्योपार्जन करने तथा उसको अपने आधीन संग्रह करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होगई। इनके शासन काल में अनेकों प्रकार के व्योपारों की वृद्धि हुई और इस वैश्य समाज ने इन व्योपारों द्वारा हजारों तथा लाखों रुपया कमाये, इनमें से बहुत से लखपति तथा करोड़पति सेठ बन गये। और भारत के सारे व्योपार के केन्द्र को अपने आधीन कर लिया। उस समय जब ब्राह्मणों ने देखा कि क्षत्रियों के हाथ से राज्य शासन का सूत्र निकल चुका है, और अब थोड़े से राजा शेष रहे हैं और वे भी दूसरे के हाथों की कठपूतलियां बने हुए हैं। अधिक तर क्षत्रिय लोग निर्धन बनते जा रहे हैं। और वैश्य लोग अधिक रूप से मालदार बनते जा रहे हैं। तब इन्होंने जो किसी समय ब्राह्मण क्षत्रिय का जोड़ा बतलाते थे उसको मिटाकर अब ब्राह्मण बनिये का जोड़ा स्थापित कर दिया। आप जहां देखो वहां ये लोग ब्राह्मण क्षत्रिय न कह कर ब्राह्मण (बामन) बनियां कहने में ही अपना गौरव समझेंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि इनको ईश्वर तथा धर्म से प्रेम नहीं है इनको तो केवल अपने स्वार्थ से प्रेम है, कहावत प्रसिद्ध है कि "जिसका खाइये उसका गाइये"। जब तक क्षत्रियों का भारत में प्रशासन रहा तब तक ये लोग क्षत्रियों के गीत गाते रहे। अब क्योंकि क्षत्रियों का प्रशासन नष्ट हो गया है और बनिये (वैश्य) लोग स्मृद्धिशाली हो गये हैं अतः ये लोग अब इनके गीत गा रहे हैं। मैं तो जहाँ जाता हूँ वहां इन नाम मात्र ब्राह्मणों को सेठजी के आगे हाथ जोड़ते तथा गिड़गिड़ाते ही देखा करता हूँ। और तीर्थों के किनारे भी इन लोगों को जै लालाजी की, जै सेठजी की, जै यजमान की इस प्रकार जै जै कार की दुहाई देते हुए सुना करता हूँ। जैसे माँस के टुकड़ों को देख कर हज़ारों चील तथा कौवे मंडरा जाते हैं। इसी प्रकार तीर्थों की जगह

पर सेठों को देख कर ये ब्राह्मण लोग उनको चारों ओर से घेर लेते हैं। उन बिचारे सेठों को इन ब्राह्मणों से उस समय छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। अब देखिये:—

जो ऐन्द्र पद त्रिलोक सुख भी जानते बेकार थे।
सुर राज भी जिन के अमोघ श्राप से लाचार थे॥
वे आज ब्राह्मण देवता ही भीख मंगे हो रहे।
खोकर तपोधन ज्ञान धन अब मान धन भी खो रहे॥

अब पाठक सोच सकते हैं कि आजकल ये ब्राह्मण लोग अपने थोड़े से पैसों के लोभ के लिये सेठजी के आगे कैसे गिड़गिड़ाते हैं। बस ये ही ब्राह्मणों के पतन का कारण है।

क्षत्रियों के शासन काल में इन ब्राह्मणों ने जैसा उनको कहा वैसा ही उन्होंने मान लिया, इनके सत्यासत्य पर कुछ विचार न किया। इससे विदित होता है कि क्षत्रिय लोग बड़ी भोली जाति थी, जैसा इन लोगों ने अपने स्वार्थ के लिये उनको बहकाया वैसा ही वे लोग इनकी सारी बातों को मानते चले गये। अब ये ब्राह्मण लोग ब्राह्मण क्षत्रिय के जोड़े को ध्यान न देते हुए ब्राह्मण (बामन) बनिया कहलाने में ही आनन्द मानते हैं तो बस इस बामन बनिया कहलाने में ब्राह्मणों के पास में जो कुछ बचा बचाया गुण कर्म तथा विद्या थी, वे सब समाप्त हो गई। क्षत्रिय क्योंकि भोले जीव थे इसलिये उन्होंने इनकी मान मर्यादा बढ़ाने की ही चेष्टा की, किन्तु इनको उन्होंने किसी तरह भी नीचा न गिराया। किन्तु जब से इन्होंने द्रव्य के लोभ में पड़ कर बामन बनिया की उपाधि प्राप्त की, कि बस उसी दिन से ब्राह्मणों का सत्यानाश होता चला गया।

ये वैश्य (बनिये) बड़े बुद्धिमान तथा चतुर हुआ करते हैं। क्षत्रियों के शासन काल में ब्राह्मणों के कठिन प्रतिबन्धों के द्वारा ये लोग दबे पड़े थे,

किन्तु जैसे ही विदेशी गवर्नमेन्ट के शासन काल में इनके प्रतिबन्ध ढीले पड़े कि एक दम अपनी बुद्धिमानी से इन्होंने अनेकों व्यवसायों को अपने आधीन करते हुए थोड़े समय में कुबेर के खजाने के अधिपति बन बैठे। जब इनके पास में सर्व प्रकार की संपदा प्राप्त हो गई तो उसको देख कर बिचारे ब्राह्मणों की भी लार टपक पड़ी, कहते हैं कि "द्रव्येण सर्वे वशा" अर्थात् द्रव्य से सब वशीभूत हो जाते हैं। बस ये ही हाल इन ब्राह्मणों का हुआ। और इन्होंने इन वैश्यों को प्रसन्न करने के लिये झटपट (खुशामद में आमद) समझते हुए बामन बनिया का जोड़ा स्वीकार कर लिया। जब इन वैश्य लोगों ने देखा कि वे ही ब्राह्मण लोग जिन्होंने हमारे ऊपर कठिन २ प्रतिबन्धों को लगा कर हमारी सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक सर्व प्रकार की उन्नति क्षेत्र को सदैव के लिये बन्द कर दिया था। अब वे ही लोग हमारा यशोगान करते हुए हमारी शरण में आ गये हैं तो बस फिर क्या था। इन्होंने भी अपनी बुद्धिमानी से ब्राह्मणों पर ऐसा हाथ फेरा कि बस इनकी बची बचाई विद्या बुद्धि तथा मान मर्य्यादा सब को मिट्टी में मिला दिया, और ब्राह्मण से बामन, बम्मन बना दिया।

अब मैं पाठकों को इन वैश्य लोगों की चतुराई की कुछ बातें ब्राह्मणों के हितार्थ वर्णन करता हूँ कि इन्होंने कैसी बुद्धिमानी के साथ में ब्राह्मणों को धोखा दिया। जिस प्रकार इन लोगों ने वैश्य तथा शूद्रों को अपना भोग भोगने के लिये नर पशु बना लिया, इसी प्रकार इन्होंने भी ब्राह्मणों को अपना मनोरञ्जन के लिये नर पशु बना लिया। बीरबल तथा अकबर के संवाद में संसार प्रसिद्ध एक गाथा आती है। कहते हैं कि एक समय अकबर बादशाह ने अपने मंत्री बीरबल को आज्ञा दी कि:— "लावो कोई ऐसा नर। पीर, बबरची, भिश्ती, खर" ॥ इस पर कहते हैं कि बीरबल ने बादशाह के सामने एक ब्राह्मण को लेजा कर खड़ा कर दिया। अब पाठक सोच सकते हैं कि हिन्दू समाज में ब्राह्मण ही एक ऐसा जीव बना दिया गया है कि जिसको पीर, बबरची, भिश्ती तथा खर की उपाधि लागू हो सकती है। क्या कहीं

आपने दुनियां के किसी और समाज में भी ऐसा व्यक्ति देखा है कि जिस पर उपरोक्त कथन की हुई चारों प्रकार की उपाधियां लागू हो सकती हों। मेरी समझ में तो हमारी इस हिन्दू समाज को छोड़ कर किसी दूसरी समाज में मिलना मुश्किल है। जो ब्राह्मण भू देव कहलाते थे वे आज इन चार उपाधियों से सुशोभित देखे जाते हैं। ये सब कैसे और क्यों हुआ ? तो कहना पड़ेगा कि ब्राह्मणों को अपने स्वरूप के भूल जाने से तथा सेठ जी की कृपा से ये पद प्राप्त हुए।

पाठक ! इस बात को सेठजी के यहां जाकर प्रत्यक्ष देखलें कि उनके यहां पर दान दक्षिणा लेने वाला ब्राह्मण, जीमने वाला ब्राह्मण, भोजन बनाने वाला (बबरची) ब्राह्मण, पानी पिलाने वाला (भिश्ती) ब्राह्मण, बोझा उठाने वाला (खर) ब्राह्मण, सेठजी का लड़का खिलाने वाला ब्राह्मण, चारपाई तथा बिस्तर बिछाने वाला ब्राह्मण। कहां तक कहें जो कुछ परिचर्या सम्बन्धी कार्य हैं वे सब इन सेठ जी ने ब्राह्मणों को सौंप रखे हैं। क्योंकि ब्राह्मणों के सिवाय सेठजी को ऐसा सर्व गुण सम्पन्न मनुष्य और किस समाज में से मिल सकता है। यह सेठजी की असीम कृपा का यह फल है कि जो भू देव का दावा करने वाले ब्राह्मणों को ऐसे सुन्दर पद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अतः प्यारे ब्राह्मण बनने वाले भाइयो ! अब तो सोचो अपने ब्रह्मवंश का नाम पानी में न बहावो। याद रखो ! ब्राह्मण बनिया कहलाने में तो ब्राह्मणों को पीर, बबरची, भिश्ती तथा खर की पदवी लादी गई है। पहिले नम्बर पर ब्राह्मण क्षत्रिय कहलाये, दूसरे नम्बर पर ब्राह्मण बनिये बने, तीसरे नम्बर पर अब ब्राह्मण नाई बनने जा रहे हैं। अर्थात् शादी विवाह में अब ब्राह्मणों से नाई का काम भी लिया जा रहा है। ऐसी स्थिति में ज्ञात नहीं होता कि ब्राह्मणों का इस दासत्त्व वृत्ति से कब उद्धार होगा।

शरीर सम्बन्धी कार्यों को संचालन करने के लिये शरीर के मुख्य चार अङ्ग माने गये हैं यथाः—हाथ, पैर, मस्तक तथा पेट आदि। इन्हीं

चार भागों पर समाज की रचना की गई है, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की कल्पना की गई है। ये समाज के चार अङ्ग कहे जाते हैं। जिस प्रकार शरीर के चारों प्रधान अङ्ग ठीक २ काम करने वाले तथा सुदृढ़ होते हैं तो शरीर के सारे कार्य सुचारु से चला करते हैं, यदि इनमें किसी भी भाग में कोई खराबी हो गई तो शरीर के सारे कार्य ठप्प हो जाते हैं। इसी प्रकार मनुष्य समाज का हाल भी समझना चाहिये। यदि ये चारों वर्ग मिल कर अपने २ गुण तथा स्वभाव के अनुसार राष्ट्र तथा देश सेवा आदि का कार्य विधिवत् करते रहें तो देश तथा राष्ट्र वसन्त ऋतु के समान फूलता और फलता रहता है। आज मनुष्य समाज में ब्राह्मण वर्ग के खराब हो जाने से अन्य सारे वर्गों में खराबी पहुँच गई है। यदि यह ठीक हो जावे तो सारे वर्ग ठीक हो सकते हैं। ब्राह्मण जीवन संसार में भोग भोगने के लिये तथा संसारिक नाना प्रकार के द्रव्य सम्बन्धी पदार्थों को संग्रह करने के लिये नहीं है; किन्तु सादा जीवन व्यतीत करते हुए अपने श्रेष्ठाचार से अन्य वर्गों को सत्य शिक्षा से सुशोभित कर देश को समुन्नत करना है। पर आज यह ब्राह्मण वर्ग अपने स्वरूप को भुला कर अन्य वर्गों की देखा देखी भोगों का दास बनता जा रहा है। और नाना प्रकार के महल महलायत तथा लखपति व करोड़पति बनने को ही अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य मान बैठा है। इसमें सन्देह नहीं कि संसार में अन्य जितने भी वर्ग हैं वे सब भी संसार के भोगों के भोगने की तथा लखपति व करोड़पति बनने की भावना को लिये बैठे हैं। किन्तु इनमें और ब्राह्मणों में पृथ्वी आकाश का अन्तर है। ये लोग ईश्वर और धर्म की ठेकेदारी से दूर हैं, ये लोग ईश्वर और धर्म के नाम पर धोखा देकर लखपति तथा करोड़पति बनने की इच्छा नहीं कर रहे हैं किन्तु अपने परम पुरुषार्थ कृषि, वाणिज्य तथा कला कौशल सम्बन्धी कार्यों में दृढ़ संलग्न हुए लाखों करोड़ों रुपया कमाते हैं, उससे महल महलायत बनाते हैं, नाना प्रकार के भोगों को संग्रह करते हैं, स्त्री पुत्रों सहित उनका उपभोग करते हैं, समय पड़ने पर जनता जनार्दन के निमित्त अपनी कमाई में से दान भी करते हैं। ऐसी स्थिति में हम इन लोगों को बुरा नहीं कहते। किन्तु ब्राह्मण

लोग ईश्वर और धर्म की ठेकेदारी को भी अपने हाथ में रखते हैं और संसार के भोगों के भोगने तथा लखपति व करोड़पति बनने की इच्छा में भी दृढ़ संलग्न रहते हैं। बस यही ब्राह्मण समाज का पतन होने का कारण है। तुलसीदासजी ने ठीक कहा है:—

"चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे चहो तुम दाम।
तुलसी दोनों ना मिलें, रवि रजनी इक ठाम"॥

कहने का अभिप्राय यह है कि ईश्वर और धर्म की ठेकेदारी ऐसे मनुष्यों को नहीं मिल सकती कि जिनको संसारी भोग भोगने की तथा लखपति व करोड़पति बनने की इच्छा रहती हो। इसकी ठेकेदारी के तो वे ही अधिकारी होने चाहिये कि जो पूर्ण विद्वान, संयमी तथा त्यागी होते हैं और जो अपने सत्योपदेश तथा सत्याचरण से जनता जगत का कल्याण करते हैं और ऐसे ही मनुष्यों को ब्राह्मण कहा जाता है क्यों कि:—सादा जीवन उच्च विचार, यही है जीवन का सार"। आज आप कहीं भी किसी भी देश में जाकर देखें तो धर्म और ईश्वर के नाम पर धोखा देने वाले व्यक्ति नहीं पाये जाँयगे। क्यों कि वे लोग जानते हैं कि संसारी विषय सुख तथा द्रव्यादिक की प्राप्ति तो संसार सम्बन्धी कला कौशल तथा व्यौपारादि साधनों से भली भांति हो सकती हैं। फिर इस तुच्छ कामना के लिये ईश्वर और धर्म को कलंकित करके जनता जगत को धोखे में क्यों डालें। यही कारण है कि आज अन्य देशों के कार्य सब विधिपूर्वक चल रहे हैं। किसी भी कार्य में उनके धोखा दिखाई नहीं देता। किन्तु भारत ही एक ऐसा देश है और इसमें हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है कि जिसमें इतनी गंदगी आगई है कि मनुष्य समाज के प्रत्येक कार्य में अर्थात् सिर से पैर तक केवल धोखा ही धोखा दीख पड़ता है। आज आप प्रत्यक्ष देखलो! देवी देवता के नाम पर धोखा, गंगा यमुना के नाम पर धोखा, ईश्वर धर्म के नाम पर धोखा, गौ माता के नाम पर धोखा, मन्दिर देवालय के नाम पर धोखा, विद्यादि के नाम पर धोखा, योग यज्ञ के नाम पर धोखा, खान पान में

धोखा, कहां तक गिनावें; आज मानव में सिर से पैर तक कूट २ कर धोखा ही धोखा भर गया है। यह सब ब्राह्मणों की असीम कृपा का फल है। यह धोखा जब तक नहीं निकल सकता कि जब तक ब्राह्मण समाज शुद्ध नहीं होता है। अतः जो शुद्ध ब्राह्मण का दावा करते हों उन्हें चाहिये कि वे अपनी इस ब्राह्मण समाज की गंदगी रूपी कूड़ा कर्कट को दूर करें। और शुद्ध सात्विक, विषय विकारों से दूर रहने वाले, साधारण जीवन व्यतीत करने वाले, तपस्वी, विद्वान सदाचारी, संयमी तथा त्यागी ब्राह्मण निर्माण करें। और यदि ऐसा करने में असमर्थ हों तो यह नाम मात्र ब्राह्मण शब्द को समाप्त कर देवें ताकि जनता जगत इन कृत्रिम ब्राह्मणों के हथकंडों से छूट कर सत्य मार्ग के अनुयायी बन सके। यदि आप ऐसा न करेंगे तो निश्चय है कि जनता जगत तथा जनता राष्ट्र आप लोगों का बहिष्कार कर देगी। क्यों कि आज संसार में चारों ओर से विद्या का प्रकाश फैलता आरहा है तो क्या हमारा भारत आज भी अन्धकार में ही फँसा रहेगा? यह कदापि नहीं हो सकता। अब आपकी यह दुतर्फा डिगरी सुरक्षित नहीं रहेगी, अर्थात् एक तरफ तो तुम संसारिक नाना प्रकार के भोग भोगो और लख-पति तथा करोड़पति बनने की कामना करो और दूसरी ओर "ब्रह्म वाक्य जनार्दन" का ढिंढोरा पीटकर ईश्वर और धर्म के ठेकेदार बनते रहो। अब आप संसारी अन्य वर्गों की तरह अपने निजी पुरुषार्थ कला कौशल व्योपार तथा कृषि आदि द्वारा लखपति तथा करोड़पति बन कर अपने साथ से ईश्वर और धर्म की मिथ्या दुहाई तथा ठेकेदारी को दूर करदो और यदि आप ईश्वर और धर्म की ठेकेदारी को दूर नहीं करते हो तो शुद्ध सात्विक ब्राह्मण बन जावो। इसी में तुम्हारी तथा जनता जगत की दोनों की भलाई है।

क्यों कि ईश्वर तथा धर्म की ठेकेदारी तो उसी मनुष्य को मिल सकती है कि जो इसके अधिकारी हों। आरम्भ में आप लोगों के पूर्वजों को इसकी ठेकेदारी उनके गुण, कर्म तथा स्वभावों के अनुसार ही दीगई थी, किन्तु आज आप लोग उन गुण कर्म, तथा स्वभाव को भुला कर इस को

* ॐ *

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय

आवश्यक सूचना

(१) यदि आप अपनी संतानों को ब्रह्मचारी, तेजस्वी तथा शूरवीर बनाना चाहते हो ?

(२) यदि आप अपनी कन्याओं को वेदोक्त शिक्षा से सुशोभित कर आदर्श देवी बनाना चाहते हो ?

(३) यदि आप बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के अपने तथा अपने परिवार के रोगों की चिकित्सा स्वयं करना चाहते हो ?

(४) यदि आप बैठे हुए हो, और इस बेकारी को हटा कर थोड़े से पैसों से अपना रोज़गार चला कर सीधे सच्चे ढंग से धन कमा कर धनपति बनना चाहते हो ?

तो आप राजस्थान के सुप्रसिद्ध महात्मा श्री नारायण स्वामी बी० ए० द्वारा लिखी हुई पुस्तकों को बड़े प्रेम से पढ़ने का अभ्यास करें। इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी महाराज ने इन सब विषयों का तथा गृहोद्योगिक कार्यों को संपादन करने का बहुत ही सहज व सुगम मार्ग लिख कर बताया है जो सद् गृहस्थियों के, बेरोज़गार हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए मनुष्यों के और विद्यार्थी तथा अध्यापकों के काम आने वाली बड़ी ही सुन्दर पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। साधक अपनी २ रुचि अनुसार इन पुस्तकों को अवलोकन करके उपरोक्त कथन किये हुए लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं।

श्री स्वामी जी की पुस्तकों का सूचीपत्र

१.	फेमिली डाक्टर श्री नारायण चिकित्सा	३॥)
२.	आदर्श नारी जीवन	१॥)
३.	पेटेन्ट मेडीशन्स	१)
४.	ब्रह्मचर्य	१)
५.	विद्यार्थी जीवन	
६.	धन कमाने की मशीन श्री नारायण सुगम व्यौपार माला	१)
७.	श्री मद्भगवद्गीता भाषा	
८.	साम्राज्य वाद तथा स्वराज वाद	॥)
९.	स्वास्थ्य कुंजिका	॥)
१०.	कृषि विज्ञान तथा वृक्षों में अद्भुत चमत्कार	॥)
११.	योग तत्त्व	१)
१२.	विचार सागर सार संग्रह	।)
१३.	ज्वर रोग चिकित्सा	।=)
१४.	विद्या महिमा	=)
१५.	श्री नारायण भजन विलास	≡)
१६.	बी० ए० का प्रसिद्ध पेड़ा	।)
१७.	स्तोत्र सार संग्रह	।)
१८.	बाल रोग चिकित्सा	।)
१९.	स्त्री रोग चिकित्सा	।)
२०.	अमृत धारा	=)